

१३५ ।=)॥।

श्रीगणेशायनमः॥

यह पुस्तक मदनपाल
बिरचित हरित्यादिबकु
नमुद्ककारकेनाम रक्खा



# निघंट

भाषा बीच छापेखाने
हसनी के मिस्सर भग
वानदासके एहतमाम

से छापागया दिल्लीमें

श्रीगणेशायनमः

# निघंटभाषा॥

प्रथमहडकेनाम॥ शिवा १ ग्रोर हरीतकी २ ग्रोर पथ्या ३ चेतकी ४ बिजया ५ ग्रोरजया ६ ग्र मरथा ७ ग्रभया ८ ग्रमोघा ९ कायस्था १० प्राणदा ११ ग्रमरता १२ जीवनीया १३ हैमवती १४ पूतना १५ चेतना १६ ग्रभया १७ जवस्था १८ नंदिनी १९ श्रेय सी २० रोहिणी २१ यह इक्कीस नाम हड़के हैं॥

हड़केगुण॥ हड़में ५ गुण हैं। १ मीठा ग्रोर कसेला २ खट्टा ३ कड़वा ४ तेज ५ रूखीहै ग्रोर गर्महै दीप नीहै १ बुद्धिकोबढ़ावनेवालीहै २ ग्रोरपचनेके सम य मीठीहै ३ रसायनीहै ४ बुद्धिकी दाताहै ५ ग्रोर ग्रा युर्दाको बढ़ाती है ७ बलकोबढ़ानी है ७ हलकीहै ८ ग्रोर दमा ९ खांसी १० ग्रोरपरमेह ११ ग्रोर बवासीर १२ ग्रोरकुष्ठ १३ ग्रोरजठररोग १४ ग्रोर कृमिको दूरक रतीहै १५ ग्रोर संग्रहणी १६ कबज १७ ग्रोर विषमज्व र १८ गोला १९ पेटका ग्रफारेको खोतीहै २० ग्रोरफोड़े २१ छर्दि २२ हुचकी २३ ग्रोरखाज २४ ग्रोर होलदिल २५ कवलबाय २६ शूल २७ ग्रोर तापतिल्ली २८ मीठे

ऋोर खट्टे स्वादसे नौ बायको हरती है ऋोर कसेले स्वादसे पित्तको हरती है ऋोर कड़वे ऋोर तेजसों कफ को हरती है ॥ हड़में यह तासीर है इतने रोगोंको हरे है

ऋांवलेकेनाम ॥ धात्रीफल १ अमृतफल २ ऋामल क ३ श्रीफलं ४ शिवं ५ ॥ ऋांवलेकेगुण ॥ पुष्ट है ऋोर सबगुण इसमें हड़के तुल्य हैं विशेषकरिकै रक्त पित्तको जीते है। खट्टा है ताते पवनको दूर करता है ऋोर मीठा ऋोर ठंडा है ताते पित्तको दूर करता है। ऋोर रूखा ऋोर कसेला है ताते कफको नास करता है इतिगुणं।

बहेड़ानाम ॥ विभीतं १ कर्षफलं २ भूतावासं ३ क लिद्रुमं ४ येचारनाम हैं ॥ बहेड़ेकागुण ॥ खानेमें गरम है १ ऋोर लगावनेमें ठंडा है खांसीको दूर करता है। रूखा है। ऋांखोंकेवास्ते मुफीद है बालोंको बढ़ाता है ऋोर भांगी उसकी नशा लाती है इतने इसमें गुण हैं ॥

त्रिफलानाम ॥ हड़ तीनभाग ऋोर ऋांवला १२ भाग ऋोर बेहड़ा छह ६ भाग इसको त्रिफला कहते हैं ऋोर बरा ऋोर श्रेष्ठा ऋोर फलोत्तमा भी कहते हैं ॥ त्रिफला केगुण ॥ कुष्ठरोग ऋोर प्रमेह २ ऋोर लोह ऋोर कफ ऋोर पित्तको दूर करती है ऋोर नेत्रोंको मुफीद है ऋोर ऋोर दिलको कुव्वत देता है त्रिफलामें इतने फायदे हैं।

भूमिऋांवलानाम ॥ भूधात्री १ बहुपत्रा २ जटा ३



की ओर से सादर भेंट
ता० ८-५-५२

नामलकी ४ शिव ॥ इसकेगुण ॥ बायकोपैदा
करैहै १ औरतेजहै २ औरकसैलाहै ३ और मीठाहै ४
औरठंडाहै ५ औरप्यासको ६ और पित्तको ७ और लो
हूको ८ औरकफको ९ औरजखमको दूर करताहै
इतनेगुणहैं ॥ पानीआंवलानाम ॥ प्राचीना १ आ
मलक २ औरनागर ३ औररक्तक ४ येनामहैं ॥ ५
पानीआंवलागुण ॥ पक्काहोयतो पित्त १ और
कफकोपैदाकरताहै और गर्महै और भारीहै और
बायकोजीतताहै येगुणहैं ॥ बांसाकेनाम ॥
बांसा १ वृषं २ सिंघमुखी ३ भिषङ्माता ४ नाटं ५
रूषक ६ ॥ बांसाकेगुण ॥ बायकोपैदाकरे
है १ औरकफ २ और पित्तकूं और लोहूकोदूरकरे
है और दमा ५ खांसीको ६ ज्वर ७ छर्दि ८ प्रमेह ९
कुष्ट १० खईरोगकोदूरकरताहै ॥ इतनेरोगोंका
नाशकहै ॥ गिलोयकेनाम ॥ गुडुची १ कुंडली २
छिन्ना ३ वयस्था ४ अमृत ५ वल्लरी ६ छिभोद्भवा ७
छिन्नारुहा ८ अमृता ९ ज्वर बिनाशिनी १० वत्सा
द ११ नीनं १२ चंद्रहासा १३ जीवंती १४ चक्रलक्षणा १५
गिलोयकेगुण ॥ कड़वीहै और हलकीहै १ प
चनेकेसमय मीठीहै २ रसायनीहै ३ कबज़करैहै ।
४ कसैलीहै ५ गर्महै ६ बलकोबढ़ातीहै ७ तेजहै ८

पेटकी अग्निको दीप्त करती है ९ कवलवाय १० कु
ष्ठ ११ बाय १२ लोहू १३ ज्वर १४ पित्त १५ और छर्दको
जीतेहै ॥ गिलोयमेंयेगुणहैं ॥ बेलनाम ॥ बि
ध्वंसनांद १ और शैलूष २ मालूर ३ सदाफल ४
लक्ष्मीफल ५ गंधगर्भ ६ शांडिल्य ७ कंटकी ८ इ
तने नामहैं ॥ बेलकेगुण ॥ कबजकरेहै १ कसे
लीहै गर्महै २ दीपनहै ३ पाचनहै ४ बलकोबढावे
है ५ हिरदेकोहितहै ६ हलकाहै ७ चिकनाहै ८
तेजहै ९ बाय १० कफ ११ भारीहै ॥ और त्रिदोषसेजो
ज्वरहोयउसकोभीहरेहै विदाहीहै और मीठाहै
और अग्निको मंदकरेहै १२ और संग्रहणीको १३
कफको १४ और बाय शूलकोदूरकरता है १५ इतने
गुणहैं ॥ अरणीकेनाम ॥ अग्निमंथ १ और ज
यकेतु २ अरणी ३ और बैजयंतिका इतिनामः ॥
अरणीकेगुण ॥ तासीर इसकीगर्महै और कफ
कीबीमारीको खोतीहै १ और बायकेरोगका नाश
करतीहै इतिगुण ॥ पाटलाकाष्ठपाटलानाम ॥
पाटला १ कामदूती २ कालवृंतिका ४ स्थाल्यमो-
घा ५ मधोंदती ६ ताम्रपुष्प ७ अंबुवासनी ८ अन्याफ
ले ९ रूहतं १० स्मूलं कुंभी १२ काष्ठपाटला १२ ॥
काष्ठपाटलाकेगुण ॥ अरुचि १ सूजनको २

ओर लोहू ३ और दमा ४ ओर छर्दको दूर करती है तुसरहै ओर मीठी है ओर उसके फूल लोहू ओर कफ को हरतेहैं॥ अथकंभारीनाम॥ कस्मीरी १ स र्वभद्रा २ श्रीपर्णी ३ कृष्णवंतिका ४ कंभारी ५ कस्म रीं ६ हीरां ७ कास्मर्या ८ भद्रपर्णिकी ९ इसके इतने नामहैं॥ कंभारीकेगुण॥ ज्वरको १ ओरशूलको २ दूरकरेहै ओर गर्महै ओर मीठाहै ओर भारी ओर उसके फूल बायको पैदा करेहै ओर कावज़ करते है ओर पित्त ओर लोहू ओर प्रदरको दूर करते है ओर फल उसका रसायनहै ओर बालोंको अच्छा करे है ओर पुष्टहै ६ ओर वीर्यको पैदा करेहै ७ ओर भारी है ओर बाय ९ ओर पित्त १० ओर तृर्द ओर प्यास को १२ ओर रक्त १३ ओर मूत्रके विवंधको दूर करती है ++॥ स्योनाकनाम॥ स्योनाक १ पृथुसिंव २ सुकनाश कुटंनट ४ ओर भूतवृक्ष ५ ओर टुंटक ६ सजक ७ अरलुं ८ मयूरचोरव ९ भल्लूकप्रिय १० कटंभरी ११ स्योना ककेगुण॥ दीपनहै १ पचनेकेसमयकडुवाहै ओ र कसेलाहै ओर ठंढाहै २ कावजकरेहै ३ तेजहै ४ बाय ५ कफ ६ ओर पित्त ७ ओर खांसी ८ ओर श्वासको दूर करताहै इतनेगुणहैं॥ बड़ापंचमूलनामगुण॥ बेलको आदिलेकर पांचवृक्षकोबड़ापंचमूलकहतेहैं

सोवुहै अग्निको दीप्तकरेहै। और हलकीहै और गरमहै ३ तेजहै ४ और कसैलीहै ५ चरबी को और कफको ७ और श्रमको ८ वायको हरै ॥ गोखरूके नाम ॥ गोक्षुर १ और त्रिकंट २ और कंटफल ३ स्वाडु कंटक ४ कंटक ५ और भद्रकंट ६ व्यालदंष्ट्रक ७ और स्वादंष्ट्र ८ स्थालशृंगार ९ और षडंग १० और क्षुरक ११ और त्रिक १२ ॥ गोखरूकेगुण ॥ ठंडाहै मीठाहै २ बलकरेहै ३ और वस्तिको शुद्धकरताहै ४ प्रमेह ५ और श्वास ६ खांसी ७ और पथरी ८ और सोजाक ९ हो लदिल १० और बायको ११ यहगोखरूइनग्यारह बी मारियोंको श्रेष्ठहै ॥ शालपर्णीकेनाम ॥ शा लपर्णी १ और ध्रुवा २ सौम्या ३ त्रिपर्णी ४ और पित्त नी ५ और स्थिरा ६ और विदारिगंधा ७ अतिगुहा ८ दीर्घमूल ९ अंशुमती १० शालपर्णीकेगुण ॥ भारीहै १ और छर्दि २ और ज्वर ३ और श्वास ४ और अ तीसारको दूरकरतीहै ५ और शुक्रदोषको दूरकर तीहै ६ और पुष्टहै ७ रसायनहै ८ इतने गुण शालपर णीमें हैं ॥ पीठाकेनाम ॥ पृष्टपर्णी १ क्रोष्टपुच्छा २ धावनी ३ कारनसी ४ गुहा ५ शृंगाल ६ पृष्टपर्णी ७ पर्णिका ८ इसके ८ नाम हैं ॥ पीठाकेगुण ॥ हल कीहै १ खट्टीहै २ मीठीहै ३ और गर्महै ४ रक्तअतीसार

को दूर करे है ५ दाहको ६ लोहको ७ और त्रिदोषको ८ छर्दिको ९ ज्वरको ॥ बड़ीखटाईकेनाम ॥ वृहती १ और अस्थूलभटा २ अर्कविशाद ३ महोटिका ४ वार्ताकी ५ महती ६ और सिंघी ७ और की और राष्टको ९ कुली १० ॥ बड़ीखटाईके गुण ॥ कावजकरे है और दिलको कुव्वत दे है २ पावनी है ३ कफको ४ और धायको जीते है ५ गर्म है ६ कुष्ठको ७ और ज्वरको ८ स्वांस ९ खांसी १० मूल ११ मंदअग्निको दूर करे है अथ लघु कटाई श्वेत कटाई के नाम ॥ कंटारिका १ कंटकिनी २ कंटकारी ३ और निदग्धिका ४ क्षुद्र स्पर्शी ४ धावनी ५ क्षुद्री ७ व्याघ्री ८ दुष्प्रधर्षिणी ९ शितमुख्य १० चंद्रहासी ११ और लक्ष्मणी ११ क्षेत्रदूतिका १२ इतने इसके नाम हैं ॥ लघुश्वेतकटाई के गुण ॥ सर है १ तेज है २ कडवी है ३ दीपनी है ४ हलकी है ५ और पावन है ६ रूखा है ७ खांसी ८ दम्मा ९ ज्वर १० और कफ ११ वायको १२ और पीनसको १३ और पसली के दर्दको दूर करे है १४ और कृमिको १५ और हृदे के रोगको दूर करे है १६ बहुत करके गर्भको करती है ॥ लघुपंचमूलनाम और गुण गोखरूसे आदि लेके येह पांचो बस्कल लघुपंचमूल कहाती हैं शरीरमें बलपैदा करे हैं १ और पित्त वाय

कोदूरकरेहै २ औरबहुतगर्मनहींहै ३ औरमीठीहै
औरपुष्टहै। इसमेंइतनेगुणहैं॥ दसमूलकेनाम
गुण॥ लघुपंचमूलयेह औरयेहदोनोंमिलेतोद
समूलकहावेहै दस्मा १ औरखांसीको २ सिरकेदर्द
को ३ और अयनंत्रकजोएकरोगहोताहै अस्सी ८०
बायकेरोगोंमेंतिसकोदूरकरताहै। औरतंद्राको ५
पसीनोंकोखोतीहै ६ ज्वर ७ अफारा ८ अरुचि ९ औरप
सलीकेरोगकोदूरकरतीहै इसमें इतने गुणहैं॥ अथ
ऋद्धिवृद्धिनाम॥ ऋद्धि १ सुखंयुग २ लक्ष्मी सिद्धि
३ सर्वजनप्रिय ४ ऋषिसृष्टा ५ रथांग ६ मंगलश्रावि
णी ७ वसु ८ योग्यं ९ योग्या १० तुष्टिराशी ११ औरवृद्धि
१२ और अप्येनदकृया १३॥ इसके गुण॥ ऋद्धिब
लकोबढावेहै। औरत्रिदोषकोदूरकरेहै। औरवृद्धि
गर्भकीदेनेवालीहै। औरठंढीहै और पुष्टहै औरखांसी
कोदूरकरेहै और खईकोखोवेहै लोहूको दूरकरेहै॥
काकोलीक्षीरकाकोलीनाम॥ काकोलीमधु
रा २ वीरा ३ कायस्था ४ वीरशुक्लिका ५ ध्वांक्षोली ६ वाय
सोली ७ स्वादुमांस ८ सीययस्विनी ९ दूसरीक्षीरकाको
ली १ सुराह्वं २ क्षीरिणी ३ इतनेनामहैं। इनके गुण॥
काकोलीदोनोंठंढीहैं। औरवीर्यकोपैदाकरेहै १ मीठी
हैं २ औरभारीहैं ३ औरवायको ४ औरदाहको ५ लो। ६ को

पित्तको ७ दुबले ८ त्रिदोषको ॥ मेदामहामेदाना म ॥ मेदा ज्ञेया १ साल्यपर्णी २ विज्ञा ३ मेदोभवांध रा ४ महामेदा ५ वसुछिद्रं ६ त्रिदंता ७ देवनांमणी ८ ॥ इसकेगुणकहेहैं ॥ मेदादोनोभारीहैं और मीठेहैं ॥ और पुष्टहैं । स्तन्यहै ४ वाफाको ५ दुबलेपनको मोयक रहैं ६ और ठंडीहैं ७ और पित्तको दूर करेहै ८ और लोहू अन्नय ९ और बायके रोगको खोदेताहै येगुणहैं ॥ जीवकरूषभकनाम ॥ जीवक १ मधुरश्रृंगी २ ह्रस्वांग ३ कुर्चशीर्षकं ४ ऋषभं ५ धीरं इंद्राक्षवृषणांद्दुर्धरंवृषं ॥ जीवकरूषभकके गुण ॥ जीवक और रूषभक दोनो बलको बढावेहै १ और ठंडीहैं २ और वीर्यको ३ और बलको बढावेंहैं । ४ । और पित्तकूं ५ दाहको ६ और लोहू ७ दुबलेपनको ८ और बायको ९ रवईरोगको १० इनने रोगोंको दूरकरेहै ॥ अष्टवर्गना मानि ॥ ये आठौं बस्तु जो कहीं इनको मिलायके अष्ट वर्गकहावेहै ॥ अष्टबर्गके गुण ॥ सोठंडाहै और वीर्यको बहुत बढावेहै और पुष्टहै २ और पित्तको ४ और खावलोहूको ५ और सूजनको दूरकरेहै और स्त नोंको गुणकरेहै ७ इस अष्टबर्गमें इतनेगुणहैं ॥ अथजीवंतीनाम ॥ जीवंती १ जीवनी २ जीवा ३ जीव नीया ४ यशस्विनी ५ शाकश्रेष्ठा ६ जीवभद्रा ७ मंगल्या ८

जीववर्द्धिनी ९ ॥ जीवंतीकेगुण ॥ ठंडीहै १ चिकनी
है २ त्रिदोषकोदूरकरै ३ पुष्टहै ४ रूलकीहै ५ ॥ मुल
हठीनाम ॥ मधुयष्टी १ कीननकं २ यष्टी ३ मधु ४ मधू
लका ५ यष्ट्या ६ क्लैमधुकं ७ जलजांमधुं ८ ॥ मुलहठी
केगुण ॥ भारीहै १ ठंडीहै २ बलकरैहै ३ प्यासको ४
ग्रौर छर्दिको ५ पित्तकोदूरकरदेतीहै ॥ माषपर्णी
मुद्गपर्णीनाम ॥ माषपर्णी १ हस्तमवंता २ कंबोजी ३
हयपुच्छिका मीसमांषा । सिंघमुखी । स्वादुमाषां । म
हासहं । मुरुपर्णी । लुद्रहासां । सूर्यपर्णी ११ लुरंरिना
बनजारिंगनीं । सिकींसिगां । मार्जारगंधिका १६ इस
ग्रौषधीकेगुण ॥ माषपर्णीठंडीहै । ग्रौरतेजहै ॥
रूखीहै । वीर्यग्रौर बलकोपैदाकरैहै । ग्रौर मीठीहै ।
ग्रौर क़बज़करैहै । ग्रौर शोषको । ग्रौरबाय । ग्रौरपित्त
ग्रौरज्वरको ग्रौर लोहूको दूरकरैहै । ग्रौरहलकीहै
इसग्रौषधीमें इतनेगुणहैं ॥ जीयनीयगणनाम ॥
सजीवनी ग्रौरदोनोंसूर्यपर्णी ग्रौरदोनो काकोली ग्रौर
जीवक ग्रौर ऋषभक ग्रौर मेदा ग्रौर महामेदा ग्रौर मुल
हठी इसको जीवनीगणकहतेहैं ॥ जीवनीयगण
केगुण ॥ वीर्यको पैदाकरैहै १ ग्रौरपुष्टहै २ नलहै ३
स्तनोंको हितहै । ४ । करनेवालीगर्भकी ५ ग्रौरकफकी
है ६ रक्तपित्त ७ नषा ८ शोषा ९ ज्वर १० दाह ११ ग्रौर ।

जखम १२ इतनी बीमारियोंको दूरकरे हैं ॥ अरंड रक्तअरंडनाम ॥ एरंड १ दीर्घदंड: २ अरुण ३ वर्द्धमानकः ४ चित्र ५ पंचांगुल ६ व्याघ्रपुछ ७ गंधर्वहस्तकं ८ रक्तरंड ९ हस्तकर्ण १० व्याघ्रव्याघ्रं ११ तलोरु १२ उत्तानपत्र १३ उरवुवीन १४ वैर्य्य १५ अतिचंचुल १६ ॥ दोनों अरंडोंके गुण ॥ दोनों अरंड मीठेहैं और गर्महैं और भारीहैं और शूलको १ और सूजनको २ कमरको ३ मूत्राशयको ४ शिरकेदर्दको ५ जलंधरको ६ ज्वरको ७ बद्धस्वांसको ८ कफको ९ अफराको १० खांसीको ११ कुष्ठको १२ आमको १३ बायको १४ इतनेरोगोंको खोवे और फलउसका भेदनहै मीठाहै खारीहै गर्म है बायकोजीते ॥ सारिवा कृष्णसारिवानाम ॥ सारिवानसार १ स्फोता २ गोपकन्या ३ प्रतानका ४ ॥ गोपांगना ५ गोपवल्लीलता ६ काष्ठसारिवा ७ आरिया ८ शारिवान्या ९ कृष्णमूली १० भद्रवंद्रमशारिवा ११ सारिवाकेगुण ॥ दोनोसारिवा मीठीहैं और चिकनाहै भारीहै वीर्यकोपैदाकरेहै १ तीनोदोषोंको २ और लोहूको ३ और पेराको ४ ज्वरको ५ और प्रतीसारको ६ दूरकरेहै ७ सारिवाइतनीबीमारियोंकोखोवेहै ॥ जवासानाम ॥ यवासा १ मरुद्भवा २ अनंता ३ दीर्घमूल ४ यवासक ५ वालपत्र ६ समुद्रांत ७ दूरमूल ८ अति

कंटक ९ भद्राचंदना १० कच्छमाप्य ११ धन्वाया १२ सतामूमूली १३ दुःस्पर्शा १४ दुरालभा १५ दुरालंभा १६ यशकं १७ कच्छुरं १८ धन्वयासकं १९ जवासागुण॥ मीठखार है ओर तेज है ठंडा है ओर पित्तको दूर करे है १ ओर हलका है २ ओर लोहूको ३ ओर कफको ४ ओर भ्रांतिको दूर करे है॥ मुंडीनाम॥ मुंडी १ भिक्षु २ परिव्राजी ३ श्रावणी ४ तयो धना ५ श्रावणा ६ श्रीपती ७ मुंडिभिका ८ श्रवणशीर्षका ९॥ मुंडीकेगुण तेज है पचनेके समैं कड़वी है ओर मीठा ओर हलकी है ओर बुद्धिको बढ़ावे है ओर गलगंडको ओर अपचीको सोज़ाकाकी बीमारीको दूर करती है। ओर पांडुरोग को दूर करती है॥ महामुंडीनाम॥ महामुंडी १ लोमनीया २ छिन्ना ३ ग्रंथनि ४ काकंबपुष्पी ५॥ गुण॥ मुंडीके समान इसके भी हैं यह भी पूर्वोक्त रोगोंको खोये॥ अथअंगानाम॥ अपामार्ग १ शिखरी २ किणही ३ खरमंजरी ४ अध ५ शल्यं ६ शेखरिक ७ प्रत्यक् ८ पुष्पी ९ मयूरक १०॥ अंगाकेगुण॥ सर है ओर तेज है ओर दीपन है ३ ओर कफको ४ बायको ५ ओर दादको ६ छीपको ७ बवासीरको ८ खुजलीको ९ उदरकेजो रोग हैं वाका नाश करे है १० ओर अपचीको दूर करे है इतने गुण हैं॥ लालअंगाकेनाम॥ अन्य

रक्ता १ वनफल २ वसिर ३ कपिपिप्पली ४ इसकेगुण॥ लालअंगाकवज़करैहै कफको १ रक्तपित्तकोदूरकरैहैरूखीहै और पहलेसे इसमेंगुणथोड़ेहैं॥ इति लालअंगाकेगुण॥ कपालानाम॥ कपिल्ल १ रोचनरक्त २ चूर्णधन ३ लोहितरक्त ४ शमनं ५ रेची ६ रजनक ७॥ गुण॥ कफको १ औरपित्तको २ पथरीको ३ औरकृमको ४ औरगोला ५ उदररोग ६ औरफोड़ेको ७ दूरकरैहै औरउसकासागकबज़करैहै औरठंडाहै॥ दंतिनीदंतीभेदनाम॥ दंती १ गुणप्रिया २ नागदंती ३ शीघ्रांआरवुकर्णी ४ उपचित्रां ५ निकुंभा ६ विशिल्या ७ उदुंबरछदां ८ मुकूलका ९ वृषैरंडा १० इवंति ११ शंबरी १२ मूखकाह्वा १३ सुतश्रेणी १४ प्रत्यकश्रेणी १५ पूजिका १६॥ गुण॥ दंतीदोनोपचनेकेसमयकड़वीहैं और दीपनहैं १ तेजहैं २ गर्महैं ३ पित्तको ४ लोहू ५ कफको ६ पेरकीसूजन ७ कृम ८ इतनेरोगोंकोखोवेहै॥ जयपालनाम॥ जयपाल १ दंतिबीज २ तत्तरीफल ३॥ गुण॥ भारीहै १ चिकनीहै २ जुल्लाबलावेहै ३ पित्तको ४ कफको ५ दूरकरैहै॥ इतनेरोगोंकोदूरकरैहै ×॥ श्यामनिसोतनाम॥ त्रवृत् १ कुंभोरण २ न्यस्त्रांभडी ३ कूटरबाहिनी ३ नावुभूति ४ त्रवना ६ त्रिपुटी ७ सरलासिता ८॥ गुण॥ तेजहै १ सरहै २ रूखीहै ३ मीठीहै ४ गर्महै

बायको६ ज्वरको७ कफको८ पित्तको९ और शोको
दरको दूर करे है और पचने के समय कडवी है ॥

स्यामनिसोतनाम ॥ तवनकाला१ कालमेषी२
कालपर्णी३ अर्द्धचंद्रिका४ सुखेनी५ मलविका६
मसूरविदला७ ॥ गुण ॥ कालानिसोत बहुतकरके
जुल्लाबहै१ मूर्छा२ दाह३ मद४ भ्रांति५ इनको पैदाक
रे है ॥ और गले को उत्कर्षण करे है ॥ इंद्रबारुणी
नाम ॥ इंद्रबारुणी१ अमेन्द्राद्दी२ वृषभाची३ गवादि
नी४ इंद्रवारु५ चंद्रफला६ बिशाला७ इंद्रविषाद्नी८
अन्येंद्रबारुणी९ चित्राफलं१० चित्रा११ महाला१२ आत्म
रक्षा१३ नागदंती१४ त्रिपुंसी१५ गजचिर्भटी१६ श्वेतपु
ष्पा१७ मृगाची१८ चनदन्तसुना१९ मरुद्भवा२० कमि
कुंभ२१ चित्रदेवी२२ ॥ इंद्रबारुणी के गुण ॥
इंद्रबारुणी दोनो तेज है१ कडवी है२ पचने के समय
हलकी है३ कवलबाय४ और पित्त५ कफ६ तापति
ल्लीको७ उदररोगको८ ॥ किरवालीनाम ॥
आरग्बध१ राजवृक्ष२ शम्याक३ कृतमालक४।
व्याधिघात५ कर्णिकार६ प्रग्रह७ चतुरंगुलं८ आ
रोग्यसिंबी९ स्वर्णपर्णी१० दुःकर्णी११ दूर्घफलं१२
लांकुडली१३ हेमपुष्पा१४ कालिव्यात१५ द्रुप१६
स्वर्णाशी१७ फालिकाशाव१८ कृष्णसुरुन१९ स्वर्ण

स्याल्या २० पित्तला २१ सुवर्णाङ्कुम २२ ॥ गुण ॥
भारीहै १ मीठाहै २ नर्महै ३ रोचनहै ४ ज्वरको ५ हृदयरो
गको ६ पित्तको ७ लोहू ८ बायके उदावर्तको ९ शूलको
जीतेहै १० उसकेफूलबायकोपैदाकरतेहैं। कबज
करतेहैं। तेजहैं पित्तको कफकोदूरकरेहै उसकी मी
गीपचनेकेसमयमीठाहै। चिकनीहै। बायकोदूर
करतीहै ॥ नीलिनाम ॥ नेलिनी १ नीलिका २ ग्राम्या
३ श्रीफला ४ भारबाहिनी ५ रंजनी ६ कालकामें ७ लानु
नीरक्ता ८ विधनी ९ ॥ नीलिगुण ॥ रेचनीहै १ बालों
को अच्छीहै २ तेजहै ३ मूर्छाको ४ भ्रमकोदूरकरेहै ॥
गर्महै ५ जलोदरको ६ तापातिल्लीको ७ बातरक्त ८ क
फ ९ वायरखोवे ॥ अथकुटकीनाम ॥ कटुकी १ रोहि
णी २ तिक्तबन्कारी ३ कटुरोहिणी ४ मत्स्यापित्ता ५ कांड
रुहा ६ कृष्णभद्रा ७ छिज्जांगिका ८ अशोकरोहिणी ९
मत्स्यां १० शकुला ११ ग्लादिनी १२ ॥ गुण ॥ पचनेके
समयकड़वाहै औरतेजहै रूखीहै। सरहै। हलकीहै
ठंडाहै। कृमको १ श्वासको २ दाहको ३ पित्तको ४ कफको
५ ज्वरको ६ दूरकरेहै ॥ अंकोलनाम ॥ अंकोल १ क
नामुफल २ पाठसार ३ निकोचन ४ गुप्तस्नेह ५ बेरवी ६
मूसिता ७ दीर्घकीलक ८ ॥ गुण ॥ कड़वीहै चिकनी
है तेज हलुवरहै। हलकीहै। नुखावरहै। कृमको १ ॥

मूल २ आमको ३ सूजनको ४ कफको ५ विषकूं दूरकरैहै ६ फल उसका ठंडा है ७ मीठा है ८ कफकूं पैदाकरै है ९ पुष्ट है १० बलको पैदाकरैहै ११ और जुल्लाबहै १२ बायको १३ पित्तको १४ दाह १५ त्तय १६ लोहूको जीतेहै १७ ॥ सैहुंडनाम ॥ सैहुंड १ वज्र तुंड २ गंडीर ३ वज्रद्रुमक ४ स्नुही ५ समंत ६ दुग्धा ७ । असिपत्री ८ बज्री ९ महातरु १० ॥ गुण ॥ रेचनहै । तेजहै । दीपनहै । कडवीहै । भारीहै । मूलको १ आम को २ अष्ठी ३ अफारा ४ गोला ५ सूजन ६ उदररोग ७ वाय औरक्षीविष ९ तापतिल्ली १० औरकुष्ट ११ उन्माद १२ पांडुरोग १३ इनने रोगोंको दूरकरैहै ॥ सप्तसा ना म ॥ सातला १ सारा २ विमुला ३ बायफेना ४ बम क ५ साफेना ६ दीपरसालिका ७ ॥ गुण ॥ रेचनी है । बायकी सूजनको खोवै ॥ अथनिंबनाम ॥ निंब १ नियमन २ नेता ३ मारिष्ट ४ परिभद्र ५ कुसुभि क ६ सर्वतोभद्र ७ पिचुमंद ८ प्रभद्र ९ काकफल १० हारिव हत्त १० रविक ११ रविसन्निध १३ सूर्यक १४ ॥ गुण ॥ ठंडाहै । कब्जकरैहै १ हलका है २ पकनेकेसमैकडवा है ४ अगिनबायको पैदाकरैहै फोडेको ५ पित्तको ६ पित्तको ७ कफको ७ छर्दिको ८ कुष्ठको ९ मुंहसेपा नीवहनेको १० प्रमेहको ११ इनसबको दूरकरैहै ।

बिनपकेको पकावैहै। पकेहुवेको शुद्धकरेहै। फलउसका भेदनहै। चिकनाहै। औरकुष्टकोद्दूरकरेहै। औरहलकाहै॥ अथमहानिंबनाम॥ महानिंब १ निंबरक २ कार्मुक ३ विषमुष्टक ४ रम्यक ५ गिरिक ६ द्रेक ७ क्षीरकेशमुष्टक ८॥ गुण॥ ठंडाहै १ रूखाहै २ तेजहै ३ काबजहै ४ कसेलाहै ५ कफ ६ पित्त ७ कृमि ८ छर्दि ९ कुष्ट १० मुंहसेपानीबहना ११ औरलोहू १२ अनसबबीमारियोंको दूरकरताहै॥ अथचिरायतानाम॥ चिरायता १ किरात २ तिक्त ३ कैरात ४ भूनिंब ५ रामसेनक ६ किरातक ७ अन्य ८ नैपाल ९ नाडीतिक्त १० ज्वरांतक ११ ऊर्द्धतिक्त १२ निद्रारि १३ सन्निपातहा १४॥ गुण॥ बायकोपैदाकरेहै। रूखाहै। ठंडाहै तेजहै १ हलका है २ सन्निपात ३ जुर ४ दम्मा ५ खांसी ६ पित्तलोहू ७ दाहको ८ इतनेरोगोंकोदूरकरताहै॥ अथकुंडानाम॥ कुरज १ मल्लकापुष्प २ कलिंग ३ गिरमल्लिका ४ वत्सक ५ कूटी ६ वल्लक ७ शक्रभूरुह ८ तुस्यक ९ वरतिक्त १० कुटजा ११ पांडुरद्रुम १२ सतकुर्म १३ कोरी १४ निरावष्टी १५ मल्लिका १६॥ गुण॥ कड़ुवाहै। रूखाहै। ठंडाहै। दीपनहै। १ बवासीर २ अतिसार ३ पित्त ४ लोहू ५ कफ ६ प्यास ७ आमकुष्ट ८

स्नकोदूरकरेहै। फलइसकाबायकोपैदाकरेहै
ठंडाहै। नेजहै। पित्तअतिसारकोदूरकरताहै ॥ ★ ॥
इंद्रजवनाम ॥ इंद्रजव १ निसकाफूल २ कलिंग ३
कुटज ४ शक्राह्व ५ पुरहत्त ६ भद्रजव ७ ॥ गुण ॥
तीनोदोषोंको १ ज्वरको २ अतिसारको ३ रक्तबवा
सीरको ४ विसर्प ५ कुष्ठकोदूरकरेहै। काबिज़ ठंडा
कड़वाहै ॥ मैनफलनाम ॥ मदनछर्दन १ पिंडी
तक २ पिंडी ३ नकेफल ४ करहाट ५ तुरंग ६ शल्यक ७
विषपुष्पक ८ ॥ गुण ॥ छर्दलावैहै। नेजहै। रूखा
है। कुष्ठको कफको २ अफाराको ३ सूजन ४ गोला ५
फोड़ा ६ इतनेरोगोंकोखोवैहै ॥ नाड़िकाकंकुष्ठ
नाम ॥ कंकुष्ठक १ काककुष्ठ २ रेचन ३ रंगनायक
४ शोभन ५ पुलक ६ हास ६ वरांग ७ किंजबालुक ८ ॥
गुण ॥ रेचनहै १ नेजहै २ कड़वीहै ३ गर्महै ४ रंगअ
च्छाकरेहै ५ औरकफकोदूरकरतीहै ॥ ६ ॥ ★
अथचोकनाम ॥ हेमाद्रि १ कनकाक्षीरी २ हेम
दुग्धा ३ हिमावती ४ क्षीरणी ५ कांचनाक्षीरी ६ कटु
पर्णी ७ निकदुग्धा ८ हेमवती ९ पीतदुग्धा १० गुण
रेचनीहै १ नेजहै २ मदको ३ जीमचलानेको ४ पैदाकरे
है। औरकिरमको। औरखाजको। औरकुष्ठरोगदू
रकरेहै ॥ अथसीतलनाम ॥ सीतला १ विम

ला २ सीरीसफला ३ बहुफेनका ४ चर्मसाह्वा ५ चर्मकष ६ साफेना ७ दीप्ता ८ नाडिका ९ ॥ गुण ॥ पचनेके समय कडवी है बायको पैदा करे है । ठंडी है । २ हलकी है ३ तेज है ४ स्तंजनको ५ कफको ५ अफरेको ६ पित्त ७ को ७ उदावर्तको ८ लोहूको ९ दूर करती है ॥ ११ ॥

अथ सिंमिलोगनाम ॥ अश्मन १ मल्लिका २ अपत्र ३ युग्मपत्र ४ अल्पपत्र ५ काम्लद्दागल्व ६ कुअश्म ७ योनिकुशला ८ पायनाशन ९ ॥ गुण ॥ तुबर है १ काबिज है २ ठंडी है ३ खट्टी है ४ कफको ५ बायको हरे है ६ और गलगंडको ७ गंडमालको ८ लोहूको ९ गलेके रोगोंको १० दूर करता है । उसका फल लेखन है । काबिज़ है । भारी है कफबायको खाता है ॥ अथ कचनारनाम ॥

कांचनार १ कांचनक २ पाकरी ३ रक्तपुष्प ४ ककोविद ५ रक्षभेद ६ कुद्दाल ७ कुंडली ८ आस्फोत ९ उद्दाल १० कुशार ११ अमरोहन १२ ॥ गुण ॥ ठंडी है । काबिज़ है । २ कसेला है ३ कफको ४ पित्तको ५ कृम ६ कुष्ठ ७ कांचके निकसनेको ८ गंडमाल ९ फोडा १० दूर करे है फूल उसके हलके हैं रूखे हैं काबिज़ हैं । पित्तको लोहूको प्रदरको और क्षईको खांसीको दूर करता है । इतने गुण हैं ॥

अथ सेंभालूनाम ॥ निर्गुंडी १ श्वेतकुसुम २ सिंदुक ३ सिंदुवारक ४ भूतकेस अपर ५ नालिसिंदुक ६ पुष्पनीलि

क७ शोफालिका८ पीनभीरु९ घनक१० बनमंज
री ॥ गुण ॥ स्मृतिकी दाताहै तेजहै१ कसेली
है काडवीहै शूलकोहै बालोंको अच्छीहै आखों
को गुनकरै२ शूलको३ सूजनको४ आमबाय५ कृ
मि६ कुष्ठ७ अरुचि७ कफ८ फोड़ा९ इतने रोगोंको
दूरकरतीहै ॥ अथ मेढासींगीनाम ॥ मेढासिं
गी१ मेषशृंगी२ भूषवल्ली३ सर्पदंष्ट्रा४ शृंगिका५ अ
जाद६ शिखावर्त७ वृश्चिकाली८ बिषानिका९ ॥
गुण ॥ सवादइसकातेजहै बाय पैदाकरैहै रूषीहै
पचनेके समय कड़वीहै खांसीको१ पित्तको२ फोड़े
को३ कफको४ नेत्रदर्दको खोवेहै ॥ पुनर्नवाना
म ॥ पुनर्नवा१ श्वेतमूली२ पथाक३ दीर्घपत्रक४ विशा
ख५ दीर्घयाभू६ पुनर्भू७ मंडल७ छ्ट८ ॥ गुण ॥ तेजहै
रूखीहै गर्महै मीठीहै । कड़वीहै । सूजनको. बायको
फोड़ेको३ कफको४ उदरकेरोगको५ अरुचिको६ इतने
रोगोंको खोतीहै । रसायनीहै ॥ रक्तपुनर्नवाना
म ॥ पुनर्नवा१ पराणिका२ रक्तपुष्प३ कठिल्लक४ स्व
तु दबर्षा५ भूबर्षकै६ शिवाटिका७ ॥ गुण ॥ तेजहै ॥
और पचनेके समय ठंडीहै और शूलकोहै । और बादी
को. कफको पित्तको३ लोहूको हरै कबज़ करैहै ॥
रास्नानाम ॥ रास्ना१ रक्ता२ युक्तरसा३ रसनाग४

धनाकुला५ गंधमूली६ अनिरसा७ श्रेयसी८ सुबहा४ रसा१०॥ गुण॥ आवको पचावेहै। तेजहै। भारीहै। गर्महै। कफको१ बायको२ सूजनको३ बातरक्तको४ बायशूलको५ उदररोगको६ इतनेरोगोंकानाशकरती है॥ अथअसगंधनाम॥ असगंध१ अश्वगंधा२ तुरंगाह्वा३ कोकर्णा४ अश्वा५ वरोहक६ वराहकर्णी७ वरदा८ बल्या९ बाजीकरी१० वृषा११ गुण बायको१ कफको२ सूजनको३ उदररोगको४ दर्दको५ दूरकरती है कूवतकरे है६ रसायनी है७ तेजहै८ कसैली है९ गर्म है१० वीर्यकोबढावेहै॥ गंधपसारणनाम॥ प्रसारणी१ राजबला२ चारुपर्णी३ प्रतानिका४ सारिणी६ भद्रा भद्रपर्णी८ सुविस्तरा९॥ गुणतासीर॥ भारीहै॥ गर्महै। बायकोखोवेहै। तेजहै। लोहूको कफको दूरकरतीहै॥ सतावरनाम॥ शतावरी१ द्वीपशत्रु२ द्वीपका३ वरकंटिका४ नारायणी५ शतपदा६ शतपा७ बहुपुत्रिका८॥ सतावरकेगुण॥ भारीहै। और ठंडीहै मीठहै। चिकनीहै। रसायनहै। वीर्यकोबढावेहै२ दूधकोबढावेहै३ बलकरेहै४ बायको५ पित्तकोदूरकरेहै औरलोहूको दूरकरेहै। और सूजनको दूरकरतीहै॥ अथबडीसतावरनाम॥ सतावर्य। ऊर्द्ध्वकंटा। न्यग्रो वरदांबरी। वरी। अभीरु। बहुपत्री। महापुरुष। दंतिका।

सहस्रवीर्या। कोशातुंगिनी। सूक्ष्मपुत्रिका। गुण
बुद्धिकोबढ़ावेहै १ दिलकोकुब्बनकरेहै। २ रसाय
नहै ३ ठंडीहै ४ औरबवासीरको ५ संग्रहणी ६ और
नेत्ररोगकोदूरकरेहै औरउसके अंकूर तीनोंदोषों
कोदूरकरेहै ९ हल्केहैं १० बवासीरको ११ खईको दू
रकरे इनसब रोगोंकोखोवेहै॥ अथरविरहटी
नाम॥ बला १ घालका २ थानपाको ३ भद्रनदा ४
भद्रोदनी ५ समंगा ६ समांसा ७ खरयष्टिका ८ ॥ ८ ॥
सहदेवीनाम॥ महाबला १ बीरपुष्पा २ सहदेवी ३
बहुद्धला ४ बाघायनी ५ देवसहा ६ बाघा ७ पीतपुष्पि
का ८॥ अथबलिकानाम॥ बिलिका १ अति
बला २ भारद्वाजी ३ वृक्षगंधिका ४ इतनेइसकेनामहैं
अथगंगेरुनाम॥ गंगेरुकी १ नागबला २ विश्व
देवा ३ गवेधुका ४॥ गुण॥ चारोठंडीहै १ मीठीहै २।
बलको ३ औरकांतिकोबढ़ावेहै ४ चिकनीहै ५ कवज्ज
करेहै ६ बायको ७ लोहूको ८ पित्तको ९ बवासीरको १०
ज़खमको ११ बहुद्धला सोजाककोदूरकरेहै नागब
लाभारीहै। कुब्बतकरेहै २ बिशेषकरकेलोहू ३ और
पित्तकोदूरकरेहै। ४। रसायनीहै ५ पुरुषत्वकोबढ़ावे
है ६ बृहणीहै। उसकाफलठंडाहै। ७। औरअस्तंभनहै
८ भारीहै ९ लेखनहै १० कबज़करतीहै ११ औरपेटको

फुलादेतीहै १२ औररक्तपित्तकोदूरकरदेतीहै ॥
इनचारों औषधियोंमें इतनेगुणहैं ॥ अथतेज
बलनाम ॥ तेजस्विनी १ तेजवती २ तेजनी ३ स्वच्छ
वल्कला ४ महौजसी ५ पारिजाती ६ श्योंतांतिका ७
अतितेजिनी ८ ॥ गुणतेजबलके ॥ कफको १
औरदमेको २ खांसीको ३ बवासीरको ४ औरबायके
रोगोंकोजीतैहै ५ पाचनीहै ६ गर्महै ७ कड़वीहै तेजहै
९ अरुचिकोदूरकरतीहै १० उदरकीअगनिको दीपन
करेहै ॥ ११ ॥ मालकंगनीनाम ॥ ज्योतिष्म
ती १ वन्हिरुचि २ कंगुणी ३ कटुभी ४ ॥ गुण ॥ कड़वी
है । तेजहै २ सरहै ३ कफको ४ वायकोजीतैहै ५ बहुत
गर्महै ६ औरछर्द्दकोलावैहै ७ पेटकीअगनिकोबुद्धि
स्मृतिकोबढ़ावैहै ॥ देवदारुनाम ॥ देवदारु १
सुराह्व २ भद्रदारु ३ सुरद्रुम ४ भद्रकाष्ठ ५ स्नेहवृक्ष ६
किलिम ७ शक्रदारु ८ ॥ अथगुण ॥ कड़वाहै
चिकनाहै । तेजहै । गर्महै । हलकाहै । औरअफारेको
१ औरज्वरको २ सूजनको ३ आंवको ४ कुचकीको ५
खुजलीको ६ कफको ७ बायकोजीतैहै ८ ॥ ॥
अथसरलनाम ॥ सरल १ नवीरु २ नमरु ३ उद्दाप
वक ४ पूतिदारु ५ पीतवृक्ष ६ महादीर्घ ७ कलिद्रुम ८
गुण । पचनेकेसमय कड़वीहै स्वादमेंमीठीहै ॥

हलका है। गर्म है। चिकना है। बायको दूर करे है॥ और आंखके रोगको खोताहै। और कानके रोगों को खोताहै॥ पुहकरमूलनाम॥ पुष्करपद्म पद्मपत्र २ पौष्कराह्वक ३ काश्मीर ४ पुष्करजटा ५ मूलबीर ६ सुगंधक ७ गुण॥ कडवाहै। तेजहै॥ गर्महै। बायको १ कफको २ ज्वरको दूर करताहै॥ सूजनको ४ अरुचिको ५ स्वासको ६ और पसलीके दर्दको दूर करताहै॥ अथ कूठनाम॥ कूठ १ रोगघ्न २ वाप्य ३ कौबेर ४ पारिभद्रक ५ पारिहार्य ६ पारिभव्य ७ उत्पल ८ हरिभद्रक ९॥ गुण॥ गर्म है। कड़वी है। मीठी है। तेजहै। वीर्यको पैदा करे है॥ हलकी है। २ वातरक्त ३ विसर्प ४ और खांसीको। कुष्ठको ६ बायको ७ कफको दूरकरे है॥ काकडासिंगीनाम॥ शृंगी १ कुलीरशृंगी २ अवक्रा ३ कर्कटशृंगिका ४ कर्कटाख्या ५ महाघोषा ६ शृंगनाम्नी ७ नतांगी ८॥ गुण॥ कसैली है। तेजहै। गर्महै और हिधाको। और छर्दिको। और ज्वरको दूर करती है यह इसमें गुणहैं॥ रोहिसनाम॥ रोहिस। कतृण। २ भूतिभूति ३ कसरल ४ श्यामाक ५ मुकुर ६ पोर ७ ध्यामक ८ देवगंधक ९॥ गुण॥ पचनेके समय कड़वा है। तेजहै। गर्महै। कसैला है। गलेके १

ओर हिरदेकेरोगोंको खोवेहै। पित्तको ३ लोह को ४ सूलको ५ खांसीको ६ कफको ७ ज्वरको ८ दूरकरतीहै॥ अथकायफलनाम॥ कायफ ल १ कुसुद २ कुंभी ३ श्रीपर्णी ४ सोमपारप ५ सोम बल्क ६ महाकुंभी ७ भद्री ८ भद्रवती ९ शिवा १० गुण॥ कसेलाहै। तेजहै। कड़वाहै। बायको १ कफ को २ ज्वरको ३ स्मेको ४ प्रमेहको ५ बवासीरको ६ खां सीको ७ गलेकेरोगोंको ८ अरुचिको खोवे है ९॥ भारंगीनाम॥ भारंगी १ भृगुभवा २ पद्मा ३ काष्ठ घी ४ भार्गपर्बिणी ५ खरशाक ६ ब्रह्मभाता ७ फञ्जी ८ ब्राह्मणयष्टिका ९॥ गुण॥ रूषीहै। कड़वीहै। तेज है। खानेकीरुचिउपजावेहै गर्महै २ पाचनीहै ३ सूज नको ४ खांसीको ५ कफको ६ स्मेको ७ पीनस ८ ज्वर ९ बायको खोवेहै॥ पाषाणभेदनाम॥ पाषा णभेद १ पाषाण २ अश्मभेद ३ अश्म भेदक ४ शिला भेद ५ शिलाभेद ६ नग भिन्नक ७ भेदक ८॥ गुण॥ कसे लाहै। ठंडाहै। मूत्राशयकोशुद्धकरैहै। १ सरहै २ तेजहै ३ प्रमेहको ४ बवासीरको ५ खोताहै सोजाकको ६ पथ रीको ७ इननेरोगोंकोयहनष्टकरताहै॥ नागरमो था॥ मुस्तनागरिधर १ मुस्ता २ मेघाख्य ३ कुरुबिंदक ४ वराहाख्य ५ घन ५ भद्रमुस्त ७ बाजिकसेरुक ९ पिं

डीमुस्त १० बिषध्वंसी ११ नागरोन्य १२ गुण ॥ कड़ु
वाहै १ ठंडा है २ काविज़ है ३ तेज है ४ दीपन है ५ पाचन है
६ कसेला है ७ पेटकोकीड़े ८ पित्तको ९ लोहू १० कफ ११
और प्यासको १२ ज्वरको दूर करे है ॥ धावानाम
धानकी १ कुंजरा २ शीघ्रपुष्पी ३ भ्रमरनी ४ मदानी ५ भद्रा
६ पार्वतीया ७ ताम्रपुष्पी ८ सुभिक्षा ९ मधबासिनी १०
गुण ॥ कड़वी है । ठंडी है । नशा करे है । कसैली है । हल
की है । प्यासको । और अतीसारको २ ज्वरको ३ और रक्त
पित्तको ३ जहरको ४ पेटकेकीड़े ५ विसर्पको खोवे है ॥
अथ माईनाम ॥ माचिका १ बालिका २ रसीशांची
३ रंगशठ ४ अंबका ५ अंबषकी ६ सूचिमुखी ७ कषाया ८
शाकरमुखी ९ ॥ गुण ॥ खट्टी है १ पचनेके समै कसै
ला है । ठंडी है ३ हलकी है ४ पक्के अतीसारको ५ लोहूको ६
और कफको ७ और शूलके रोगोंको खोवे है इतने गुण हैं ।
अथ बिदारीकंदनाम ॥ बिदारिका १ [illegible]
स्तकंदा ३ बिरालिका ४ भुक्का क्षीरबल्ली । ५ पयस्विनी
इक्षुबल्ली ७ महाश्वेता ८ क्षीरगंधा ९ इक्षुगंधा १० ॥ २ ॥
गुण ॥ मीठी है । और चिकनी है । पुष्टै दूधको वीर्य
को पैदा करे है । भारी है पित्तको लोहूको । बायको दाह
को दूर करे है रसायन है ॥ बाराहीकंदनाम ॥
बाराही १ माधवी २ गृष्टी ३ सौकरी ४ बनमालिका ५ कौ ६

क्रोडी६ संबर७ कंदका९॥ गुण॥ मीठाहै। पचनेके
समयकड़वीहै। नेजहै। बीर्यकोबहुतपैदाकरेहै। बल
करेहै। पित्तकोपैदाकरेहै। बायकोकफकोप्रमेहको
औरकिरमको इतनेरोगोंकोदूरकरेहै॥ पाठाना
म॥ पाठा। अंबष्ठा। बृहतिका। ३ प्राचीनी ४ वत्कोरसा ५
बरातिक्ता ६ पापचेली ७ श्रेयसी ८ बिद्धकर्णिका। ९॥
गुण॥ गर्महै कड़वीहै। नेजहै। बायको। कफको॥
शूलको ज्वरको छर्दिको कुष्ठको। अतीसारको। दाहको
दाहको। खुजलीको। बिषको। स्वासको। कृमिको। गो
लेको। उदररोगको। फोड़ेको दूरकरेहै॥ अथ मुरहरी
नाम॥ मूर्वा १ देवी २ मधुरसा ३ स्वेश्रेणी ४ मधुश्रवा ५
स्निग्धपर्णी ६ पृथकपर्णी ७ मोरका ८ पीलुपर्णिका ९
जालिनी १० ननबल्का ११ नंदनी पृथकत्वचा १२ गुण
सरहै। भारीहै। मीठाहै। नेजहै। पित्तको। लोहूको २ प्रमे
हको ३ तीनोंदोषोंको ४ प्यासको ५ औरहृद्रोगको ६ खु
जलीको ७ कुष्ठको ८ ज्वरको ९ पित्तको १० बायको ११
दूरकरेहै सुखहै १२ मीठीहै १३ कफकरेहै दिलकोकूवत
करेहै १४ औरकबज़है। औरगोलेकोदूरकरेहै येगुणहैं
मंजीठनाम॥ मंजिष्ठा १ विजया २ रक्ता ३ रक्तांगी ४ का
लमेषिका ५ रक्तयष्टी ६ ताम्रबल्ली ७ समंगी ८ बस्त्रभूष
णी ९ मंजुला १० विकसो भंडी ११ छत्रिका १२ ज्वरनाशनी १३

गुण। मीठी है। तेज है। कसैली है। भारी है। गर्म है॥ स्वरको। रंगको। २ अच्छाकरैहै। कफको ३ सूजनको ४ नेत्ररोगको ५ रक्तअतीसारको ६ कुष्ठको ७ लोहूको ८ बिसर्पको ९ फोडोंको १० प्रमेहको ११ दूरकरैहै। और उसका साग दीपन है। मीठा है। चिकना है। पित्तको। वायको खोता है॥ अथ हलदी नाम॥ हरिद्रा १ रंजनी गौरी २ रजनी ३ बरवर्णिनी ४ पिंडीपीता ५ वर्णवती निशा ७ वर्णबिलासिनी ८॥ गुण॥ कडवी है तेज है रूखी है। गर्म है। कफको। पित्तको रंगको अच्छा करै तुचाके दोषको दूरकरैहै। प्रमेहको। सूजनको। पांडुरोगको फोड़ेको दूरकरैहै॥ दारुहलद नाम॥ दार्वी १ दारुहरिद्रा २ पीतदारु ३ पचंपचा ४ कुटकटेरी ५ पीतद्रुम ६ स्वर्णवर्णा ७ कटंकटी ८॥ गुण॥ इसके गुण भी हलदी की तुल्य हैं और बिशेषकरिके आंख और कान मुंहके रोगोंको दूर करती है॥ अथ पवाड नाम॥ प्रपुन्नाड १ एडगज २ चक्रमर्दन ३ कं डूघ्न ४ मर्दक ५ मेष ६ कुसुम ७ कुष्ठघ्न ८॥ गुण॥ हलका है मीठा है रूखा है पित्तको १ बायको २ कफको ३ दम्मेको ४ कुष्ठको ५ दादको ६ कृमिको दूरकरैहै ७ और दिलको कुव्वत करैहै ८ ठंडा है और फल उसका गर्म है कुष्ठको ९ खुजलीको १० दादकूं ११ विषको दूरकरैहै कुव्वत पैदाकरैहै इतने इसमें गुण हैं॥

**अथवाकुचीनाम॥** वाकुची १ चंद्रिका २ सोमवल्ली ३ पूतिफला ४ वरा ५ सोमराजी ६ कृष्णफला ७ वल्गुजा ८ कालमेषिका ९॥ **गुण॥** मीठा है तेज है। पवन के समय कड़वी है। रसायनी है। काबिज़ है। ठंडी है। भोजन में रुचि उपजावे है। १ सरदे २ तिल्लिको कुबन दे है ३ लोहू को ४ पित्त को ५ जीते है ६ रूखी है ७ कफ को ८ मेको ८ प्रमेह को ९ ज्वर को ९ कृमि को दूर करे है॥ ११॥ और उस का फल पित्त को पैदा करे है॥ **अथभंगरानाम॥** भृंगराज १ भेषरज २ मार्कव ३ केशरंजन ४ अंगारक ५ भृंगा ६ सूर्यवल्लभ ७॥ **गुण॥** कड़वा है तेज है। रूखा है। गर्म है। कफ और वाय को दूर करे है २ रुचि उपजावे है भोजन की ४ कुष्ठ को ५ आंख के सिर के रोगों को दूर करता है॥ **अथपित्तपापडानाम॥** पर्पट १ कवच २ रेणु पित्तह ३ यवकंटक ४ वरतिक्त ५ पर्पटक ६ पर्पटां ७ कचर्म ८ कंटक ९ **गुण॥** पित्त को १ लोहू को २ सिर के फिरने को ३ प्यास को ४ कफ को ५ ज्वर को ६ दाह को ७ इन सब रोगों को दूर करे है और ठंडा है। काबिज़ है तेज है। बाय को पैदा करे है और हलका है पित्तपापड़े में इतने गुण हैं और इतनी तासीर है॥

**अथपतिसनाम॥** अतिविषा १ शुक्लकंदा २ विषा ३ प्रतिविषा ४ अपरा ५ श्यामकंदा ६ शिशुनाम्भंगी ७ भंगुरी ८ उपविषा ९ [illegible]णाकी १०॥ **गुण॥** गर्म है पाचनी है। तेज़ है।

कफको १ पित्तको २ प्रतीसारकोजीते है॥ २२॥
काकमांचीनाम॥ काकमांची १ ध्वांक्षमांची २
कामाची ३ जघनफला ४ रसायनी ५ वराह ६ सर्वातिक्ता
किंकिनी ८ काकुं ९॥ गुण॥ तीनोंदोषोंको १ सूज
न ४ कुष्टको ३ ववासीरको ४ ज्वरको ५ प्रमेहकोदू
रकरेहै। चिकनीहै। गर्महै। मीठीहै। वीर्यकोपैदा
करै। हिचकीकोकुष्टकरै। रसायनीहै॥ अथका
कजंघानाम॥ काकजंघा १ नदीकांता २ काक
तिक्ता ३ सुलोमशा ४ पारावती ५ काकपदी ६ मध्या ७
कर्मिणी ८॥ गुण॥ ठंडीहै। रक्तपित्त। और कफको।
२ औरज्वरकोदूरकरतीहै इतनेगुणहैं॥ सणपुष्पी
नाम॥ सणपुष्पी १ माल्यपुष्पी २ धावनी ३ सनघंटि
का ४ वृहत्पुष्पी ५ स्वल्पघंटा ६ घंटाशब्दा ७ पुष्पिका
८॥ गुण॥ कडवीहै। पित्तकोकफको दूरकरतीहै
इतने इसमेंगुणहैं॥ त्रायमाणनाम॥ त्रायमा
णा १ सुत्राणा २ त्रापती ३ गिरिसानुजा ४ बलभद्रा ५
वृत्रत्राणा ६ बार्षिक ७ कृष्णमालक ८॥ गुण॥ सर
है औरपित्तकोज्वरको। कफकोलोहूकोऔरशूलकू
दूरकरेहै॥ अथजालनाम॥ महाजालनिका १
चर्मरंगा २ पीनकीलका ३ आवर्तिका ४ विंदुकिना ५ भां
डरी ६ रक्तपुष्पिका ७॥ गुण॥ तेजहै। जुल्लाबलावेहै

कफको ३ पित्तको ४ दाहको ५ उदररोगको ६ पेटके अफरेको ७ सूजनको ८ कुष्ठको ९ किरमको १० ज्वरको ११ दूरकरनेवाला है ॥ अथ सोधवृक्षनाम ॥ सोधजिरीट १ कानान २ निल्वफ ३ सननाङ्गव ३ गुण जुल्लाब है मीठा है । नेत्रोंको गुण करे है २ कफको ३ पित्तको ४ रक्तपित्तको ५ लोहूको ६ सूजनको ७ अतीसारको ८ दूरकरे है । कसैला है और फूल उसका मीठा है काबिज़ है तेज है कफको पित्तको दूरकरे है ॥ अथ बिधारा नाम ॥ वृद्धदारु १ महाश्यामा २ जांगली ३ दीर्घमूलक ४ अन्त्रकोटरपुष्पा ५ अबेगी ६ छागलांगी ७ ॥ गुण ॥ कसैला है गर्म है तेज है । रसायन है । कुवतकरे है । बायको २ आमवातको ३ लोहूको दूरकरे है ॥ और सोजनको ५ प्रमेहकूं और कफको इतने रोगोंको जीते ॥ अथ देवदाली नाम ॥ देवदाली १ वनकोशा २ देवताड ३ गरागरी ४ जीमूत ५ तारकी ६ वेणी ७ जालनी ८ आखुबिषापहा ९ गुण ॥ तेजको कफको १ बवासीरको २ सूजनको ३ पांडुरोगको ४ खर्ईको ५ हुचकीको ६ कृमको ७ ज्वरको ८ दूरकरे है । और छर्दिको लावे है ॥ हंसपादीनाम ॥ हंसपादी १ हंसपदी २ रक्तपादी ३ त्रिपादिका ४ प्रल्हादनी कीटसारी ६ कीटनारी ७ मधुस्रवा ८ ॥ गुण ॥ भारी है १ ठंडी है । लोहूको १ बिषको २ फोड़ोंको ४ । बिसर्पको ५ दाहकूं

अतीसारको ६ लूनको ७ दूरकरती है और ज़खमको
भरलावेहै॥ **सोमबल्लीनाम**॥ सोमवल्ली। जन्तम
ता २ सोमत्तीरी ३ द्विजप्रिया ४ **गुण** नीनोदोषोंकोदूर
करेहै। कड़वीहै। तेजहै। और रसायनीहै॥ **नाकुली
नाम**॥ नाकुली १ सुवहा २ सर्पनेत्रा ३ वारित्तपत्रिका ४
**गुण**॥ कसैलीहै। तेजहै। कड़वीहै। गरमहै बिषको।
लूतको दूरकरेहै॥ **बटपत्रीनाम**॥ बटपात्री १ मोहनी
दीपनी ३ रेचनी ४ **गुण**॥ कसैलीहै। गर्महै स्त्रियोंकीभ
गकेरोगोंकोदूरकरेहै। और उसका फलबंधेजकोहरें॥
बायकोपैदाकरेहै। कफकोपित्तकोदूर करतीहै २॥
**अथलजालूनाम**॥ लजालू १ मेदनी २ स्पृका ३ रिरी ४
गंधिकारिणी ५ नमस्कारी ६ ससापत्री ७ समंगी ८ रक्तपा
दिका ९॥ **गुण**॥ ठंडीहै तेजहै। कसैलीहै। कफको॥ १
पित्तको २ रक्तपित्त ३ अतीसारको दूरकरताहै। औरभग
केसंपूर्णरोगोंको दूर करताहै इतिगुणाः॥ **अथमूस
लँ लीनाम**॥ मुशली १ रववैनी २ तालपत्री ३ कांचनपुष्पि
का ४ महावृक्षा ५ वनकंदा ६ खर्जूरी ७ नालमूलिका ८॥
**गुण**॥ मीठीहै। गर्महै। भारीहै। तेजहै। रसायनीहै पुष्टाई
करतीहै। मोटाकरतीहै। गुदाकेरोगोंकोबायकोदूरकर
तीहै॥ **अथकोंचबीजनाम**॥ कपिकछु १ स्वर्ण
गुप्ता २ कंडूला ३ गुरुबिग्रहा ४ चंडागुप्ता ५ लांगूली ६ मर्कटी ७

जहार्षभी ८ ॥ गुण ॥ बहुतपुष्ट है। मीठाहै। २ कुष्ट नकरैहै। ३ भारीहै ४ वीर्यको पैदा करतीहै। बलकोपै दाकरैहै। और वाजीकरण बहुतहैं कौंच बीजके गुण हैं

**जीवापोतनाम॥** पुत्रजीवा १ गर्भकर २ पुत्रि ३ पु ष्पार्थसाधन ४ ॥ गुण ॥ भारीहै। पुष्टहै गर्भकेरनेवा लीहै। २ कफकी ३ वायको ४ पैदा करैहै॥

**काकोडी बांझककोडनाम॥** वंध्याकर्कोटकी १ देवी २ कु मारी ३ बिषनाशनी ४ मनोज्ञा ५ नागरमनी ६ वंध्या ७ योगे श्वरी ८ गुण ॥ हलकीहै। कफकी फोड़की सांपके वि षकी ३ विसर्पकी ४ जहरकोदूरकरतीहै। तेजहै ✶ ✶ ॥

**विष्णुकांतानाम॥** विष्णुकांता १ नीलपुष्पी २ ज या ३ पराजिता ४ गुण ॥ कड़वीहै। बुद्धिबढावैहै। १ कामकी २ फोड़की ३ कफकी ४ दूरकरैहै॥

**शंखाहूलीनाम॥** शंखाहूली १ शंखपुष्पी २ शंखनामी ३ किराटी ४ कंचुमालिनी ५ कंडुपुष्पी ६ स्वतीहिता ७ मध्या बनविलासनी ॥ ९ ॥ गुण ॥ बुद्धिकोबढावैहै १ रसायनी है। कसैलीहै २ गर्महै ४ औरस्मृतिको बढावैहै ५ और प्र मेहकोदूरकरतीहै ६ शंखाहूलीमें येगुणहैं ॥ ✶ ॥

**अथवृधीनाम॥** दुग्धिका १ मधुपर्णी २ क्षीरणी ३ स्वादुपुष्पिका ४ ॥ गुण ॥ गरमहै। भारीहै। रूखीहै ॥ बायकोपैदाकरैहै कवज़ करतीहै मीठीहै। गर्भकरनेवा

लीहै। पुष्टहै २ कफको ३ कुष्ठको ४ किरमको ५ इतनी बीमारियोंको दूर करती है इतने गुण हैं ॥

**अथ होली नाम** ॥ अर्कपुष्पी १ क्रूरकर्मा २ जलकामा ३ आतिरड़का ४ गुण ॥ कमको १ कफको २ प्रमेहको ३ पित्तके विकारको जीते है ॥ **भिलावा नाम** ॥ भल्लात १ कनल २ भल्ली ३ वीरवृक्ष ४ अग्निवक्त्रक ५ स्फुटके ६ आरुष्क ७ तपन ८ अग्निमुखी ९ धनु १० ॥ **गुण** ॥ कसैला है गर्म है २ मीठा है ३ हलका है ४ वीर्यको पैदा करे है ५ वायको ६ कफको ७ उदररोगको ८ अफरेको ९ कुष्ठको १० ववासीरको ११ संग्रहणीको १२ गोलेको १३ ज्वरको १४ मंदाग्निको १५ कमकोफोड़ेको १६ इतने रोगोंको दूर करे है ॥ **चिरपोटा नाम** ॥ चिरपोटा १ दीर्घपत्रा २ कुतली ३ निक्का ४। ये चार नाम हैं ॥ **गुण** ॥ ठंडी है। रूखी है। भेदना है। स्मेको। और खांसीको खोवे ॥ **अथ गोमा नाम** ॥ द्रोणपुष्पी १ श्वसनक २ पालिंदी ३ कुंभयोनिका ४ छत्री ५ अनिच्छिन्नका ६ द्रोणी ७ वसारक ८ **गुण** ॥ भारी है रूखा है मीठी है। गरम है भेदना है। वायको पित्तको पैदा करे है। कमलवायको सोजनको ९ कफको १० किरमको ११ यह ग्यारा रोगोंको दूर करती है ये गुण हैं

**ब्रह्मी ब्रह्मडंडी नाम** ॥ ब्राह्मी १ सरस्वती २

सोमा ३ सत्याह्वा ४ ब्रह्मचारिणी ५ मंडूकपर्णी ६ मंडूकी ७ त्वीषी दिव्या ८ अधिकपोलवंका ९ मनिका १० लावण्या ११ सोमवल्लरी १२ गुण ॥ ठंडी है। सर है। मीठी है। हलकी है। बुद्धिको बढावे है। रसायनी है २ स्मानिको बढावे है। कुष्ठको ३ पांडुरोगको ४ प्रमेहको ६ ज्वरको ७ इतनोंको दूर करे है और इतनेही गुण मंडूकपर्णी में हैं मंडूकी ब्राह्मी समान है। **सौंचलीब्रह्मसौंचलीनाम** ॥ सुवर्चली १ अर्ककांता २ सूर्यभक्ता ३ सुरस्नुहा ४ सूर्यावर्ता ५ रविप्रीता ६ ब्रह्मसुवर्चला ७ **गुण** ॥ भारी है ठंडी है। मूत्रबहुत लावे है। कफको बायको कुष्ठकूं प्रमेहको ४ पथरीको ५ सोज़ाकको ६ ज्वरको ७ इतने रोगोंको खोवे है॥ **मत्स्याक्षीनाम** ॥ मत्स्याक्षी १ बाह्लिका २ मत्स्यगंधी ३ मत्स्यादनी ४ **गुण** ॥ काबिज़ है। ठंडी है। कुष्ठको ३ पित्तको ४ कफको ५ लोहूको ६ हरे है॥

**जलपिप्पलकानाम** ॥ तोयपिप्पली १ अंबुवल्ली २ तूरकं ३ बड़ी ४ **गुण** ॥ दिलको १ कुव्वत दे है २ आंखोंको गुण करे है। बायको बढावे हैं॥ हलका है ४ काबिज है ५ ठंडा है रूखा है लोहूको ६ दाहको ७ फोड़ेको हरे है ४ काबिज है॥ **गोभीनाम** ॥ गोभी १ गोजिह्वा २ गोजिका ३ दर्विका ४ खरपर्णिनी ५ **गुण** ॥ बायको पैदा करे है। ठंडी है। काबिज़ है। कफपित्तको दूर करे है दिलको कुव्वत दे है॥

प्रमेहको १ बायको २ लोहूको ३ और ज्वरको दूर
करतीहै। और फलकी हैं इतिगोभीनामगुणं ॥
**नागदौननाम**॥ नागाह्वा १ नागदमनी २ गंधा ३ भु
जंगपर्णिनी ४॥ गुण॥ रंगको अच्छा करेहै। लूतको
और सांपके जहरको दूरकरेहै॥ **चिरमिटीके
नाम**॥ गुंजा १ सिखंडिका २ ताम्रा ३ रक्तिका ४ का
कनंतिका ५ खेनान्या ६ चित्रकी ७ चूडा ८ दुर्मुखा ९
काकपीलुका १०॥ **गुण**॥ बालोंकोबढ़ावेहै १ कु
घ्नकरेहै। २ भोजनकीरुचि उपजावेहै ३ पित्तको ४
कफको ५ नेत्ररोगको ६ खुजलीको ७ फोड़ोंको ८ क्र
मको ९ बालोंकेगड़जानेको १० कुष्ठको ११ इतनेरोगों
कोखोवेहै। पुष्टहै। सुपेदचिर्मठीकेगुणभी इसी
केतुल्यहैं॥ इतिगुणः॥ **बरबेलिनाम**॥ वेल्ल
तर १ दीर्घपत्र २ वीरद्रुम ३ वज्रदारक ४ **गुण**॥ पथरी
को १ कफको २ खांसको ३ वायकेदर्दको ४ दूरकरेहै
कब्ज़करेहै॥ **बंदाकनाम**॥ **वंदाक** १ वृक्षरु
हा २ गोशेर ३ कामवल्लक ४ वन्दारनी ५ कामतरु ६ का
मिन्सा ७ प्ररोहणी ८॥ **गुण**॥ रूखीहै कफको १
बायको २ लोहूको ३ फोड़ेको ४ बिषकोदूरकरता है
**पिंडारनाम**॥ पिंडार १ करहाट २ नीलणकील ३ कु
रंगक ४॥ **गुण**॥ मीठीहै ठंडीहै २ सोजनको ३ पित्त

को३ औरकफको५ स्तनोंकोहरैहै॥ **नकछीकनीनाम**॥ छिक्किका१ क्षवक२ क्षुत्३ नासासंभेद४ पटु५॥ **गुण**॥ पित्तकोपैदाकरैहै१ कृमको२ क्रमको३ वायको४ कफकोप५ हरतीहै॥ **रोहेडनाम** रोहीत१ दाडमीपुष्पी२ रोहित३ कूटशाल्मली४ प्लीहीर५ रोहिणी६ रोहत७ रक्तपुष्प८ प्यारीजातक९॥ **गुण**। सरहै। गोलेको१ कलेजेकीतिल्लीकीसूजनको२ उदरकेरोगको३ दूरकरताहै॥ **मोचरसनाम**॥ मोचक१ मोचरस२ शाल्मली३ वेष्टकेसो४ वनिर्या५ संकापिच्छ६ मोचस्रावी७ विवेष्टक८॥ **गुण**॥ ठंढाहै कावेजहै। भारीहै अतीसारको१ मरोड़ेको२ आंवको३ पित्तको४ लोहूको५ औरलोहूको६ औरदाहको७ स्तनरोगोंको दूरकरताहै॥ **बबरीनाम**॥ अजगंधा१ वास्तिगंधा२ कनरी३ पतिचर्मिका४ **गुण**॥ रूखीहै। खानेकी रुचिउपजावैहै।२ शूलकोकुचलतकरैहै।४। लोहूको५ औरकफको६ औरवायकोदूरकरतीहै॥ **पियाबासानाम**॥ सैरेयक१ सहचर२ सौरेय३ किंकरात४ कंघासी५ सहचर६ झिंटी सैर्यक७ मदुकारक८ नीलार्त९ गलंबाण१० उदलपाक्य११ रक्तपुष्प१२ कुरवक१३ पीतं१४ कुरंटक१५॥ **गुण**॥ कुष्ठको१ वायको२ लोहूको३ कफको४ खुजलीको५ विषको६ दूरकरैहै॥

तेज़है। गर्मकै। मीठाहै। बाल्योंकोबधावैहै चिकनाहै

हरमलनाम॥ श्वेतस्पंदा १ श्वेतपुष्पी २ कटभी ३ गिरिकर्णिका ४ चिता ५ पराजिता ६ श्वेता ७ विषघ्नी ८ मेहनाशिनी ९ नीलस्पंदा १० व्यक्तगंधा ११ नीलपुष्पी १२ गवादिनी १३॥ गुण॥ श्वेतस्पंदादोनोंठंडीहैं श्रीर ग्रहोंकीदुष्टताकोदूरकरेहैं। गलेकोश्रच्छाकरैहै क्र मको १ शूलको २ त्रिदोषको ३ सोजनको ४ फोड़ेको ५ विषको ६ दूरकरेहै॥ तालमखानाम॥ इक्षुर १ श्रुत्तुरक २ धांड ३ कोकिलाक्ष ४ क्षुर ५ नेलकं ६ घनिक्षु रिक्षु ७ वालिका ८ इक्षुगंधिक ९॥ गुण॥ ठंडीहै पुष्ट है। भारीहै। वायकोरोगको १ श्रौरलोहूकोदूरकरताहै इतनेगुणहैं॥ कपासनाम॥ कर्पास १ श्रच्छद २। स्थूल ३ छादन ४ बादर ५ पिचु ६॥ गुण॥ हलकाहै। गर्महै। वायकोदूरकरेहै। उसकेबीजदूधकोपैदाकरैहैं पुष्टहै चिकनीहै कफकोपैदाकरैहै श्रौरभारीहै इतने गुणहैं॥ श्रारामसीतलानाम॥ श्रारामशीत ला १ देवगंधा २ कंकुरमर्दक ३॥ गुण॥ ठंडीहै कड़वीहै। पित्तको श्रौरकफको श्रौरलोहूकोदूरकरैहै

करोंदानाम कक्षुर १ नागक्षु २ रक्तमपत्र ३ मक्षुछ द ४॥ गुण॥ कड़वीहै तेज़है। ज्वरको १ लोहूको २ श्रौरकफ़कोदूरकरताहै। श्रथवाभीनाम॥

बामी १ शंखधर २ बारिब्राह्मी ३ हिसमाचिका ४ ॥ गुण ॥ सूजनको १ कुष्ठको २ पित्तको ३ कफको इनसबरोगोंकोहरेहै ॥ **बलामोरीनाम** ॥ बलामोरी जया सूक्ष्मपत्री ३ पराजिता ४ **गुण** ॥ बायको १ कफको २ सोजाककी ३ दूरकरेहै और बिजयकोदेवेहै ॥ **शरपुंखनाम** ॥ शरपुंखा १ कालशाकं २ प्लीहारि ३ कलिका ४ ॥ **गुण** ॥ कलेजा १ तिल्ली २ नासूर ३ जहर ४ खांसी ५ । दम्मा ६ ज्वर ७ इतनोंकोदूरकरतीहै । तेजहै । कसैलीहै । हलकीहै । इतनेगुणहैं ॥ **मोरशिखानाम** मयूरशिखा १ साहस्त्री २ मधुकच्छपा ३ ॥ **गुण** ॥ हलकीहै पित्तको कफको अतिसारको तापतिल्ली गोले को बवासीरको कलेजेकीसूजनको उदररोगको ८ कमको ९ इतनेरोगोंकोदूरकरतीहै ॥ **लक्ष्मणानाम** ॥ २ लक्ष्मणा १ पुत्रदा २ रक्तबिंदु ३ पुत्रा ४ मागिनी ५ ॥ **गुण** गर्भकीदेनेवालीहै १ ठंडीहै २ पुष्टहै ३ त्रिदोषको ४ दूरकरेहै इतनेगुणहैं ॥ **हडसिंहारीनाम** ॥ अस्थिसंहार १ कांडज्जुं २ बल्लरीकांडं ३ घांटेका ४ बज्रांगी ५ ग्रंथिमान् ६ अस्थिशृंखला ७ **गुण** ठंडीहै पुष्टहै २ बायको दूरकरेहै । हाडोंकोबढावेहै ४ इसप्रकारकेइसमेंगुणहैं **मांसरोहिणीनाम** ॥ मांसरोहिणी १ अतिरुहा २ वृत्ता ३ चर्मक ४ बिकसा ५ ॥ **गुण** ॥ पुष्टहै । १ सरहै २

औरतोनों दोषोंको यह औषधी दूर करती है॥
दोनों आकके नाम॥ अर्क १ सूर्याह्वय २ क्षीरी
सदापुष्प ४ विकीरण ५ मंदार ६ वसुक ७ अलर्क ८ रा
जार्ह ९ दीर्घपुष्पक १० गुण॥ दोनों आक बायको
दूर करते हैं १ नापतिल्ली २ गोला ३ बवासीर ४ कलेज
की सूजन ५ कफ ६ उदररोग ७ कृम ८ इतने रोग आक
से जाते हैं॥ कनेर नाम॥ करवीर १ श्वेतपुष्प २ प्र
स्वहा ३ स्थलकुंभक ४ रक्तपुष्पं ५ परः चंडं ६ करवीर
क ७॥ गुण॥ कनेर दोनों आंखको सोजनको और
कुष्ठको २ फोड़को ३ कृमको ४ खुजलीको ५ दूर करैहै
गर्म है। जहर खाये हुए को पचाये वा से असर करै है इतने
गुण हैं॥ धतूरा नाम॥ धत्तूर १ कितव २ धूर्त ३ देवता
मत्त ४ शठ उन्मत्त ५ मातुलं ६ तूरी ७ तरलं ८ कनकाह्वयः
गुण॥ नशा करैहै। रंगको अच्छा करैहै २ अग्निको बढ़ा
वेहै ३ छर्दिको लावैहै। ४ ज्वरको ५ कुष्ठको ६ फोड़ेको ७ खु
जलीको ८ कृमको ९ विषको हरैहै गर्म है भारी है॥२॥
कलिहारी नाम॥ कलिकारी १ वन्हिमुखी २ लांगली
पातनी ३ विशल्या ४ हलनाबीरा ५ प्रमदी ६ मुक्तपुष्पिका
विद्युद्युक्त ८ अग्निजिह्वा ९ पुष्पसंबरी १० वन्हिशिखा ११
अग्निका १२ नलपुरषिका १३ गुण॥ सरहै कुष्ठ १ सोज
न २ बवासीर ३ सूल ४ फोड़ ५ कृम ६ इतनोंको हरैहै तेजहै

गर्भहै हलकीहै। पित्तकोपैदाकरेहै। गर्भको गिरावैहै

घीकुवार नाम॥ कुमारी १ मंडला २ माता ३ गृहकन्या ४ अतिपिछला ५ रसायनी ६ कंटकिनी ७ शवरी ८ वनोद्भवा ९ गुण॥ भेदनीहै। ठंडीहै। कलेजेकी तिल्लीकोसोजनको १ कफको २ अग्निके फफोलोंको ३ लोहूको ४ औरत्वचाकेरोगोंको दूरकरेहै। इतनेरोगोंको हरेहै॥ भंगानाम॥ भंगा १ गंजा २ मातुलानी ३ मोहनी ४ विजया ५ जया ६ गुण॥ तेजहै। काबिज़है॥ हलकीहै। तीक्ष्णहै। गर्महै। कफकोदूरकरेहै अग्निकोदीपनकरेहै। २ पित्तकोपैदाकरेहै ३ मोहकोमदको औरबानीकोबढावेहै। ५ भंगामेंयहगुणयहतासीरहै

कांचनीनाम॥ कांचनी १ शोणफलिनी २ काकायुकाकवल्लिरी ३॥ गुण॥ दूधकोबढावेहै। सिरकेरोगोंको २ औरतीनोंदोषोंको दूरकरेहै॥ दूबनाम॥ दूर्वा १ शिष्प २ शीतकारी ३ गोलोभी ४ शतपर्विका ५ श्वेता ६ श्वेतदंडी ७ भार्गवी ८ दुर्मती ९ रुहा १० गुण॥ ठंडीहैविषर्प लोहूको ३ पित्तको ४ कफको ५ दाहको ६ इतनेरोगोंकोखोतीहै॥ गंडदूबनाम॥ गंडदूर्वी १ मत्स्यगंधा २ मत्स्याची ३ सकुलादनी ४॥ गुण॥ ठंडीहै। लोहूग्राविणीहै। काबिज़है। हलकीहै। दाहकोप्यासको २ लोहूको ३ पित्तको ४ औरदर्दको ५ इनकोखोवेहै॥

मूंजनाम ॥ मूंज १ मुर २ स्थूलदर्भ ३ बाणाह्व ४ ब्रह्ममेखल ५ ॥ गुण ॥ ठंढीहै बिसर्पको १ लोहूको २ मूत्राशयको ३ नत्र रोगको दूर करैहै ॥ नडनाम ॥ नल १ रंध्री २ पुष्पमन्त्र ३ धमन ४ नेत्रक ५ पिट ६ गुण ॥ मूत्रनोर्द्द से आता होय उसको १ दाहको २ लोहूको ३ पित्तको ४ और कफको ५ और बिसर्पको दूर करैहै इतने गुण करैहै ॥

बांसनाम ॥ वंश १ वेणु २ काचक ३ कर्मार ४ त्वची ५ सारक ६ गुण ॥ सरहै ठंढाहै । २ पित्तको ३ कफको ४ दाहको ५ लोहूको ६ सूजनको दूर करैहै । और उसको करीर भारीहै भेदीहै कफको पैदा करैहै । बायको पित्तको दूर करैहै और बांसकी जड़ भेदकहै बहुत गर्महै कफको दूर करैहै ॥ बाय पित्तको पैदा करैहै ॥ खुरासानी अजवायन नाम ॥ जवानी १ जावनी २ तीव्रा ३ रूक्षा ४ मदकारिणी गुण ॥ पाचनीहै । रूखीहै ३ काविज़है ४ भारीहै ४ ॥ अथपोस्तनाम ॥ तिलभेद १ खानिलं २ शुभ्रपुष्पल ३ सत्फलं ४ ॥ गुण ॥ पुष्टहै बलकरैहै २ कफको पैदा करैहै । बायको जीतेहै ४ उसके फलका बकला रूखाहै । और सोषनहै । येगुणहैं ॥ अफीमनाम ॥ आफूक १ नहसोद्भूत २ अहिफैन ३ मफेनिक ४ गुण ॥ सुखावनेवालीहै । काविज़है । कफको दूर करैहै । बायको और पित्तको पैदा करतीहै । अफीममें इतने गुणहैं ॥ * ॥

छिलिहिंडनाम ॥ छिलिहिंट १ महामूल २ पाताल ३ गरुडाहृय ४ गुण ॥ बहुत पुष्ट है और कफको पैदा करे है। बायको दूर नी है ॥ इतने गुण हैं ॥ ५ ॥

इति श्री मदनपाल बिरचिते मदन बिनोद नि घंटे अभयादिबर्गः प्रथमः १ अथ सूंठ नाम ॥ सुंठी १ बिश्वौषधी २ बिश्व ३ कटुभद्र ४ कटूत्कट ५ महौषध ६ शृंगबेर ७ नागर ८ बिश्वभेषज ९ गुण भोजनमें रुचि उपजावे है १ आमबातको २ कफको ३ बायको ४ कबज़को ५ पुष्ट है ६ छर्दिको ७ दमेको ८ खांसीको शूलको ९ हृदयरोगको ११ पीलपेको १२ सूजनको १३ बवासीरको अफारेको १५ उदररोगको १६ बायको १७ इन रोगोंको दूर करे है। पाचनी है कडुवी है। हलकी है। और चिकनी है। गरम है। पचनेके समें कडुवास्वाद है ५ ॥

अथ अदरकनाम ॥ आर्द्रक १ शृंगबेर २ तत्कंद ३ औषद ४ ॥ गुण ॥ सोंठहोंकी तुल्य इसके भी गुण हैं भेदन है दीपन है २ भारी है ३ ॥ मिरचनाम ॥ मरिच १ वल्लिज २ तीक्ष्ण ३ मलिन ४ श्यामभूषणं ५ गुण कडुवी है जेजन है दीपन है २ कफको ४ बायको ५ दूर करे है गरम है ६ पित्तको पैदा करे है। रूखी है। दमेको १ शूलको २ कृमिको ३ और कच्चीमिरच पकनेके समें मीठी है। और बहुत गर्म नहीं है। कडुवी है भारी है। और कुछेक कम है। कफको प्रमेहको

दूर करतीहै। और पित्तको पैदा करे है ॥ पीपलना-
पिप्पली १ चपला २ साला ३ मागधी ४ मगधो ५ कणा ६
उष्णोपकुल्या ७ वैदेही ८ शौंडी ९ तीक्ष्णतन्दुला गुण
दीपनीहै पचनेके समें मीठीहै। ठंडीहै कड़वीहै। चिकनीहै
हलकीहै। पित्तको पैदा करेहै। दस्त लावेहै। कफको १
बायको २ दम्मेको ३ खांसीको ४ उदररोगको ५ ज्वरको
कुष्टको ७ प्रमेहको ८ गोलेको ९ बवासीरको १० नाप-
तिल्लीको ११ शूलको १२ आंवको १३ इतने रोगोंको खोवे
है। और हरी पीपल कफको पैदा करेहै ठंडीहै। और मीठी
है। और भारीहै ॥ ऊषणचतुरूषणनाम ॥ सोंठ
मिरच २ पीपल ३ ये तीनोंमिलके ऊषण कहावेहैं और क
टुक और कटुत्रय भी कहते हैं और चौथा पीपला मूलभी
पड़े तो चतुरूषण कहावेहै गुण ॥ ऊषण दीपनहै द
मेको १ खांसीको २ त्वचाके रोगोंको ३ प्रमेहको ४ और
कफको ५ गठियाको ६ चर्बीके बढनेको और पालियाको
८ और पीनसको इतने रोगोंको दूर करे है ॥ पीपला
मूलनाम ॥ कणामूल १ कटुग्रंथी २ पिप्पलीमूल ३ ऊ
षण ४ षट्ग्रंथि ५ ग्रंथिक ६ मूलमाधकं ७ बटिकाशिर ८
गुण ॥ दीपनीहै १ कड़वीहै २ गर्महै ३ पाचनहै ४ रूखीहै
पित्तको पैदा करेहै। भेदीहै ६ कफको ७ बायको ८ उदररो
गको हरेहै ॥ चाबनाम ॥ चव्य १ चव्यन २ चविका ३ को

लवल्लिका गुण इसकेगुणभी पीपलामूलकी तुल्य हैं। परंतु बिशेषकरकेगुदाके रोगोंको दूर करती है इतने गुणहैं ॥ गजपीपलनाम ॥ तत्फल १ श्रेयसी २ हस्तिमागधी ३ गजपिप्पली ४ गजकृष्मा ५ गुण कड़वा है गर्म है। बायको १ कफको २ अतीसारको ३ श्रमको ४ खांसीको ५ गलेके रोगोंको ६ क्रमको ७ इतने रोगोंको खोवे अग्निको बढावे है ॥ चीतानाम ॥ चित्रक १ दहनभुग २ व्याल ३ दारुण ४ हुतोद्भव ५ अग्निपाठी ६ हविपाली ७ वन्हिनामा ८ गुण ॥ पचनेकेसमै कड़वा है। हलका है। रूषा है। गरम है काबिज़ है पाचन है अग्निको पैदाकरे है संग्रहणीको १ कुष्ठको २ सूजनको ३ बवासीरको ४ क्रमको ५ खांसीको ६ कफको ७ बायको ८ इतने रोगोंको हरे और इसकासाग कफको हरे है और पित्तको जीते है। इतने गुणहैं पंचकोलषडूषणनाम ॥ पीपल १ पीपलामूल २ चाव ३ सोंठ ४ चीता ५ इन पांचोंको मिलायके पंचकोल कहते हैं। गुण कफको १ अफारेको २ गोलेको ३ अरुचिकूं इनसबको दूरकरे है और जो इनमें काली मिरच भी पड़े तो षडूषण कहावे है ॥ सौंफ बड़ी सौंफनाम ॥ शतपुष्पा १ शिता २ घोषा ३ दाना ४ छीक्कटां ५ विमिस ६ अवाक्पुष्पी ७ अतिछत्रा ८ सेतिका ९ माणधा १० परा ११ गुण। हलकी है। तेज है। पित्तको पैदाकरे है। दीपनी है। गरम है ॥

कड़वीहै।३। ज्वरको १ बायको २ कफको ३ फोड़ेको ४ शूलको ५ सिरकेरोगोंकोदूरकरेहै। और सुपेदसोंफके गुणभीइसकेहीतुल्यहैं। और बिशेषकरके भगकेरोगों कोदूरकरतीहै। सपेदसौंफमेंयेअधिकत्ता है॥ ×॥

**सोयानाम**॥ मिश्रेया १ मिशि २ शालीना ३ शालीशाता ४ शिवा। ५ गुण दीपनीहै। गर्महै। दिलकोकुवतकरेहै बिषाकेबदहोनेको १ श्रमको २ कुष्ठको ३ दूरकरैहै रूखा है। उसका फल षांसीको छर्दको २ कफको ३ बायको ४ जीतेहै॥ **मेथीबनमेथीनाम**॥ मेथिका १ बासंति का २ पिलु ३ रोहिण्य ४ बनमेथिका ५ गुण॥ दीपनीहै दिलकोकुवतदेहै। १ विषाकेक्रमको दूरकरतीहै ३ शूल को ४ वीर्यको ५ गोलेको ६ बायशूलको दूरकरतीहै॥ कफकेदूरकरनेमेंबड़ाअसर रखतीहै॥ **अजमोद नाम**॥ अजमोदा १ अत्युग्रगंधा २ मोदाहस्तिमयूरक ३ खराह्वा ४ कारवी ५ बल्लीबस्तिमोदो ६ कर्कट ७ गुण कड़वाहै। तेजहै। दीपनहै। कफको बायको। दूरकरेहै। गर्महै। बिदाहनीहै। दिलकोकुवतकरेहै। पुष्टहै मलको बांधेहै। हलकीहै। नेत्रकेरोगोंको। कृमिको। छर्दको। मूत्राशयकेरोगोंकोदूरकरेहै। अजमोदमें इतने गुणहैं

**सफैदजीरास्याहजीराकलौंजीनाम**॥ जीरकं १ दीर्घकं २ सुत्कं ३ अजाजीकणाजीरक ४ जरण ५ रूक्ष ६

बर्षाकाली ७ सुगंधिक ८ कालिका ९ वाष्पिका १० कुंची कारवी १२ उपकुंचिका १३ पृथ्वीका १४ सूक्ष्मवा १५ पृथ्वी स्थूला १६ जाजा १७ उपकालिका १८ गुण॥ तीनोंजीरे रूखेहैं। कड़वेहैं। गर्महैं। दीपनहैं। हलकेहैं। काबिज़हैं॥ पित्तकोपैदाकरेहैं। बुद्धिकोबढावेहैं। बचेदानीकोशुद्ध करेहैं। नेत्रोंकोगुणकरेहैं। बायको अफारेको गोलेको छर्दको। मुंहसे पानीबहनेको हरेहैं॥ अजवायननाम जवानी १ दीपक २ दीप्य ३ दीपनीया ४ जवानिका ५ जवासी ६ उग्रगंधा ७ जवाद्य ८ भूकदेवाक ९ गुण॥ पाचनी है। भोजनमेंरुचिउपजावेहै। तेज़है। गर्महै। कड़वीहै। हलकीहै। बायको १ कफको २ उदररोगको ३ अफारेको ४ गोलेको ५ मूलको ६ कृमिको ७ जीतेहै॥ किरमालानाम जवानीया १ जवानी २ छोहरजन्तुनाशनं ३ गुण इसके भीगुणअजवायनकोतुल्यहैं। विशेषकरिकृमिकोहरें बबरीनाम॥ अजगंधा १ पूतिकोटि २ बर्बरी ३ पूतिबर्बर ४ कारवी ५ खरपुष्पा ५ तुंगी ६ पूतिमयूरका ८॥ गुण कड़वीहै। तेजहै। रूखीहै। दिलकोकुव्वतकरेहै। अग्निको दीप्तकरेहै। दिलकोमंदकरेहै। वीर्यको। बायको। कफको दूरकरनीहै॥ इतनेइसमेंगुणहैं॥ बचनाम॥ बच १ उग्रगंधा २ गोलोमा ३ षड्ग्रंथा ४ जटला ५ तपर्वा ६ लोमसा ७ हेमवती ८॥ गुण॥ गर्महै। तेजहै। कड़वीहै। छर्दलावेहै॥

कंठकीआवाजसाफ़करेहै। अग्निकोदीप्तकरेहै
और मगीको कफको उन्मादको मूलकी छायाको।
मूलकोजीतेहै। आकुबेरनाम॥ हलुया१ बिबु
या२ बिम्बा। बिगंधा३ बिम्बगंधिका४ स्वेतफला५
ध्वांक्षीनासिनी६ मत्स्यगंधिका७ गुण। दीपनीहै
तेजहै। कड़वीहै। गर्महै। कसैलीहै। भारीहै पित्तको
उदररोगको। बायको। बवासीरको। संग्रहणीको।
गोलाको। मूलकोहरेहै। बिडंगनाम॥ बिडंग
जंतुहनन२ कृमिघ्न३ खुडतंदुला४ मूलंदुला५ घोमा६
कराल७ मृगगामिनी८ गुण कड़वीहै तेजहै गर्महै
रूखीहै। अग्निकोपैदाकरेहै। हलकीहै मूलको। अ
फारेको। उदररोगको। कृमको। बायबंदहोनेकोहरेहै
धनियांनाम॥ धानक१ धान्यक२ धान्यं३ धनियां४
बितुन५ कटुस्क६ छत्र७ दंतुधानी८ धनेय९ कालिका
१०॥ गुण॥ कसैलीहै१ चिकनाहै पुष्टकरीहै। मूत्र
कोबहुतलावेहै। पित्तकोकुछनकरेहै। भोजनपैरुचि
उपजावेहै। बिषाकोबंदकरेहै। पाचनहै। दमेको घांसी
कोलहूको प्यासको बवासीरको कृमिको दूरकरेहै
हरेधनियेकेगुणभीइसोकेतुल्यहैंविशेषपित्तकोहरे
हिंगुपत्रानाम॥ हिंगुपत्री१ पृथुसत्वी२ पृथीका
वारुपत्रिका४ बाष्पिका५ कारवी६ पत्रीविल्वका७

जंतुका ८ रामठी ९ नाडी १० हिंगुफला ११ ॥ गुण ॥
हिंगुपत्री दोनों दिलके और मूत्राशयके रोगको कबज़
को बवासीरको। कफको गोले बायको हरेहै ॥
हिंगुनाम ॥ हिंगु। बाल्हीक। अत्युग्र। रामठ। भूत
नाशन। अगूढगंध ६ जंतुक ७ शूलनाशन ८ गुण ॥
गरमहै। पाचनहै। भोजनपै रुचि उपजावेहै तेजहै। क
फको बायको शूलको ३ गोलेको ४ उदरकेरोगको ५
और अफारेको ६ और किरमको ७ इतनेरोगोंको दूर क
रेहै। पित्तको बढावे है। बंसलोचननाम ॥ वं
शजा १ वेणुजा २ तीरी ३ त्वक्क्षीरी ४ वंशरोचन ५ तुगाक्षी
री ६ तुगाबंशी ७ वंशक्षीरी ८ शुभ्रांसिता ९ गुण। बलको
बढावेहै। पुष्टहै ठंडीहै। मीठीहै। प्यासको खईको खोता
है। ज्वरकोदमेको। खांसीको पित्तको। लोहूको खोताहै
और कवलबायको दूरकरता है॥ सैंधवनाम ॥
सैंधव १ सिंधुज २ शुद्ध ३ मणिमंथ ४ पटुत्तम ५ गुण।
मीठाहै दिलको कुव्वत करेहै। दीपनहै ठंडाहै। हलकाहै
आखोंको गुणकरेहै। पाचनीहै। चिकनीहै। और पुष्ट
ईकरताहै। और तीनों दोषोंको दूरकरता है॥ सौचर
नाम ॥ सौचर १ चलंसुगंधा २ रुचिक ३ रुचिगंधिक
गुण ॥ अगनिको बढावेहै १ कडवाहै। गरमहै निर्मलहै
हलकाहै। डकारशुद्धिलावेहै कबज़को अफारेको ॥

मूलको जाते है ॥ बिड़नामानि ॥ विड़ १ कृत्रिम २ पाक्यं ३ धूर्तदृप्त ४ बिडमासुर ५ गुण ॥ हलका है गर्म है काबिज़ है २ मूलको ४ हृद्रोगको ५ अरुचिको ६ अफारे को ७ कफको ८ दूर करता है ९ और बारीक स्थानमें जो बाय रुकरहीहोय तिसको निकासेहे ॥ सामुद्रलूणनाम ॥ सामुद्र १ वारिज २ अर्णमत्ती ३ वशिर ४ गुण ॥ दीपना है। मीठा है। बहुत गर्म नहीं है। भेदन है। कड़वा है। कफको पैदा करे है। बायको दूर करे है। न रहे रूषा नहीं है। पित्त को वी मारीको कुछएक पैदा करता है ॥ उद्भिद्लूणनाम उद्भिद १ भूमिज २ भौम ३ पार्थिव ४ पृथिवीभव ५ गुण ॥ लोहूको पैदा करे है। हलका है। और बायके रोगको करे है षारीनाम ॥ वीर १ पांशुभव २ स्वौष ३ ऊषरणा ४ याव ५ वसु ॥ गुण ॥ भारी है। कड़वा है। चिकना है। कफ को पैदा करे है। बायको हरे है ॥ काचलूणनाम ॥ काच १ त्रिकूटपाकोद्भव २ लवण ३ काचसंभव ४ गुण ॥ दीपन है। बहुत गरम है। लोहूको। और पित्तको बढ़ावे है। जवा षारसाजीनाम ॥ यवाषार १ सक्थपाक्य २ यवसूक यवाग्रज ४ सर्जिका ५ स्वर्जिका ६ पाक्या ७ सुवर्चिका ८ स्व बर्चि ९ ॥ गुण ॥ यवाषार अग्निको पैदा करे है बायको कफको २ दमेको ३ गलेके रोगोंको ४ आंवको ५ बवासीर को ६ संग्रहणीको ७ गोलेको ८ कलेजेकी सूजनको ९ ताप

तिल्लीको ९ जीतेहै। साजीमेंइससेथोड़े गुणहैं। विशेष करकेगोलेमूलकोहरेहैं॥ सुहागानाम॥ टंकण १ मालतीजात २ द्रावी ३ लोहविशुद्धद ४॥ गुण॥ अग्नि कोपैदाकरेहै। रूखाहै। कफकोदूरकरेहै। बायपित्तको करे॥ सज्जीखारनाम॥ सुधा १ अमलाह्वय २ सोधमुख्या ३ कडुशर्करा ४ सुधाक्षीर ५ अग्निसकाश ६ पाकी ७ क्षोटी ८ विलीरण ९॥ सबक्षारनाम॥ पलास पतिल नाल २ यंबूका ३ कदलीभवा ४ अपामार्ग ५ अर्कसेहुं ६ मोष्यकास्सिमुद्भवा ७ अथगुण॥ सारक्षार अग्नि कीसमानहै। पाचनहैं। तेजहै। हलकेहैं। गलावनेवाली है। गोह। पित्तकोपैदाकरेहै। काबिजहै। तीखाहै। बीर्यको। ओजको स्त्रियकोनाशकरेहै। अफारा। पीनस। कलेजे तिल्लीकीसूजन। मुंहमें पानीबहनेको आंवको गोलेको। बवासीरको संग्रहणीको। कमको दूरकरेहै॥

॥ इतिश्री आनंदपालबिरचितेनिघंटेसुवर्णादिबर्गोद्वितीयः २ अथकपूरनाम॥

कपूर १ स्फटिक २ चंद्रसिता ३ धात्रिमबालुका ४ हिमोपमं ५ शीतरज ५ मृलीक ६ हिमाह्वय ७॥ कपूरकेगुण॥ शीतलहै। सुष्टहै। नेत्रोंकोगुणकरेहैं। लेषनहै। हलकाहै। कफके मुंहकेदूरसवासको। दाहको। चरबीको सन मको दूरकरताहै। औरजहरको भी हरताहै इतने गुणहैं॥

कस्तूरीदोनोंकेनाम॥ कस्तूरिका। मृगमद। बेधमुख्या। मृगांडज। मृगनाभिरख्या। ग्रौरदूसरी। लता कस्तूरिकामद॥ गुण॥ वीर्यकोपैदाकरैहै। गरमहै जहरको। छर्दिको। दुर्गंधको। बायकोदूरकरैहै ग्रौर लताकस्तूरिकाकेभी गुणयेहीहैंनेत्रोंको गुणकरेहैं। जबादिनाम॥ मार्जारी। पूतिका। पूतीबच। गंधबेलका। गुण॥ छर्दिकोखोवेहै। ग्रांखोंकोहितहैकफको बायकोजीतेहै॥ चंदननाम॥ चंदन। तिलपर्णी महार्ह। श्वेतचंदन। भद्रश्रिय। मलयज। गोशीर्षसारक गुण॥ ठंडाहै। रूखाहै। तेजहै। खुशीकोउपजावैहै। हलकाहै दिलकोकुवतकरैहै। रंगकोग्रच्छाकरैहै। ज़हरको कफको प्यासको पित्तको लोहूको दाहको हरेहै। रक्तचंदननाम॥ रक्तचंदन। उदिव्यलोहित लक्ष्चंदन। ताम्रसार। रक्तसार। ज्योतिःसोमरजनः। गुण॥ ठंडाहै। भारीहै। मीठाहै। छर्दिको प्यासको। लोहूको। पित्तकोजीतेहै तेजहै। नेत्रोंकोगुणकरैहै॥ पुष्टहै ज्वरको। फोड़ेको। ग्रौर जहरकोदूरकरैहै॥ मलयचंदननाम॥ कालीयक। पीतसार। पीत नारायणप्रिय। गुण॥ इसकेभी गुणरक्तचंदनकी हीतुल्यहैंकमज्यादहनहींहै॥ काश्मकग्रगरनाम काश्मागरु। ग्रगरु। राजार्ह। विश्वरूपक। जांगल॥

शीतमल्लिका। कृमिजग्धा। अनाजक॥ गुण॥ गर्महै कान और नासिका और आखोंकेरोगको हरे। पित्तपै दाकरे। हलकाहै। केसरनाम॥ कुंकुम। चारुवाल्ही क। बर्णि। अग्निशिषावर। काश्मीर। पीतमस्त्राद्ध। सं कोच। पिशितोदन। गुण॥ कड़वीहै। सिरकेरोगोंको फोड़को कृमको दूरकरेहै। गरमहै और षांसी लावेहै। रंगको अच्छाकरेहै। ब्यंगको तीनो दोषोंको हरेहै॥ सिल्हाकानाम॥ सिल्हीक। कपिल। धूम्र। तुरूष्क। पिंडित। कपि। गुण॥ कुष्टको। खुजलीको दूर करेहै। चिकनाहै। गर्महै। वीर्यको और कांतिको बढावैहै एलुवानाम॥ एलबालक। एलबालु। बालुकं। हरि बालुक। गुण॥ ठंडाहै। खुजलीको। कुष्टको। कफ को कृमिको। दूरकरेहै। प्यासको। छर्दिको। बिषको॥ पित्तको। लोहूको। हृद्रोगको। मूत्रको। गुदाकेरोगोंको दूरकरेहै। हलकाहै॥ जायफलनाम॥ जातीफ ल। जातीसस्य। शालूक। मालतीसुत॥ गुण॥ हल काहै। दिलकोकुवतकरेहै। दीपनहै। पाचनहै। गर्महै कफको बायको छर्दिको। कृमिको। पीनसको खांसी को दूरकरैहै॥ जावित्रीनाम॥ जातिपत्री। जाति कोस। मालतीपत्रिका। गुण॥ हलकीहै। गरमहै कफको। कृमिको बिषकोदूरकरतीहै॥ लौंगनाम

लवंग। शिखरं दिव्य। लवचंदनपुष्पक। श्रीपुष्प। देव कुसुम। भंगार। वारिसंभव। गुण॥ हलकोहै। नेत्रों को गुणकरेहै। दिलकोकुव्वतकरेहै। दीपनीहै। पाचन है। शूलको। अफारेको। दमेको। खांसीको छर्दको॥ बिषकोदूरकरेहै॥ **कंकोलनाम॥** कंकोल कटु कंकोल। मारीच। मधवोषिन। गुण॥ गर्महै। हृद रोगको। कफको। बायको मंदाग्निकोदूरकरेहै॥

**छोटीइलायचीनाम॥** एला। त्रुटि। चंद्रबाला। बहुला। निकुटी। छिजा। कपोतवर्णा। सूक्ष्मेला। कोरंडी। द्राविड़ी। मरवी॥ गुण॥ छोटीइलायचीकफ को। दमेको। खांसीको। बवासीरको सोजाकको खोवे

**बड़ीइलायचीनाम॥** स्थूलेला। त्रिपुट। कन्या। भद्रेला। निष्कोद्भवा॥ गुण॥ बड़ीइलायचीभोजन की रुचिउपजावेहै तेजहै। हलकोहै। गरमहै। कफको। पित्तकोजीतेहै। मुंहसेपानीबहनेको। ज़हरको। मूत्रा शयको। दूरकरेहै। मुंहकेरोगोंको। शिरकेरोगोंको और छर्दिको और खांसीकोदूर करतीहै॥ **तज**

**दारचीनीनाम॥** त्वच। वरांग। सकल। त्वचोच नरुक। बरलाट। बर्णघन। भृंगं। गुडत्वक। स्वर्णभूमिक॥ गुण॥ हलकीहै गर्महै। कड़वीहै। बिसदहै। मीठीहै। पित्तकोपैदाकरेहै। दिलके और मूत्राशयके

रोगोंको बायको बवासीरको। पीनसको औरकृमिको
दूरकरेहैं॥ तमालपत्रनाम॥ पत्रबलह। तापू
स। तमाल। रोमस। गुण॥ गरमहै। हलकाहै।
कफको बायको इतनेरोगोंको दूरकरताहै। नाग
केसरनाम॥ नागकेसरक। नागचांपेय। नागकेसर
गुण॥ रूखीहै। गरमहै। हलकीहै। आवको पकावेहै
दुर्गंधको कुष्ठको बिसर्पको। कफको पित्तको बिष
को। दूरकरताहै॥ त्रिजातकचतुर्जातकनाम॥
इलायचीको आदिलेकेतीनबस्तं त्रिजातकऔर त्रिसुगं
धकहावेहै। औरचौथी नागकेसरमिलेतो चतुर्जातक
कहावेहै॥ गुणनाम॥ तालीस। तालीसपत्र। धात्री
वर्ण। कुशोदर। अपर। ग्रंथिका। पत्राढ्य। तुलसीदल।
गुण॥ हलकाहै। तेजहै। गर्महै। दमेको। खांसीको।
कफको। बायको। दूरकरेहै। खानेकीरुचि उपजावेहै।
गोलेको आंवको। मंदाग्निको क्षयीको दूरकरताहै॥
चिड़नाम॥ सरल। मरुनं। चीड़। नमेरु। पीतवृक्षक॥
गुण॥ गलेके। औरकानके। औरआंखके रोगों को
दूरकरेहै। गरमहै। हलकीहै। कड़वीहै॥ श्रीबासना
म॥ श्रीबास। वेष्टक। रासी। श्रीनिवास। कलिद्रुमंघ्र।
गुण॥ कफको। मूर्छाको। नेत्रकेरोगको। बायकेरोगों
कोहरेहैं॥ नेत्रबालानाम॥ कालक। बारहीबेर॥

पिंडधमूलक। गुण॥ ठंडाहै। रूखाहै। हलकाहै। दी
पनहै। पाचनहै। रक्तपित्तको। ज्वरको। कफको दाहको
फोडोंको। और प्यासको दूर करताहै॥ छडनाम॥
मांसीजटा। भूतकेशी। क्रव्यादा। नलदशिखा। कृष्ण
पूतना। घशीगधमांसी। पिशाचिका॥ गुण॥ ठंडाहै
तीनोंदोषोंकोदूरकरैहै। लोहूको दाहको। बिसर्पको।
कुष्ठकोदूरकरैहै॥ खसखसनाम॥ उसीरंअभय
सेव्यंबीर। बीरणमूलकं। गुण॥ पाचनहै। ठंडाहै॥
बंधेजकरैहै। कफको। पित्तको। दूरकरैहै। प्यासको
लोहूको। बिषको। बिसर्पको। दाहको। मूत्राक फोडे
को हरैहै। रेणकानाम॥ रेणुका। कापिला। कौंती।
पांडुपत्री। ग्रहरेणुका॥ गुण॥ पित्तकोपैदाकरैहै॥
बुद्धिको अग्निकोपैदाकरैहै॥ गर्भको गिरावैहै॥ ~॥
प्रियंगुनाम॥ प्रियंगु फलिनी। श्यामा। कांताग्र
नंदिनी। लता। गुण॥ ठंडाहै। बायकोपैदाकरैहै। दा
हको। पित्तको। ज्वरको। लोहूकोजीतैहै॥ पारिपल
वनाम॥ पारिपेल। पुटधन्य। मुकाढ्य। पारिपेलव॥
गुण॥ ठंडाहै। कुष्ठको। बवासीरको। कफको। पित्त
को। जीतताहै॥ छलीरानाम॥ शैलेय। स्थविर। व
ृद्धशिलापुष्प। शिलोद्भव॥ गुण॥ ठंडाहै। दिलको
कुब्बतकरताहै। पित्तको। कफको हरैहै। हलकाहै।

उसारभेदनाम॥ वामज्ञकजलाधार। दीर्घमूलज लाशय। इषका। पनिक। शीघ्र। अमरणीसुनालक। गुण॥ ठंडाहै। सोज़ाकको। दाहको। तीनोंदोषोंको दूरकरताहै। और लोहको दूर करताहै॥ कुंदरूगूंद नाम॥ कुंदरू। मेचक। कुंदु। षपरेभोषण। बली। गुण। स्वेदको। और बायको। और कफको। ज्वरको दूरकरेहै गुग्गुलनाम॥ गुग्गुल। सालनिर्यास। महिषाक्ष। पलंकषजरायु। कौशिक। दुर्गरिव। धूपाशिव पुर। गु ण॥ तेजहै। गर्महै। मीठाहै। सरहै। टूटेकोजोडे है। पुष्टहै सूक्ष्महै। रसायनहै। दीपनीहै। चेपदारहै। बलकोकरेहै। कफको बायको फोडेको दूरकरेहै। चरबीको। प्रमेहको। लोहको बायको। बवासीरको। चीभचलानेको। घावको फुनसीको। गांठको। सूजनको। गलगंडको। कृमिको। दूरकरताहै। नयाबलकरेहै। षयहै। और पुराणागूगल बहुत निरबलहै। गुग्गलमें इतने गुणहैं॥ रालनाम॥ राल। सर्जरस। यक्षधूप। अग्निवल्लभ। तणका। सालनर्या स। लीवमा। ललनबर॥ गुण॥ ठंडीहै। भारीहै। तेजहै। कसेलाहै। काबज़है। ग्रहोंको। लोहको। पसीनेको वि सर्पको। ज्वरको। फोडेको। खुजलीको इतनेरोगोंको खोवे। सुनेरानाम॥ स्थौणेयक। बर्हिचूड। शुकबर्ण। शुकछ्छ द॥ गुण॥ ठंडाहै। पुष्टहै। बुद्धिकोबढावेहै। तीनोंदोषों

को। लोहूकोदूरकरेहै॥ चौकनाम॥ चोरककिनव
वांट। दुपत्र। शंकित। रिपु॥ गुण॥ पीठाहै। हलका
है। ठंडाहै। दुष्टवाय कफको। लोहूको जीतेहै। मुरा
नाम॥ मुरा। गंधवती। दैत्या। गंधाढ्या। सुरभिः कटुः
गुण॥ ठंडीहै। हलकीहै। कुष्टको। ओजको। पित्तको।
वायको लोहूको जीतेहै॥ कचूरनाम॥ कर्चूर। द्रा
विड़। गंधमूलक। दुर्लभ। शटी॥ गुण॥ दीपनहै भो
जकीरुचि उपजावैहै। कुष्टको बवासीरको फोड़को खां
सीको। जीतेहै। गरमहै। हलकाहै। दमेको। गोलेको। वाय
को। कफको। दमेको। इतने रोगोंको जीतेहै॥ कचूर
भेदनाम॥ शटी। पलाशी। षट्ग्रंथा। सुव्रता। गंधमू
लिनी॥ गुण॥ ठंडाहै। ज्वरको। श्वासको। लोहूको।
खांसीको। जीतेहै। हलकोहै काविज़है॥ रूपकाना
म॥ रूपका। रुक्। प्राणदा। स्वीनिर्माला। कठिला।
वधू॥ गुण॥ मीठीहै ठंडीहै। पुष्टहै। कुष्टको तीनों
दोषोंको दूरकरतीहै॥ ठिबनानाम॥ ग्रंथिपर्णी
नीलपुष्पा। मुखकाया। विवर्णक॥ गुण॥ रूखको
तेजहै। भोजनमेंरुचि उपजावैहै। गरमहै। कफवाय
को। जातीहै॥ नलिकानाम॥ नालिका। नालिका।
मूल्या। निर्बेधा। धमनी। नरी॥ गुण॥ पित्तको॥
लोहूको जीतेहै। ठंडाहै आंखोंको गुणकरेहै। कृमको

और सोज़ाककोजीतेहै॥ **पद्माकनाम** ॥ पद्माक। मलया। चारु। पीतरक्त। सुप्रभा॥ गुण॥ दाहको। फफोलेको। कुष्ठको। कफको। लोहूको पित्तको दूरकरैहै। गर्भकोस्थापनकरैहै। ठंढाहै। प्यासको। विसर्पकोजीतेहै॥ **पुंडरीकनाम** ॥ प्रपौंडरीक पौंड्र्य। स्थलपुष्प। सुपुष्पक॥ गुण॥ वीर्यकोपैदाकरैहै। ठंढाहै। नेत्रोंकोगुणकरैहै। कफकोपित्तकोजीते **नगरुनाम** ॥ नगर। बर्हिण। जिस्त। वक्राह्व। नघुष। नत। अपर। पिंडनगर। दीपनकटु महोरग॥ गुण मीठाहै। चिकनाहै। तेजहै। गरमहै। हलकाहै। मूत्रको जीतेहै। विषको। मृगीको। मूर्छाको सिरके रोगोंको तीनोंदोषोंको दूरकरताहै॥ **गोरोचननाम** ॥ गोरोचना। रुचि। गौरी। रोचना। पिंगला। मंगल्या॥ गौतमी। मेध्या। गोपित्तसंभवा। गुण॥ गोरोचनठंढाहै। बलकोजीतेहै॥ **दोनोंनखनाम** ॥ नखाह्व नखरशिल्पा। हनुनाग। हनुखर। शुक्तिशंख। व्याघ्र नख। औरदूसरीव्याघ्रतल। ६॥ गुण दोनोंनखगरमहै औरकफकोबायकोलोहूकोज्वरकोकुष्ठकोजीतेहै। हलकीहै। गरमहै। वीर्यकोपैदाकरैहैबलकोकरैहै। दिलकोकुवतकरैहै मीठीहै विषकोदूरताहै इतनेगुणहैं॥ **पतंगनाम** ॥ पतंग। पट्टराग। रक्तकाष्ठ।

कुचंदन। सुगंधज। कन्याह्यतरा। पररंजन॥ गुण॥ मीठाहै। ठंडीहै। पित्तको कफको फोड़ेको। लोहूकोजीतेहै॥ **लाखानाम**॥ लाखा। निर्भत्मन। रक्ताद्रुम। व्याधि। पलंकरवा। कृमिजा। जंतुदीप्नाख्या। जावक। लक्तक॥ गुण॥ रंगअच्छकरेहै। ठंडीहै। बलकोबढ़ावेहै। चिकनीहै। कफको। पित्तको। लोहूकोजीतेहै॥ फोड़ा ज़रवम बिसर्प कृमिको कुष्ठको ग्रहको दूरकरैहै और अलक्तकके गुणभी इसीके तुल्यहैं बिशेषकरिके अंगकोरखोतीहै॥ **पापड़ीनाम**॥ पापरी। रंजनी। कृष्णा। जननी। जनी॥ गुण॥ रंगकोअच्छकरतीहै। ठंडीहै। कफको। पित्तको। लोहूको कुष्ठको जीतेहै॥ **पद्मनीकेरविनाना**॥ पद्मनी॥ गुण विषको दाहको पित्तको। पैदाकरेहै। दीपनीहै। कुष्ठको। सोजाकको। दूरकरतीहै। लोहूको और पसलीके रोगको कफको बायकोजीतेहै॥ **मरुवानाम**॥ मरुल मरुक। तीक्ष्ण। षरपत्र। फणिज्जक। गुण॥ अग्निको पैदाकरेहै। दिलको कुवतकरेहै॥ **पद्मनीकोरवणीनाम**॥ पद्मचारिणी। अतिचरा। पद्माह्वचारटी॥ गुण॥ ठंडीहै। हलकीहै॥ कफको सोज़ाकको जीतेहै। स्तनोंकोकठोरकरेहै॥ **श्वेतकमलनाम**॥ कमल। श्वेतअंभोज। सारस। सरसीरुह। सहस्रपत्र।

श्रीगेह। शतपत्र। कुशेशय। पंकेरुह। तामरस। राजी
व। पुष्कर। कुहप्रसन्न। अंबोद्भव। पद्म। पुंडरीक। पंकज
नल। सरोज। नलिन। अरबिंद। महोत्पल॥ **नीलो
त्पलनाम॥** नीलोत्पल। कुवलय। भद्र। इंदीवर॥
**रक्तोत्पलनाम॥** रक्तोत्पल। कोकनद। हल्लक। रक्त
संधिक॥ गुण॥ ठंढाहै कसैलाहै। दीपनहै। पित्तको।
दूरकरैहै। कमलठंढाहै। रंगको अच्छाकरैहै। मीठाहै।
कफको पित्तकोजीतेहै। प्यासको दाहको लोहूको।
फफोलोंको। विषको। विसर्पको। दूरकरताहै। रक्तो
त्पल। आदिकेगुणइससे कुछकमहैं॥ **कल्हार
नाम॥** कल्हार। ऊस्वपापोज। सौम्य। सौगंधिक॥
**गुण॥** काबिज़है। विष्टंभीहै। रूखीहै। भारीहै ठंढीहै
इतनेगुणहैं॥ **पद्मकेसरनाम॥** किंजल्क। केस
र। अपात। कांचनाढ्य॥ गुण॥ ठंढाहै। काबिज़है
लोहू बवासीर कफको और पित्तको जीतेहै॥ **पद्मबी
जनाम॥** पद्मबीज। नमालोढ्य। वनाढ्य। पद्मकर्क
टी॥ गुण॥ ठंढाहै मीठाहै गर्भको स्थापन करैहै भारी
है। कफको बायको पैदाकरैहै। बलकरैहै। काबिज़है
पित्तको और लोहूको और दाहको जीतेहै॥ **बिशना
म॥** मृणाल। बिशप्रभोज। नालनलिनीरुह। पद्मादि
मल। यालूक। पद्मबीन। करहाटक। गुण। ठंढाहै॥

पुष्ट है। कब्ज़ करे है। मीठी है। रूखा है। शालूकके भी इतने ही गुण हैं॥ जातीस्वर्णजातीनाम॥ जातीप्रियं। वहाराज्ञी। मालती। सुमना। पीतजाती। अपरा। पीतपुष्पिका॥ गुण॥ हलकी है। गरम है सिरके। नेत्रोंके रोगोंको दांतोंके दर्दको दूर करती है। और लोहूको जीते है। मालतीनाम॥ मल्लिका। मदनी। मुक्ता। बंधनी। मत्स्यंतिका॥ गुण॥ गर्म है। ह लकी है। पुष्ट है। बायको पित्तको। लोहूके रोगोंको जीते है जुहीनाम॥ यूथिका। हरणी। बाला। पुष्पगंधा। शि खंडनी। सुवर्णयूथी। अपरा। पीता। मणिका। स्वर्णपु ष्पिका। गुण॥ ठंडी है। हाड़ोंके। सिरके। नेत्रोंके रोग को जीते है। कफबायको पैदा करे है॥ अथ कुन्तनाम॥ कुन्तक। क्षुद्रतरुणी। वहत्पुष्प। महासहा। रात पुष्पी। तरुणी। कर्णिका। चारुकेसरी। रक्ता। पद्यरक्तपु ष्पा। लाक्षाख्या। अतिमंजुला॥ गुण॥ ठंडी है। दिल को कूवत करे है। काबिज़ है। वीर्यको पैदा करता है तीनों दोषोंको लोहूको जीते है। रंगको अच्छा करे है। और कुब्ज़ कके भी इसके समान गुण हैं॥ इति कुब्जा सेवती गुलाब नामानि॥ ये ऊपर तीनोंके नाम गुण हैं॥ केतकीस्व र्णकेतकीनाम॥ केतकी। सूचिका। पुष्पजंबुक ककेसछद। दूसरी सुवर्णकेतकी। हेमपुष्पा। सुगंधिनी।

गुण ॥ कड़वीहै। मीठीहै। हलकीहै। तेज़है। और कफ़ की बीमारीको दूरकरदेतीहै ॥ बासंतीनाम ॥ बासंती। सरला। कुंद। प्रहसंती। बसंतजा ॥ गुण ॥ ठंडी है। हलकीहै। तेजहै। तीनोंदोषोंको दूरकरतीहै। कानके। नेत्रके। मुषके। रोगोंको दूरकरतीहै। औरवार्षिकीकेभा यहीगुणहैं ॥ माधवीनाम ॥ माधवी। मंडपा। कामी पुष्पेश। अभीष्टगंधक ॥ गुण ॥ मीठीहै। ठंडीहै। हलकीहै तीनोंदोषोंको दूरकरनेवालीहै ॥ चंपकनाम ॥ चंप क। कांचन। रम्या चांपेय। सुरभीफूल ॥ गुण ॥ ठंडीहै। सोज़ाकको। कफको। पित्तको। लोहूको। छ र्दिको। दूरकरेहै ॥ पुन्नागनाम ॥ पुन्नाग। पाडली। पुष्प। केसर। सटपरालय। गुण ॥ मीठाहै। ठंडाहै। लो हूको पित्तके रोगोंको दूरकरनेवालाहै। मौलसिरी नाम ॥ बकुलकेसर मधुगंधा। सह। बिशारद गुण ठंडीहै। कफको पित्तको दांतोंकेरोगोंको दूरकरेहै। औ र इसका फलबादीहै। काबिज़है। कफको। पित्तको। हरेहै। ठंडाहै ॥ बगहुलानाम ॥ चुक। बक। स्थूलपुष्प बसुक। शिखर। शेषर ॥ गुण ॥ ठंडाहै विषको कफ को सिरके रोगको पित्तको जीतेहै ॥ कुंदनाम ॥ कुंद। मुक्त। सदापुष्प। भ्रमबंधु। मनोरम ॥ गुण ॥ ठंडाहै। हलकाहै। कफको। सिरकेरोगको। छर्दिको ॥

षांसीकोजीतेहै मुचकुंदनाम॥ मुचकुंद। क्षत्र
वृक्ष। चिबुक। प्रतिविष्णुक। गुण। सिरकेदर्दको
पित्तको। लोहूको। श्रौरविषकोदूरकरताहै॥
बेरनाम॥ भूमंडली। विचकिल। छिपर। श्रष्ठपदी।
गुण। ठंडाहै। हलकीहै। कफको पित्तको विषकोदू
रकरतीहै इतनेफायदेहैं॥ तिलकनाम॥ तिलक
क्षुरक। श्रीमान्। तिविन्न। मुखमंडन॥ गुण॥ कफ
कोकुष्टकोदूरकरैहै। नासीरोगसदै। श्रौररसायनहै
मनिपाड़नाम॥ गणेरुका। कसर्णिकार। कर्णि।
कारिका। मनिपाड। गुण। शोधनीहै कफकोलोहूको
फोड़ेको कुष्टकोजीतेहै॥ दुपहरियानाम॥ बंधु
जीव। शरत्पुष्प। बंधु। बंधूक। रक्तक। गुण। कफको
पैदाकरैहै। काबिजहै। बायकोपित्तकोदूरकरैहै ह
लकाहै॥ जयापुष्पनाम॥ जयापुष्प। जयारक्त
त्रिसंध्या। श्ररुणा। सिता॥ गुण॥ काबिज़है। बालों
कोश्रच्छाहै। त्रिसंध्या कफपित्तकोजीतेहै॥ सिंदूरी
नाम॥ सिंदूरी। रक्तबीजा। रक्तपुष्पा। सुकोमला। गुण
विषकोपित्तकोलोहूकी नघमाको छर्दको दूरकरैहै
श्रौरठंढाहै॥ तुलसीनाम॥ तुलसी। सुरसी। गौरी
भूतघ्नी। बहुमंजरी। हरिप्रिया। गुण। कड़वीहै नेत्रोंहै
दिलकोक्षावनकरैहै गरमहै घाहको पित्तको पैदाकरै

है चपनी है कुष्ठको सोजाको दूरकरे है लोहूको
पसलीकेदर्दको कफको बायको जीतेहै॥ मरु
वानाम॥ मरुव। मरुक। तीक्ष्ण। खरपत्र। फाणि
ज्झक। गुण॥ अग्निको पैदाकरे है दिलको कुशाद
करेहै। तेजहै। गरमहै। पित्तको पैदाकरे है रूखा
है बिच्छूको आदिलेके बिषोंको हरेहै। कफको छ
र्दको कुष्ठको कृमिको लोहूसे जो सूजन होउसको
हरे॥ दौनानाम॥ दमन। मदन। दांत। दम। पुत्रक।
गुण। बिषको। कुष्ठको लोहूको मुंहसे पानी बहने
को खुजलीको त्रिदोषको जीतेहै॥ बबेरी भिन
पनाम॥ वर्बरी। तुवर्जिका। कुंठबैकुंठ। कुठेरक। क
पित्थार्जिका। बरपत्र। कलिंजर। कृष्णार्जुक। कालमा
र। कराल। सूक्ष्ममल्लिका। गुण। रूखी है ठंढी है चर
परीहै बिदाही है पित्तको पैदाकरे है कफको बायकूं
लोहूको दाहको कृमको बिषको दूरकरे है॥ ॥
इति श्रीमदनपालबिरचिते निघंटे कर्पूरा
दिवर्गः तृतीयः ३ अथ सुवर्णनामानि॥
सुवर्ण। कनक। हेम। हाटक। ब्रह्मकांचन। चामीकर
शातकुंभ। तपनीय। रुक्मज। जांबूनद। हिरण्य। सुर
त। जातरूपक। श्रीनिकेतन। भूषणार्ह। पोनक। स्वर्ण
गुण॥ ठंढाहै पुष्टहै। बलकरेहै भारीहै रसायन है॥

कांतिबढावैहै। विषको उन्मादको त्रिदोषको ज्वरको
शोककोजीतेहै। कसैलाहै तेजहै मीठाहै भारीहै लेष
नहै सुवर्णमें इतनेगुणहैं॥ रूपानाम॥ रूप्यक।
रजत। कुप्य। तारश्वेत। वसुनाम। गुण॥ ठंडाहै सरहै
बायको पित्तको हरेहै रसायनहै लेखनहै कसैलाहै
खट्टाहै पचनेके समय मीठाहै जवानीको कायम र
क्खेहै। चिकनाहै धातोंको पुष्ट करताहै इतनेगुण
फायदे रूपेमेंहैं॥ तांबानाम॥ ताम्र। लिच्छमुख
शुल्व। नेपाल। रविनामक। उदुंबर। सूर्यप्रिय। रक्तधा
तुजं। गुण। सरहै हलकाहै मीठाहै ठंडाहै पित्तको कफ
कोदूरकरेहै। पांडुरोगको कुष्ठको बवासीरको दम्म
को खांसीको जीतेहै कांसीकेनाम॥ कांस्य
लोह। निज। घोष। पंचलोह। प्रकाशक। गुण। भारी
है गरमहै नेत्रोंको हितहै कफको पित्तको खोवैहै
पीतलनाम॥ पितलोह। सिंहलक। कांपिल। से
व्यनारक। वर्तलोह। त्रिलोह। राजरीति। महेश्वरी।
गुण॥ ठंडाहै रूखाहै कडवाहै कफपित्तको हरेहै।
कलीनाम॥ रंगक। नागक। बंग। त्रिपु। करटी।
घन॥ गुण॥ हलकाहै सरहै रूखाहै गरमहै प्रमे
हको कफको कमको दूरकरेहै पांडुरोगको और द
म्मको इनसबरोगोंको दूर करताहै सीसानाम॥

सीस। धातुमन्न। नागअग। परिपिष्टक। गुण॥ रांग
केसेगुणहैं विशेषकरके प्रमेहको दूरकरताहै॥
लोहकेनाम॥ लोह। पारखमय। ब्यंग। पायावन।
यन। जोउसके बर्तनमें जलरखके तेलकी बूंद गलेतौ
हिंगुकीबासहोय अथवा नींबके कल्कमें पकाया
होय दूधपकावे ज़िमीनमें कांतलो होययेलक्षणहैं
लोहके मैलकी कीट कहावे है और लोहकी रजको
मंडूरकहतेहैं॥ गुण॥ सररूभारीहै मीठाहै कसे
लाहैरूषाहै कुवतकरेहै बायकोपैदाकरेहै सूजन
को कुष्टको बवासीर प्रमेहको पांडुरोगको कृमिको
दूरकरेहै औरउसकीकीटकेभीगुणलोहकीतुल्य
हैं विशेषकरिके पांडुरोगको जीतेहै॥ पारानाम।
पारद। चपल। हिमनिधि। सूत। रसोंघ्रिनेत्र। रोषण।
स्वामी। रसबीज। रसप्रभु। रसश्रेष्ठफल। रसधातु।
रसेंद्रबमि। सारलोसहरस। गुण॥ कृमिको कुष्टको
दूरकरताहै आंखोंकोहितहै गरमहै रसायन है इतने
गुणहैं॥ अभ्रकनाम॥ अभ्रक। खस्यमाकाश
पटल। बरपीतक। गुण॥ भारीहै ठंढाहै कुवत करेहै
कुष्टको प्रमेहको त्रिदोषकोहरेहै॥ गंधकनाम॥
गंधि। सौगंधि। कौलेलो। गंधापूरक। पीतगंधक लि
लीनक। बलिरसा। बेगंध गंधिकबलि गुणः पचनेके

पच + +.+ नेकेसमयकड़वीहै गरमहै पित्तकोपैदा करैहै। सरहै। कुष्ठकोक्षयकोपापनिंद्राको कफको वायकोदूरकरैहै रसायनहै॥ सोहनमाषी नाम॥ माक्षिक। धातुमाक्षिक। ताप्य तापीप॥ गुण॥ कसैलीहै पुष्टहै। स्वर्यहै। हलकीहै। रसायनहै। नेत्रोंकोहितहै। कुष्ठको। सूजनको। बवासीरको प्रमेहको। मूत्राशयकेरोगको। पांडुरोगको। अव्यवायकदुकाको। खूनको कृमकोहरै॥ मनसिलनाम मनशिल शिलागोली। नेपाली। कुनटी। कुला दिव्यौषधी। नागमाता। मनोगुप्ता। मनोह्विका॥ गुण॥ भारीहै। रंगकोअच्छाकरैहै। गरमहै। लेषनीहै। कड़वीहै तेजहै। चिकनीहै। बिषको स्वासको खांसीको भूतको कफको। लोहूकोहरैहै। हरितालनाम॥ हरिताल। मस्ननताल। गोदंत। नटभूषण॥ गुण। चिकनीहै कसैलीहै गर्महै बिषको दूरकरतीहै खुजलीको कुष्ठको मुखकेरोगको लोहूको कफको दूरकरतीहै औरपित्त को वात और ग्रहको दूर करती है॥ गेरूनाम॥ गैरिक। रक्तपाषाण। गिरिसंभ। गवेरुक। स्वर्णवर्णा। पत्रस्वर्णा। मंडन। स्वर्णगेरिक॥ गुण। दाहको पित्तकोलोहूको कफको हुचकीको बिषकोदूरकरैहै आंखकोगुणकारैहै औरदूसराभीवैसाही है

बिशेषकरिकेवायकोजीतेहै॥ नीलाथोथानाम तुत्थ। पर्परिकातुत्थ। अमृता। संग। मयूरग्रीव। सिखि कंठ। तुत्थिक:॥ गुण॥ लेषनहै भेदीहै। खुजलीको कुष्टको बिषको दूरकरैहै क्रमको हरैहै दूसराभी इसी कोतुल्यहै परंतुबिशेषकरिके आखोंको गुणकरताहै कासीसद्वयनाम॥ सधौतकासी। सषेचर। नम्र बोमस। दूसरीपुष्पकासीसहै। तुवर। बस्त्ररागधृक। गुण॥ दोनोंकसीस खट्टीहैं गर्महैं नेत्रहैं बालोंकोस्र ष्टीहै स्विषकोहितुहैं खुजलीको बिषको मोज़ाकको कफको ओर बायको दूर करती हैं॥ हिंगलूनाम॥ हिंगल। रद। म्लेछ। सिकान। पूर्णपारद। मणिरंग। कर्मा वर। धन। गुण॥ पित्तको कफको दूरकरैहै आखोंको गुणकरैहै बिषको ओर कुष्टको दूरकरता है॥ सिंदू रनाम॥ सिंदूर। नागज। रक्त। श्रीमत। श्रृंगारभूषण। व संतदून। नागगर्भ। रक्तरज॥ गुण॥ गरमहै विसर्प कुष्ट को षुजलीको बिषको दूरकरताहै ओर टूटेकोजोड़ैहै ओर फोड़ेको पाकसाफ करताहै ओर भरलावैहै॥ स्रोतश्यामसुरमानाम॥ सोबीर। मंजन। रुप्म। काल। नील। सुबीरज। श्रोतो। अंजन। श्रोतोंज। नदीज। जामुनवर॥ गुण॥ मीठाहै काबिज़है नेत्रोंकोगुणक रैहै। कफको पित्तको दूरकरैहै ठंडाहै॥ स्रोतनाम॥

रसांजन। रसोद्भूत। शैलजिर्व्वज। नार्क्षी। रसाग्र। रुतिम
र्व्य। दार्वी। रसोद्भव: गुण। कड़वी है कफको घरवके
नेत्रके रोगोंको जीते है गरम है रसायनी है। तेज है और
छेदन है फोड़ेको और सूजनको दूरकरता है॥ पुष्पांज
ननाम॥ पुष्पांजन। पुष्पकेतु। राजित। कुसुमांजन।
गुण॥ चमर है गरम है बायको पटलको दूरकरे है। नी
लेफूल होयतो नीलकु। सुमेरोति पुष्प। पौष्पिक ॥
शिलाजीतनाम॥ शिलाजतु। अश्मक। निर्यास।
शैल। गिरिसाह्व। शिलाह्व। गिरिज। गैरेय। गिरोज॥
गुण॥ गरम है कड़वी है जोगवाही है रसायन है मूत्रघा
तको प्रमेहको बवासीरको कुष्ठको उदररोगको पांडु
रोगको दमेको खांसीको नईको उन्मादको। लोहको
सूजनको कफको कमको दूरकरे है और अग्निपर इस
का काढ़ा पकाया होय और उसको सुकायके सतनि
काला होयतो वह मंदाग्निको शरीरको क्षीणताको सा
तोंधातोंकी क्षीणताको पांडुरोगको कमलबायको क
फको पितको बायको इनसबरोगोंको दूर करता है
भोजनकी रुचि उपजावे है दोषोंको ज्वरको दूरकरे है॥
बोलनाम॥ बोल। गंधरसपौर। निर्लोह। बर्बर। बल।
सुगंधिनालिका। पांडुरसगंध॥ गुण॥ लोहको दूरकरे
है। ठंडी है बुद्धिको बढ़ावे है दीपन है पाचन है कड़वी है।

माठाहै।नर्महै। ग्रहको पसीनेको त्रिदोषको ज्वरको मृगीको कुष्टको दूरकरैहै और स्त्रीको बंधेहुवेगर्भको भुरकातीहै॥ फटकड़ीनाम॥ स्फटिकाछ्छा।अमला काक्षी।काछी।सौराष्ट्र।संसबा।आरकी।तुवरी।दूसरीभांतिमात्तिका।सुरमात्तिका॥ गुण॥ कसेलीहै। गरमहै। कफको पित्तको विषको फोड़ेको और विषको विसर्पको दूरकरैहै।तुवरीकेरसकोतुल्यगुण है॥ समुद्रफेननाम॥ समुद्रफेन।डिंडर।फेनो वारी। कफो व्धिज॥गुण॥ आंखोंको गुणकरैहै।लेखनहै। ठंढाहै सरहै॥ मूंगानाम॥ प्रवाल। मूंगा। विद्रुम। सिंधुलताग्र।रक्तवर्णक। गुण॥ कांतिको बढ़ावेहै। पुष्टहै कुव्वनकरैहै।विसर्पको कफको वायकोजीतेहै॥ मोतीनाम॥ मौक्तिक।मुक्ता। फलंमुक्ता।फल।मुक्तिज॥ पद्मलालरागनाम माणिक्य।पद्मराग।बसुरत्न।सरक्तक:॥ सूर्यकांतिमणिनाम॥ सूर्यकांति। सूर्यमणि।सूर्याख्य।दहनोपल॥ चंद्रकांतिमणिनाम॥ चंद्रकांति। चंद्रमणि।स्फटिक।स्फटिकोपल॥ गोमेदमणिनाम। हीरक।भिंदुर।बज्रसूची।बज्रधारक॥ नीलवैडूर्यनाम नीलरक्त।नीलमणि।वैडूर्य।वालबार्यनं॥ पन्नानाम गारुत्मत।मर्कत।दृषतगर्भ।हरिन्मणि।इतनेनामहैं॥

मोतीसीपनाम॥ मुक्तास्फोट। अब्धिमंडुकी। सुक्ति। मौक्ति। कमंबर॥ मूंगा आदिकेगुण॥ आंखोंकोगुणकरेहै। लेखनहै ठंडेहैं कसेलेहैं मीठेहैं सरेहैं मंगलकेदेनेवालेहैं। इनकेधारणकरनेसे दरिद्र और दुःस्वग्रह बिष दूरहोयहै॥ शंखनाम॥ शंख। कंबुज। जलचर। वारिज। दीर्घस्वन। गुण॥ आंखोंकोगुणकरेहै। ठंडाहै हलकाहै पित्तको कफको लोहूको जीतेहै॥ कौडीनाम॥ लघुशंखनक। शंबूक। वारिसुक्त। कपर्दी। क्षुल्लक। चराचर। बराटका। गुण। ठंडीहै आंखोंकेरोग फूलेको दूरकरेहै॥ खरागौरीनाम॥ खरोमकोल्ल। खरनोडि। नरंगिका। औरउसहीकाभेद गौड़पाषाण। औररत्नारपाक कहावैहै॥ गुण॥ दाहको लोहूको दूरकरतीहै। ठंडीहै और गौड़भी उसहीकीतुल्यहै॥ कालीबालूनाम॥ पंक। कर्दमक बालुका। सिकत्य॥ गुण॥ दाहको पित्तको शोषको। दूरकरेहै ठंडीहै औरबालुका खेलनीहै फोड़ेको और छातीके ज़खमको अच्छा करती है॥ चुंबकपाषाणनाम॥ चुंबक। कांतिपाषाण। यस्कांत। लोहकर्षण। गुण॥ लेखनहै ठंडाहै चरबीके और बिषके रोगों को दूरकरताहै॥ काचनाम॥ काच। रूत्नाभरक्त। पिंगल। काचभाजन॥ गुण॥ बिदारणहै रक्तको अच्छा करनाहै

आरोंकोगुणकोदेखनाहै हलकाहै ॥ इतिश्रीम
दनपालविरचितेनिघंटभाषायांधातुवर्गः
चतुर्थः ४ बरवृक्षनाम ॥ बट।रक्तफलाती बहुपा
द। वनस्पति। यक्षवास। पदी। रोही। न्यधस्कंध। येश्रव:
गुण। ठंडाहै। हलकाहै। काबिज़है। कफको पित्तको
फोड़ेकोदूरकरताहै॥ पीपलनाम॥ पिप्पल। श्याम
ल। अश्वत्थ। चीरवृक्ष। गजाशन। हरिवास। चलदल।
मंगल। बोधिपादप। गुण। ठंडाहै पित्तको कफको।
फोड़ेको लोहूको इन बीमारियोंकोखोताहै॥ पारस
पीपलनाम॥ पारिशं। फलीस। कपिभृत। कपीतन।
गुण॥ चिकनाहै कफकीबीमारीको कमको पैदाकर
ताहै। गूलरनाम॥ उदुंबर। चीरवृक्ष। जंतुवृक्ष। स
दाफल। हेमदुग्ध। कृमिफल। यज्ञांग। शीतवल्कल। गु०
ठंडाहै रंगकोअच्छाकरेहै भारीहै पित्तको कफको लोहू
कोजीतताहै। कठूंबरिनाम॥ काकोडुंबरिका। फ
ल्गु। मलयू। चित्रभेषज। गुण॥ गूलरहीकेतुल्यइसके
गुणहैं बिशेषकारके चित्रकोदूरकरेहै। पिलखण
नाम॥ प्लक्ष। प्लव। चारुवृक्ष। सपार्श्व। गर्दभांडक। ब
टी। कमंडलु। पूग। पिप्पली। वारुदर्शन। ॥गुण॥ ठंडाहै क
फको पित्तको रुधिरको बिसर्पको इनसबरोगोंकोखोताहै
पंचक्षीरवृक्षनाम॥ पंचक्षीरा। न्यग्रोध। उदुंबर॥

अश्वत्थ। पारिश। प्लक्षपादप। येन्यग्रोधसे आदिलेकर पंचवृक्ष पांचोंवृक्षकहावेहैं। तिनकीछालकोपंचवल्कलकहतेहैं॥ गुण॥ इनपांचोंकीत्वचाठंडीहै काबिज़है फोड़ेको। बिसर्पकोजीतेहै येपांचोंवृक्षसारेठंडेहैं औरव्रणकोठंडाकरैहैं। भगकेरोगोंकोअच्छाकरैहै। सूजनको पित्तको कफको लोहूको दूरकरैहै दूधबढावैहै टूटेहाड़केजोड़ैहैं इनकेपातठंडेहैं काबिज़है कफको बायको लोहूको दूरकरेहैं। हलकेहैं इनके फलविषैंभीहैं काबिज़हैं लोहूको पित्तको कफको दूरकरैहैं॥ **नंदीवृक्षनाम**॥ नंदीवृक्ष। अश्वत्थभेद। प्ररोही। गजपादप। गुण। इसकेगुणभी पीपलकेतुल्यहैं हलकाहै गरमहै जहरकोदूरकरताहै। **कदंबवृक्षनाम**॥ कदंब। गंधपुष्पा। प्रावृषा। महाउन्नति। औरदूसरीधुलिकदंबिनी। पराजकदंबक॥ गुण॥ ठंडाहै कफको लोहूको बिकारकोखोवेहै॥ **कौकभवृक्षनाम**॥ कुकुभ। अर्जुननामानंदीवृक्ष। धवद्रुम॥ गुण॥ ठंडाहै टूटेहाड़कोजोड़ैहै ज़खमकोलोहूको दूरकरैहै॥ **शिरीषवृक्षनाम**॥ शिरीषभवगवृक्ष। शुकवृक्ष। कपीतन। मृदुपुष्प। श्यामवर्णा। भांडीर। पंखनीफल॥ गुण॥ ठंडाहै रंगकोअच्छाकरैहै बिषकोबिसर्पकोसूजनकोजीतेहै॥ **आर्तगलवृक्षनाम**॥ आर्गलः आर्तगल। बहुकंठ। अघघर्षण। गुण॥ तुबरहै ठंडाहै।

फोड़ेको साफ करेहै। औरभरलावताहै ॥ बेनस वृक्षनाम ॥ बेनस। बंजुल। नम्र। बानीर। दीर्घपत्रकः नास्त्य। मेघपुष्प। तोयसम। निकुंजकं। गुण ॥ बेनसठं ढाहै। दाहको सूजनको बवासीरको सोजाकको लोहू को पितको औररुमेको कफको औरबायको दूर क रताहै ॥ नलबेनसनाम ॥ जलोका। संब्जन। अंभो ज। निचुल। जलबेनस ॥ गुण ॥ जलबेनस ठंडाहै। का बिज़है बायको पितको करताहै ॥ इज्जलनाम ॥ इज्जल। हिज्जल। गुच्छफल। गच्छ्योलिका ॥ गुण। इज्ज लकोभी गुणइसीकीतुल्यहै ॥ लिसोडानाम ॥ श्ले ष्मांभके। कुबुदार। पिच्छल। भूतपादपं। शेलू। शेलू। शेलकं। शेलक। द्विजकुत्सितः ॥ गुण ॥ फफोलेको बिषको फोड़ेको बिसर्पको कुष्ठको दूरकरेहै बालोंकू अच्छाकरेहै इसका फल गर्म है पुष्टहै बायको पित्त को नाशको लोहूकोजीतेहै ॥ पीलूवृक्षनाम ॥ पीलु। शीत। सहस्त्री। भुनीदरा। करभप्रिय। सहस्रांगी गुड़फल। नत्फल। मांडुपीलुश्च ॥ गुण ॥ गरमहैदीपनहै भेदीहै लोहूको पितको पैदाकरेहै रूखाहै गोलेको तापतिल्लीको बायको पथरीको कफको दूरकरे है रसायनहै ॥ सागवनुनाम ॥ शाक। सरच्छद। भूमी रुह। दीर्घछद। गुण। कफको बायको लोहूको दूरकरे

है। गर्भसंधानको देनेवाला है ठंडा है ॥ सालनाम ॥ शाल। सर्जरस। सर्ज्ज। श्रीमान्। भारीवपत्रक ॥ गुण ॥ नावज़करे है फोड़ेको कफको दाहको विषको हरे है ठंडा है ॥ तमालनाम ॥ तमाल। तापिछ। कालस्कंध। सितद्रुम। गुण ॥ तमालमें भी ऐसेही गुण हैं सूजन को दाहको विस्फोटको दूरकरे है। खैरनाम ॥ खदिर। रक्तसार। गायत्री। बालतक। और दूसरा खैर स्वेतसारकार्मुक। कुष्ठकंटक। गुण। ठंडा है। दोनोंको गुण करे है श्रमको प्रमेहको ज्वरको फोड़ेको चित्रको सूजनको श्रांवको पित्तको लोहूको पांडुरोगको कुष्ठको कफको जीते है उसका निर्यास मीठा है बलवीर्यको पैदाकरे है उसका सार विसद है और लोहूको जीते हैं इतने गुण हैं खैरजड़नाम ॥ अरिमेद। विटखदिर। गोधास्कंध। इरिमेदक। गुण ॥ कसैली है गर्म है मुंहके दांतके रोगको दूरकरता है लोहूको खुजलीको विषको कफको श्रमको दुष्टग्रहको फोड़ेको दूरकरे है बंबूलनाम बंबूल। किंकिरात। पीतक। पीतपुष्पक। गुण। कफको दूरकरता है ॥ बिजयसारनाम ॥ बीजक। पीतका। शौरिप्रिय। कास्योलकप्रिय ॥ गुण ॥ बिसर्पको चित्रको प्रमेहको श्रमको दूरकरे है कफको लोहूको पित्तको और अरुचिको दूरकरती है तिनिसनाम

निम्न। स्यंदन। नेमी। सर्वसार। अश्मगर्भ॥ गुण। कफ को। पित्तको लोहूको वरबीको। कुष्टको प्रमेहकोजी तेहै। भोजपत्रनाम॥ भूर्ज। भुज। बहुत्वट। मदुत्वक् लेख्यपत्रक। गुण॥ भूतको भूतको कफको कानोंकेरोग को पित्तको लोहूकोजीतेहै॥ केसूनाम॥ पलाश। किं शुक। वातपोथ। ब्रह्मपादप। क्षारश्रेष्ठ। रक्तपुष्प। त्रिव न। शमिद्नाम। गुण॥ दीपनीहै पुष्टहै गलेके टूटेको जोड़ैहै। संग्रहणीको ववासीरको कृमिको दूरकरैहै इस केफूल कफको पित्तको लोहूको सोजाकोदूरकरैहै काबिजहै ठंडेहैं फलहलकाहै गरमहै प्रमेहको ववासी रको कृमिको बायको कफको दूरकरताहै॥ धववृक्ष नाम॥ धव। शकटक। गौर। शकटाख्य। धुरंधुर। गुण॥ ठंढाहै। प्रमेहको ववासीरको पांडुरोगको पित्तको कफ को दूरकरैहै॥ धामणीनाम॥ धन्वान। गोत्रविटपा धर्मणी। गोत्रपुष्पक॥ गुण॥ कफको पित्तकोलोहूको षांसीको दूरकरैहै तुवरहै हलकाहै॥ सीजानाम॥ सर्ज। रक्ताणि। श्वेदघ्न। लताबृक्ष। कुरेहक। गुण। रंगको अच्छाकरैहै कफको पित्तको पसीनेको मलको कृमको हरैहै॥ सिसोरनाम॥ सिसोर। पीतपुष्प। छागीरवि नाशन॥ गुण॥ वातरक्तकोलोहूको कफको वायसेजो अतीसारहोय तिसको दूरकरैहै॥ वरणानाम। वरुण।

वारुणा सेतु। शाकवृक्ष। कुमारक। गुण। पित्तकोपै दाकरैहै भेदीहै कफको रोगनाशकको। गोलेको लोहूको बायको कुष्टको दूरकरैहै अग्निको दीप्तकरैहै॥ झींगणानाम॥ जिंगणी। झिंगणी। झिंझी। सुनिर्यासा। मोरकी॥ गुण॥ फोड़ेको हृद्रोगको बायके अतीसारको जीतैहै। कड़वाहै॥ सालकनाम॥ सल्लकी। बल्लकी। मोचा। गजभक्ष्या। महारुहा। गंधबीरी। कुंदरकी। सुस्रवा। बनकार्णिका। गुण॥ फोड़ेको पित्तको। लोहूको कफको पित्तके अतीसारको दूरकरताहै॥ हिंगोटनाम॥ इंगुद भल्लकी। कुलकंटक। तापसद्रुम। गुण॥ कुष्टको भूतोंको ग्रहको फोड़ेको विषको कृमको दूरकरैहै विकको मूलको दूरकरैहै। उसका फल कफको बायको हरै॥ कटहानाम॥ कटुभर। चारुमुंठी। कटभी। नणशौंडिक। गुण॥ प्रमेहको लोहूको नासूरको कफको वीर्यकोजीतैहै और उसका निर्यास भारीहै पुष्टहै बलकोपैदाकरैहै बायको हरैहै॥ फरवाहनाम॥ मुष्कक। मोचक। घंटा। शिखरा। तुद्वपाटलि। गुण॥ कफको। बायको दूरकरैहै काबिजहै सोनेको विषको कृमिको। दूरकरैहै। गरमहै। मूत्राशयके रोगोंको खुजली को दूरकरताहै उसका फल कफको पित्तको दूरकरता है॥ पर्वतनिंनाम॥ पारिभद्र। निंबक। रक्तपुष्प। प्रभद्रक

कोरको। पारिजात। मंदार। कारकिंसुक॥ गुण। क्रमको कफको परबीको सजनको और बायको दूरकरताहै सिंबलनाम॥ शाल्मली। तूलनी। मोचा। कुर्कुटी। रक्तपुष्पिका। कण्टकोद्या। स्थूलफला। पिछला। चिरजीवनी। गुण॥ ठंडीहै पुष्टहै कुष्ठनकरैहै लोहूको पित्तको जीतेहै रसायनहै चिकनीहै उसका फूल का बिजहै पित्तको दूरकरैहै उसका निर्यास बहुत पुष्टहै शोकको पित्तको बायको दूरकरैहै सप्तपर्णनाम॥ सप्तपर्ण। गुच्छपुष्प। छत्री। शाल्मलि। पत्रिका। गुण॥ फोड़ेको कफको बायको दूरकरैहै। हरिद्रुनाम॥ हारिद्रकं। पीतवर्ण। श्रीमान। गौरद्रुम। धरा। गुण॥ कफको दूरकरैहै और फोड़ेको सुद्धकरैहै भरलावैहै॥ करंजुकनाम॥ करंज। नक्तमालं। नक्ताह्व। घृतवर्णक। पूतिवर्ण। चिरबिल्वक। गुण॥ कड़वाहै तेजहै गरमहै भगकेरोगोंको दूरकरैहै कुष्टको उदावर्तको गोलेको बवासीरको॥ फोड़ेको क्रमको कफको दूरकरैहै उसका फल कफको बायको प्रमेहको बवासीरको क्रमको कुष्ठको जीतेहै उसके पात कफको बवासीरको क्रमको सजनको दूरकरैहै॥ करंजीनाम॥ करंजिका। काकनिक्ता। बायसी। अंगारबल्लरी। गुण॥ गरमहै बायको बवासीरको क्रमको कुष्ठको प्रमेहकोहरै तिरगिछीनाम॥

तिरिगिछी। गजकर। बारंज। चीरिणी। छिप। गुण
रूखी। बवासीर पित्तको सूजनको हरेहै॥ जंडी
नाम॥ शमी। तुंगा। शकुफला। पवित्रा। केशह
नुफला। लक्ष्मी। शिवा। अधिशमी। पापकराह्वया।
गुण। ठंडीहै। हलकीहै मीठीहै कुष्ठको बवासीर
को कफको जीतेहै इसका फल पित्तको पैदाकरेहै
रूखाहै बुद्धिको नष्टावेहै बालको दूरकरेहै॥ झिंझि
णीनाम॥ चिरीषिका। हिंगिणिका। दुर्वेला। सु
शिरीषिका। गुण। कफको कुष्ठको बवासीरको
रक्तपातको विषको हरेहै॥ रीठानाम॥ अरि
ष्टक। कुंभबीर्य। गर्भपातन। फेनिल। रक्तबीज। रक्तबी
ज। पीतफेन। अर्थसाधन॥ गुण॥ तीनोंदोषोंको दू
रकरे गरमहै। गर्भको और ग्रहको दूरकरेहै॥ सीसों
नाम॥ शिंशिपा। कपिला। कृष्णा। सारा। मंडलपत्रि
का। कुशिंशिपा। भस्मपिंगला। विशोधनी॥ गुण॥
प्रमेहको कुष्ठको विषको छर्दको मूत्राशयकेरोगों
को फोड़ेको दाहको जीमचलानेको दूरकरतीहै और
गर्भको गिरावतीहै॥ अगस्त्यनाम॥ अगस्त्या।
वंगसेन। मु। शिय। मुनिद्रुम। गुण॥ पित्तको कफको
चौथेदिनकेज्वरको दूरकरतीहै और ठंडाहै और इसका
फूल पीनसको कफको पितको दूरकरेहै॥ ॥ ॥

इतिश्रीमदनपाल विरचिते निघंट भाषा-
यांवनस्पतिवर्गः पंचमः ५ द्राक्षानाम॥
द्राक्षी। मधुफला। स्वाद्वी। हारहूरी। फलोत्तमा। मृद्वी
का। मधुयोनि। रसीली। गोस्तनी। गुच्छ। गुण। पकीदा
खट्टीहै अांखोंको गुणकरेहै। क्षुधाकरेहै भारीहै।
ज्वरको स्वासको बायको पित्तको लोहूको सोसाकको
रक्तपित्त को संमोहको दाहको सूजनको मदात्ययको।
दूरकरतीहै कच्चीदाखमें इससे थोड़े गुणहैं भारीहै
लोहूको पित्तको जीतेहै वहजो बेदानाहोयहै छोटी
दाखतिसके गुणभी गोस्तनीकेबराबरहैं और पर्वत
में जोदाख होयहै सोहलकीहै कुछखट्टीहै कफको
पित्तको पैदाकरतीहै॥ आंबनाम॥ आम्र। मनो
न्मथ। चूत। सहकार। अतिसौरभ। माकंद। पिकबंधु
रसाल। कामवल्लभ। गुण॥ कबज़करेहै। कफको।
पित्तको फोड़ेको दूरकरेहै उसका फल बायको करेहै
बहुतगर्महै रूखाहै त्रिदोषकोलोहूको दूरकरेहै और
पक्काआम मीठाहै पुष्टहै चिकनाहै दिलको कुव्वतक
रताहै और बलकरेहै भारीहै बायको दूरकरेहै भो
जनकोरुचि उपजावेहै रंगको अच्छाकरेहै ठंढाहै।
पित्तको नहीं करेहै उसकारस चिकनाहै रोचनहै बल
करेहै औररंगकोकरेहै॥ जामननाम॥ महाजंबू

राजजंबू। महास्कंधा। वृहत्फला। लघुजंबू। नीरप्रिया। मेघाभा। काकवल्लभा। नादेई। तत्फला। जंबु गालव। गुण। काबिज है। रूखी है कफको पित्तको फोड़ेको। लोहूको दूरकरे है राजजंबू मीठा है काबिज है भारी है। रोचन है छोटी जामन भी वैसी है दाहको दूर करता है॥ **नारियलनाम॥** नालिकेर। तुंगवृक्ष। महाफल। तृणराज। रसवफल। लांगली। दृढ़बीजक। गुण॥ ठंडा है मूत्राशयको शुद्धकरे है लोहूको दाहको दूरकरे उसका पानी ठंडा है। दिलको कुव्वतकरे है दीपन है वीर्यको पैदाकरे है हलका है उसके वृक्षके सिरकी मींगी वीर्यको पैदाकरे है बायको पित्तको जीते है॥ **पिंडखजूरनाम॥** वृहत्खर्जूरिका। स्वादी। सुफला। द्वीपसंभवा। पिंडखर्जूरिका। खर्जू। दुष्प्रधर्षा। सकंरका। भूमिखर्जूरिका। कोका। कर्कटी। छार। गुण। ठंडी है मीठी है चिकनी है जषमको लोहूको जीते है कुव्वतकरे है बायको पित्तको मदको मूर्छाको मदात्ययको दूरकरे है और खर्जूरजो है उसमें गुण। इसमें थोड़े होय हैं उसकी मींगी ठंडी है पुष्टको पित्तको। लोहूको दाहको जीते है॥ **अथसुलेमानीनाम॥** सिलेमानी। मृदुला। निर्बलीपाला। गुण। स्रमको भ्रांतिको दूरकरे है **केलानाम॥** कदली। ग्रंथली। मोचा। रंभा। वीरा। पत्रछत्र॥ गुण॥ भगके रोगोंको पथरीको।

रक्तपितको दूरकरैहै ठंडाहै बलको पैदा करैहै बालों
की बढ़वैहै। पितको कफको लोहूको दूर करैहै।
उसका फल मीठा है काबिज़ है कफको पैदा करैहै भा
रीहै तरहै पितको लोहूको प्यासको दाहको जखमको
क्षयको बायको जीतैहै॥ अनारनाम॥ रक्तकुसुमा
दाड़मी। रक्तबीजा। शुकप्रिया। गुण॥ दीपनहै दिलको
कुवतकरैहै रोचनहै पितको बहुतनहीं करैहै कसैलीहै
रूखाहै। काबिज़है। मीठाहैसो त्रिदोषको दूर करताहै
षट्टाहोयतो बायको और बलासको पैदा करैहै। और
रूखा अनारदाना बायको पितको पैदा करताहै॥
बेरनाम॥ बदरीफल। कर्कटा। घोंटा। गोकंटी। युग्म
कंटिका। और एक बेरहै उसकानाम स्निग्धछदा कोषा
फला। सौबीरीका। हस्तिकोल। लच्छी। कर्कंधु वा घु
का। गुण। ठंडाहै नेजहै। रूखाहै पितको कफको दूर
करैहै और कोलबेर फैनलेवैहै। कर्कंधु जो छोया बेरहै
उसको करट। कंधु। कंधुक कहेहैं। सो पका और कच्चा
मीठाहै बेर हलकाहै काबिजहै। घानेमें रुचि उपजावै
है। गरमहै। बायको जीतेहै कफको पितको जीतेहै
और कोल भारीहै। बीर्यको पैदा करैहै पुष्टहै पितको।
दाहको लोहूको क्षयको प्यासको दूरकरैहै कर्कंधु।
मीठाहै चिकनाहै भारीहै पितको बायको दूरकरैहै॥

सखहै। भेदहै अग्निकोधरेहै। सारवैरहलकोहै। प्यासको लोहकोजीतेहै बायकोपितको हरेहै औरउसकी मींगी पुष्टाईकरेहै बलकोहरेहै॥ इतिगुणा॥ खिरनीनाम॥ क्षीरीवृक्षिय। राजादना। राजास्न। फलाध्यक्ष। औरउसहीकाभेद एक औरहै उसकोराजादनकहेहैं चिवुक। मुचिलिन्दककहेहैं। गुण॥ ठंडीहै चिकनीहै। भारीहै। बलकोपैदाकरेहै प्यास मूर्छा मद। भ्रांति क्षय त्रिदोषदाहको इनकोजीतेहै॥ चिरौंजीनाम॥ चौरं। धनुपट। चार। प्रियाल। मुनिवल्लभ। गु० पितको। कफको दाहको दूरकरेहै उसकाफल मीठाहै भारीहै चिकनाहै बायको पितको दाहको प्यासको ज्वरको दूरकरेहै और उसकी मींगी मीठीहै पुष्टहै वीर्यकोपैदाकरेहै बायकोपितकोजीतेहै॥ फालसानाम॥ परूषक। मल्फल। परूष। रोषण। गुण॥ कसैलाहै। खट्टाहै। कच्चातो पितकोपैदाकरेहै हलकाहै पकापचनेकेसमय मीठाहै काबिजहै कुपितकरेहै प्यासको पितको दाहकोलोहको क्षयको बायकोहरतेहैं नाम॥ तिंदुकास्पन्दन। स्फूर्य। कालसार। रावण। कालपीलुक। विषतिंदुक। गुण॥ फोड़ेको बायको दूरकरताहै उसकासार पितकेरोगोंकोजीतेहैं कच्चातो काबिजहै बायकोपैदाकरेहै ठंडाहै हलकाहै पकापितको

प्रमेहको लोहूको कफको दूरकरैहै भारीहै और विष
तंदुकजोहै सोभी इसीको तुल्यहै विशेषकरिकै काबि
ज़है और ठंढाहै॥ कांकईनाम॥ किंकिणी। ग्रंथि
ल। व्याघ्रपाद। स्वितरू। बर। गुण॥ तुबरहै तेज़है पित्तको
कफको दूरकरैहै ठंढाहै उसकाफल कच्चाती बायको
पैदाकरैहै। पका मीठाहै त्रिदोषको जीतै है॥ ग्राड़ू
नाम॥ ग्रारुक। बीरसेन। इसके ४ भेदहैं ग्रारुका जार
कहैं। बायको प्रमेहको बवासीरको कफको दूरकर्ता
है॥ महुवानाम॥ मधुक। मधुक। नीलरासार।
गुड़पुष्पक। कोनाफल। मधुष्ठील। मधुकोष। महाद्रुम
और दूसरा भेदहै उसको हस्व फल। मधुग। दीर्घपत्रक
कहैहैं गुण। कफको बायको दूरकरैहै कसैलाहै फोड़
को भरलावैहै उसकाफूल मीठाहै बलकरैहै ठंढाहै भारी
है पुष्टहै और फल ठंढाहै भारीहै मीठाहै वीर्यको पैदाक
रैहै बायको पित्तको जीतैहै दिलको गुननहीं करैहै प्यास
को लोहूको दाहको दमेको जषमको लईको जीतै है॥
कटहलनाम॥ पनस। कंटकिफल। म्यासयो। गर्भकं
टक। गुण॥ पकाठंढाहै। चिकनाहै। पित्तको। बायको
दूरकरैहै। कच्चाभी ऐसाही है और काविज़है बादीहै॥
भारीहै॥ बढहलनाम॥ लकुच। लघुपनस। निकुच
ग्रंथिमत्फल। गुण॥ भारीहै काविजहै मीठाहै खट्टाहै

लोहूको पित्तको पैदाकरैहै कफको पैदा करैहै वीर्य को वायको अग्निको दूर करैहै गरमहै ॥ तालनाम ॥ ताल। ध्वज। दुरारोह। तृणराज। महाद्रुम। गुण। ठंढाहै वायको पित्तको फोड़ेको जीतैहै नशाकरैहै वीर्य को पैदाकरैहै उसका फलठंढाहै बलकोकरैहै चिकना है। मीठाहै भारीहै। क़ाबिज़ है वायको लोहूको नषमको दाहको तईको हरैहै औरवीर्यमूत्रबहुत लावैहै वायको और पित्तको इनरोगोंको हरताहै। औरठंढाहै॥ खबर वृक्षानाम॥ खर्बूज। फलराज। अमृताढ्य। दशांगुल। गुण॥ मूत्रकोवहुतलावैहै बलकरैहै कोठेको शुद्धकरैहै। भारीहै तरहै पुष्टहै ठंढाहै पित्तको वाय को दूरकरैहै मीठाहै॥ सेवनाम॥ मुष्टिप्रमाण। बदर। सेवं सिंवितिकाफलं। गुण॥ वायको पित्तको दूरकरैहै भारीहै पुष्टहै। कफको पैदाकरैहै बलको पैदा करैहै पचनेके समै मीठाहै ठंढाहै॥ अमाबीसेवनाम॥ अंमफल। चाप। सहसिंवितकाफल। गुण॥ इसमेंभी उसीसेव की समान गुण हैं परंतु ठंढा विशेष करिकै हैं॥ बादामनाम॥ बादाम। सफल। वानवैरी। नेत्रोपम। गुण॥ गरमहै। तरहै वायको दूरकरैहै बलको और वीर्यको बढ़ावताहै॥ अमृतफलनाम॥ अमृताढ्य। रुचिफल। मधुविल्व। फलाढ्नि। गुण॥ भारीहै वायको दूरकरैहै मीठाहै खट्टाहै॥

खानेकी रुचि उपजावैहै वीर्यकोपैदाकरताहै॥ चिल
गोजा। पिस्तानाम॥ निकोचक। घरुफल। संकोच
नलगोजग। पिस्ता। मुकूलक। दंतीफल। समाहता।
गुण॥ निकोचक। भारीहै। तरहै पुष्टहै मीठाहै कुचन
करेहै। लोहूको संवारैहै बायको दूर करैहै कफको पि
त्तकोनाश करैहै पिस्तेके गुणभी यहीहै विशेषकर भारीहै
पलाननाम॥ पलान। कच्चा बायको दूरकरैहै। खट्टा
है रेचनहै। भारीहै और पक्का मीठाहै गर्महै बलकरैहै
बायको पित्तको दूरकरैहै॥ आलूनाम॥ अल्लुक।
मल्ल। भल्लुक। भल्लू। रक्तफल। गुण॥ ठंडाहै मीठाहै
खट्टाहै बायको पित्तको दूरकरैहै आलूबुखारा॥
अंजीरनाम॥ अंजीर। मंजुल। काकोडुंबरिकाफल
गुण। ठंडाहै॥ मीठाहै भारीहै पित्तको लोहूको बायको
दूरकरताहै॥ अखरोटनाम॥ अक्षोटक। वंतफल।
कंदराल। पृथकच्छद। गुण॥ मीठाहै कुवत करैहै ग
रमहै बायको हनै गुणहैं पालेवतनाम॥ पालेव
त। सितपुष्प। तिंडुकाभफल। दूसरामाणावकनाम।
और महा पालेवत भी कहतेहैं गुण। गरमहै ठंडाहै मी
ठाहै भारीहै अग्निको बायको दूरकरैहै माणवकका
गुणभी ऐसाहीहै दिलको कुवत करै प्यासको हरैहै
तूतनाम॥ तूतद। ब्रह्मकाष्ठ ब्रह्मस्क। गुण॥

भारीहै।ठंडाहै।पित्तकोबायकोदूरकरैहै॥ गंगेरुवा
नोरननाम॥ गंगेरुक।नोरनक।कर्कटक।कर्कट॥
मृगलेंडिक।झंखा।धन्व।महंगसहश।गुण॥ गंगेरु रोच
नहै पकाहुवा भारीहै वायको पित्तको लोहूकोजीतेहै
औरनोरनकाबिजहै मीठाहै वायकोपित्तकोहरैहै हल
काहै॥ **तुंबरनाम॥** भूतसेआदिलेकरतीनोंषदहैं॥
गरमहै कच्चेपित्तकोपैदाकरैहैं औरसमुद्रमें जो तुंबर
पैदाहोयहै तिसकेभीगुण मिलाकेसेहैं तुंबरकड़वाहै
कफकोजीतेहै गरमहै फोड़ेको भ्रमोहकोपैदाकरैहै॥
**बिजौरानाम॥** जेपुर।मातुलुंग।केसरीफल।परक॥
गुण॥भोजनरुचिउपजावैहै उसकारस षट्टाहै दीपनहै॥
हलकाहै लहूकोपित्तकोपैदाकरैहै कंठकोजीभकोशो
धैहै छिलकातेजहै भारीहै कृमकोबायकोदूरकरैहै और
औरउसकागूदा छूवत करैहै ठंढाहै भारीहै पित्तकोबायको
जीतेहै उसकाकेसर हलकाहै काबिजहै शूलको गोलेको
उदररोगकोदूरकरताहै बीजउसकागर्महै भारीहै कृमिको
दूरकरताहै उसकाफूलठंडाहै काबिजहै लोहूको पित्तको
जीतेहै हलकाहै शूलको अजीरणको बिबंधकोमंदाग्नि
को कफकोबायकोअरुचिको स्वांसकोऔरखांसी इन्हों
रससेदूरहोताहै॥ **मधुकाकड़ीनाम॥** मधुककोंट
का स्वादु। तुंगी।घंटालिका।घटा।गुण॥ ठंडीहै रक्तपित्तको

हरेहै भारीहै उसकीजड़ बिसूचिका को कानकी सोजन को दूरकरैहै॥ **नारंगीनाम**॥ नारंगक। नागरंग। गोर खा। योगसारक। गुण। खट्टाहै बहुतगरमहै भोजनकी रुचिउपजावेहै बायको दूरकरैहै मीठी ओरखट्टी नारंगी रिलको बहुत नफाकरैहै बायको हरै॥ **जंबीरीनाम**॥ जंबीरक। दंतशठ। जंभीर। जंभल। गुण। गरमहै म्लको। जीतहै। भारीहै कफको वायको जीतहै मुंहके रोगोंको हृदके रोगको दूरकरैहै अगनिको दीप्तकरैहै क्रमको दूरकरैहै **अमलबेतसनाम**॥ आम्लवेतस। भुक्त। बेतस। शतभेदक। गुण। बहुतगरमहै भेदनहै हलकाहै दीपनहै हृद्रोगको म्लको गोलेको दूरकरैहै पित्तको दोहको ओरकफ को दूरकरताहै॥ **साराम्लनाम**॥ साराम्लक। सारफल रसारपास्प। गुण॥ खट्टाहै। वायको दूरकरताहै दूरकरताहै भारीहै पित्तको ओरकफको पैदाकरताहै॥ **निंबूनाम**॥ निंबुक। निंबुकराज। निंबूक। गुण॥ खट्टाहै बाय को। दूरकरैहै। पाचनहै। हलकाहै ओरएक नींबू मीठाहै। भारीहै बायको पित्तको जीतहै क्रमोंके समूहको नाशकरैहै तेजहै ओवको उदरके पकड़नेको बायको पित्तको कफको म्लको दूरकरताहै गईहुई धातको फिर पैदाकरैहै रुचिउपजावेहै नानादोषोंको नयेज्वरको विषमज्वरको मलबंधको दूरकरैहै गुदाकेबंदहोनेमें बहुतगुणकरैहै विसूचि

काको इनने सबरोगोंकोदूरकरताहै। कमरखनाम कर्मरंग। रामफल। मव्य। पिच्छलबीजक॥ गुण॥ ठंडीहै ग्राहीहै। मीठीहै। षट्टीहै कफको बायको पित्तको दूरकरताहै॥ आंबलीनाम॥ अम्लिका। चुक्रिका। चिंचा तिंतडी। भक्तचंडिका। गुण। भारीहै। षट्टीहै। बायकोदूरकरताहै कफको। पित्तको। लोहूको जीतेहै ओर पकीभी उसीकीतुल्यहै। रुचिको उपजावेहै अग्निकोबढावेहै मलाशयको शुद्धकरेहै सूषी इमली दिलको ताकत करेहै मांदगीको भ्रांतिको प्यासको दूरकरेहै हलकीहै। तिंतडीनाम॥ तिंतडीक। बलाम्ल। अम्लशाक। अम्लपादप। गुण॥ बायको दूरकरेहै कची गरमहैबहुत भारीहै पकीहलकीहै काबज़है फोड़ाको भरलावेहै कफको बायको जीतेहै करौंदानाम॥ करमर्दी। सुषेणी। कृष्णफला। गुण। भारीहै गरमहै षट्टीहैलोहूको पित्तको कफको पैदाकरेहै पकाहुवा मीठाहै रुचिकरेहै हलकाहै पित्तको बायको जीतेहै सूषा करौंदा कच्चेके समानहै॥ कैथपत्रीनाम॥ कपित्यक। दधिफल। दधित्थ। सुरभिच्छद। गुण। कच्चाकैथ काबिजहै हलकाहै त्रिदोषको दूरकरताहै पकाभारीहै प्यास हुचकी को दूरकरेहै बायको पित्तको जीतेहै ओरमीठाहैओर पुष्टहैओर काबिजहै॥ कैथपत्रीनाम॥ कपित्थपत्री। फाणिजा। कुलिजा। नवपत्रिका। गुण। मैहै

गरमहै कफको प्रमेहको विषको दूरकरैहै ॥ आम्रातक
नाम ॥ आम्रातक। आम्रवट। फलाशं। ड़: फलं। कपि
गुण ॥ कच्चातो बायकोदूरकरैहै भारीहै गरमहै रुचिउप
जावैहै। और पक्कामीठाहै ठंढाहै पुष्टहै बायको पित्तकोज
षमको लोहूकोजीतैहै ॥ राजाम्रनाम ॥ राजाम्र। ष्व
माम्रीताकामाढ्य। राजपुत्रक। गुण ॥ मीठाहै ठंढाहै बा
यकजहै। कफको पित्तको दूरकरताहै ॥ चतुराम्लपंचा
म्लनाम ॥ वृक्षाम्ल। दाडिम। चिंचा। कपित्थ। चेयेनु ॥
राम्लकेहैं आम्लबेतस वृक्षाम्ल दाडिम बडेरबीज धरये पंचा
म्लकहावै ॥ कोशाम्रनाम ॥ कोशाम्रक। घनस्कंध।
जंतुवृक्ष। सुकोशक। गुण ॥ कुष्टको सोजनको बवासी
रको पित्तको फोड़ेको कफको दूरकरैहै उसका फलका
बिजहै बायको दूरकरैहै षट्टाहै भारीहै पित्तल मींगी पित्त
बायको हरैहै बलको अग्निको दीप्तकरैहै मीठाहै ॥ सुपा
रीनाम ॥ क्रमुक। क्रमिक। पूंग। पूंगीफल। गुण। भारी
है ठंढाहै रूषीहै कसैलीहै कफको पित्तको करैहै मूर्छा
लावैहै दीपनीहै रुचिकरैहै मुंहको सवारैहै गीला होयतो
अभिष्यंदीहै अग्निको दृष्टिको हरैहै पानतो बायको हर
है सुपारी कफको दूरकरैहै कत्था पित्तको हरैहै चूनाक
फको हरैहै। तांबूलनाम ॥ तांबूल। बल्ली। तांबूली
नागनी। नागबल्लरी। गुण ॥ रुच्यहै तेजहै गरमहै कसैलाहै

रोचणहै। काम। श्रौरलोहहै पित्तको हलकाहै वसीकरण
है कफको मुखकीदुर्गंधको हरैहै बलवायको मांद्यग्नि
दूरकरताहै॥ लवलीनाम॥ घनस्निग्ध। महत्प्रांसु
स्वपुन्नार। समच्छद। सुगंधमूला। लवली। पांडु। कोमल
वल्कला। ववल्म्याफल। श्याम। ज्योत्स्नाफलस। गुण।
गर्महै ववेसी वायपित्तको हरैहै हलकीहै॥ इतिश्री
मदनपालविरचिते निघंटे भाषायां फलव
र्गः षष्ठः ६॥ पात। फल। फूल। नाल। कंद। सस्वेद।
यह छहतरहकी तरकारीहै। पहलीसेसिवाय दूसरीभा
रीहै। श्रौरसबसों सरसोंके सागसे श्रौगण बहुत हैं॥
पेठानाम॥ कूषमांडकी। पुष्पफला। गोमका। महाफ
ला। कर्कारु। श्रपरा। लब्धा। श्रह। राजकर्कटी। गुण। पुष
है ठंढाहै भारीहै पित्तको कफको लोहको जीतेहै कच्चापेठा
पित्तको हरताहै ठंढाहै श्रर्धपका कफकरैहै पक्का कम ठं
ढाहै मीठाहै षारीहै दीपनहै हलकाहै मूत्राशयको सोधैहै
बीरजके रोगको त्रिदोषको हरैहै तीनों दोषोंको हरैहै नी
लापेठा मीठाहै ठंढाहै वायकी पथरीको दूरकरता है उसका
गूदा पित्तको हरैहै पुष्टहै मीठाहै मूत्राशयको सोधैहै॥
लघुपेठानाम॥ कर्कारु। गुण। ठंढाहै रक्तपित्तको हरै
है पक्का पित्त श्रौर श्रग्निको हरैहै कफवायको दूरकरताहै
तरबूजनाम॥ कलिंग। रुग्मबीज। कलिंद। फलवर्तुल

गुण॥ काबजहै कफको बीर्यको करहै भारीहै पक्का गर्म है पित्तलहै और कफको बायकी बीमारियों को खोवे है मीठोतूंबीकेनाम॥ तुंबी मिष्ठा। महातुंबी। राजला। बुरला। बुसी। गुण। सुथाई करताहै कफको पितको ह रहै भारीहै॥ कडुतुंबीनाम॥ कडुतुंबी। पिंडफला। राजपत्री। दुग्धिनी। गुण॥ ठंडीहै पितको खांसीको और विषको इनरोगोंको हरैहै॥ ककडीनाम॥ कर्कटी लोमसी। व्यालपत्री। वृहत्फला॥ गुण। ठंडीहै रूखीहै काबि जहै मीठीहै भारीहै रूच्यहै पितको हरै पक्की गरमहै और मं दाग्निको हरै प्रचंडाग्निकरै॥ खीरानाम॥ त्रपुस। कंट कालता। सुधावास। परंडैके। छर्दायनी। मूत्रफला। निद्रा हरिणी। गुण॥ हराकच्चा पितको हरै। पीलाकफछर्द को करै मूत्रबहुत करैहै ठंडाहै खुश्कहै पितको पथरी को सोज़ाकको दूरकरे है पक्का गर्म है बहाहै पित्तल है॥ कफको बायको जानै॥ चिभटनाम॥ चिभटं। धेनुदु ग्ध। गोरक्षकर्कटी। गुण। मीठीहै। खुश्कहै भारीहै पितको कफको दूरकरैहै ठंडाहै काबिजहै पक्की गरमहै पित्तलहै बालुकनाम॥ बालुक। कांडक। गुण॥ ठंडीहै मीठीहै भारीहै रक्तपितको हरैहै भेदीहै हलकीहै गरमीहै पक्की अ ग्निको करैहै॥ सेबनाम॥ शीर्णवंत। चित्रफल। विचि त्र। पीतपर्णक। गुण। हलकाहै मीठाहै भेदीहै गरमहै अ

तुरईनाम ॥ कोशातकी । कृताछुद्रा । जालनी । कृतवेध
न । मृदंगफलिनी । कोडानघायली । कर्कशछदा । गुण ।
हलकी है तेज है पुष्ट करै है आमाशयको साधै है सूजनको
पांडुरोगको उदररोगको तिल्लीको कुष्टको ववासीरको
कफको पित्तको जीतै है उसका फल भेदी है ठंढा है हलका
है प्रमेह त्रिदोषको हरै है ॥ घीयातोरीनाम ॥ राज
कोशातकी मिष्टामहाजाली सपीतक । गुण । ठंढी है ।
तपको दूर करै है कफको वायको बीमारीको खोवै है ॥
बड़ीतोरीनाम ॥ महाकोशातकी । हस्तिघोषा । महत्
फला । गुण । चिकनी है । सर है पित्तको वायको हरै है ॥
बैंगननाम ॥ वंताकी । वार्त्तिकी । वंता । भाटाकी । भांट
का । गुण ॥ मीठा है तेज है गरम है पवनके समैं कड़वा है ।
पित्तको हरै है कफको वायको हरै है हृद्य है दीपन है वीर्य
को पैदा करै है हलका है तपको षासीको अरुचिको ॥
पक्का पित्तको करै है भारी है ॥ स्वेतबैंगननाम ॥ श्वे
तवार्ताकी । कुक्कुटाड़ । फलोपम । गुण ॥ पहलेसे थोड़ गु
ण हैं । और विशेषकर कि ववासीरवालेको हित है ॥
कंदूरीनाम ॥ बिंबीर । रक्तफला । गोलातुंडी । रक्त
दोपम । गुण ॥ छर्दलादेहै रक्तपित्तको कंवलवायको
दूर करै है उसका फल ठंढा है मीठा है भारी है पित्तको
वोहूको घावको हरै है स्थंभन है लेखन है वायको सोर

अफारेकोकरैहै॥ करेलानाम॥ कारवेल्ल। कटिल्ल
कुधकाय। सुकांडक। कारवल्ली। बारिवल्ली। बहद्ध
ल्या। गुण। ठंढाहै भेदीहै हलकाहै नेजहै वायकोनहीं
करैहै पितको लोहूको षांसीको दूरकरताहै और पांडु
रोगको कफको प्रमेहको क्रमको इतने रोगों को जीतैहै
ककोड़ानाम॥ ककोटकी। पीनपुष्पा। हानालनी
गुण॥ वैसाहीहै। कुष्टरोगको और अरुचिको हरे है॥
वांझककोड़ानाम॥ वंध्याकर्कोटकी। देवी। नागरी
बिषकंटका गुण॥ नेजहै बिषको बिसर्पको खांसीको
जीतैहै॥ डोडीनाम॥ डोडिका। बिषमुष्टि। स्याद्विष
मुषी। सुमुष्टिका। गुण॥ कफको पितको बवासीरको
क्रमको बिषको गोलाको॥ हरैहै॥ डींडसनाम॥ डींड
स। रोमस। रोमसफली। टिंडिस। मुनिनिर्मित॥ गुण॥
बातलहै। रूक्षकहै मूत्रबहुतलावैहै। पथरीकोफोड़ैहै।
खवाससेंबीनाम॥ कोलसिंबी। कृष्णफला। खव
नसकूरपादिका। गुण। बायको हरैहै। भारीहै गर्महै।
कफको पितको जीतैहै सिंबनाम॥ शिंबि: कृशि
कुत्साख्य शिवीपुस्तक। शिंबिका। गुण॥ ठंढीहै हल
कीहै बलकरैहै कफको वायको पितको हरैहै॥
बथुवानाम॥ वास्तूक। चारपत्र। चारपत्र। शाक
वीन। प्रसादक। गुण। पाचनहै रुच्यहै हलकाहै॥

वीर्यको बलको बढावेहै निल्लीको लोहूको पित्तको नवासीरको कफको त्रिदोषको ॥ जीवंतीनाम ॥ जीवंतिका । शाकराज । रूकनाल । प्रनालका । गुण ॥ बलकोकरैहै वातहैपत्तेकेसभी मीठीहै त्रिदोषकोह र सारसागमांस्वोंकोवुरेहैं और मदको नुरेहै एकघुये लावधुवा काकमा चीपनन वाकर्ह और जीवंती लालव सुवाकोकरहैहैं ॥ चिल्लीनाम ॥ चिल्ली । रहल्ला । र ला ॥ चिल्लिका । गौरवास्तुक ॥ गुण । हलकीहै । ठंडीहै । रूखीहैमधुरहै अग्निदीपनहै मलकरैहै खुश्कहै निल्ली को त्रिदोषको लोहूको कफको जीतैहै कालसागना म ॥ कालशाक । कालिका । चचुका । चंपुकोपम गुण । सरहैरूखाहै वातहै सजनको दूरहै ॥ चौराईनाम ॥ तंडुलीय । मेघनाद । कांडेर । तंडुलरूक । विषघ्न । कंधर । मारिष । गुण । हलकीहै ठंडीहै खुश्कहै पित्तको कफको लोहूकोजीतेहै मलमूत्रपैदाकरैहै रूखाहै दीपनहै रक्त पित्तकोहरहै । फोगनाम ॥ फोग । मरुद्भव । भंगी । स्व ल्पघुम्प । प्रसादन । गुण । काबिजहै ठंडाहै रक्तपित्तको और कफको दूरकरताहै पटोलनाम ॥ पटोला । पांडुक नाली । कलक । कर्कशच्छद । राजीफल । पांडुफल । राजा भान । अमृताफल । तिक्तोत्तमा । बीजगर्भा । पटराज । पटो लिका । गुण । पाचनहै हृद्यहै हलकीहै अग्निदीपनहै

गरमहै। खांसीको बवासीरको त्रिदोषको ज्वरको
श्रमको हरैहै उसकेपात पित्तको हरैहैं ठंडेहैं और बेल
कफकोहरैहैं जड़रेचन है फलत्रिदोषकोजीतैहै॥
**चिचेंडानाम॥** चचुलाई। बृहत्फल। श्वेतराजी। ब
हुफला। गुण। परोलकेसे गुणहैं। और बिशेषकरके
दुबलेकोनफाकरैहै का बिज़है मदको रमको रक्तपित्त
को विषकोजीतैहै **पालकनाम॥** पालक्य। वास्तु
कावार। छुरिका। चिरलात्र। गुण। ठंडाहै कफकोकरैहै
और भारीहै॥ **पोईनाम॥** पोतकी। श्रीरिका। मत्स्य
काला। तुंगिका। गुण। ठंडीहै। नरहै कफको करैहै॥
वायपित्तकोजीतैहै वेपरवाहै बीर्यकोपैदाकरनाहै रक्त
पित्तकोहरैहै॥ **लोनियानाम॥** लोणिका। बृहन्नो। घो
टकुरीर। गुंडरगुंडरक। फंजी। फंजीरक। गुण। खुश्कहै
भारीहै ठंडीहै सरहै काबिज़है कड़वीहै खारीहै पचने
मेंमीठीहै॥ **फंजीनामगुण॥** फंजी गरमहै बा
तमहै रम्मा खांसी कफको हरैहै **सुणसुणीनाम।**
सुनिषण्ण। स्वस्तिक। बरर। तिलपर्णीक। गुण। ठंडी का
बिज मूर्छा त्रिदोषको जीतैहै **कोरैयानाम॥** सप्तप
त्र। तीक्ष्णक: शठपुष्प। सुबोधक। गुण। कफको बायको
हरैहै तीक्ष्णहै पित्तको हरैहै उसका फल बादीहै रक्तपित्तको
रमको कफको हरैहै और ठंडक ज्वरकोहै बादीहै काबिज़है

कफको दूर करता है इतने गुण हैं बसियानाम ॥ ध
नागमो । द्रुवल्ली । धस्तिज । गुण । तीनों दोषको हरै है उसका
फूलमीठा है सर है और उसका फल वारी है ॥ सेफाड़ना
ऊँनाम ॥ सितीवार । कुरूयो । नाडी । नालिका । गुण । सुख
है सूजेको हरै है वायपितको करै है नाड़ी हलकी है रूखा है ।
पितको हरै है कफवायको हरै है ॥ सरसोंका (साग
नाम ॥ सार्षिप । सर्षपोद्भूत । कौसंभ । कुसुंभज । गुण ।
सरसोंका साग विष्टाको मूत्रको बंध करै है भारी है गर्म है
वायको करै है केड़ का साग मीठा है पुरकी है कफ हरै है
पितको करै है हलका है इतने गुण दोनों सागोंमें हैं ।
लूणींका साग नाम ॥ चाणकथाका गुण । कफको
वायको जीतै है ॥ मटरका साग नाम । केरूल । कल्या
यशाक । गुण । मीठो है हलका है पित्तको कफको दूर
करै है ॥ बांगेरीनाम ॥ बांगेरी । अम्लिका । चुक्रा । च
क्राम्लीका । चतुष्पदा । गुण । दीपनी है हलकी है कफको
वायको जीते है पित्तल है संग्रहणीको बवासीर कफको
अतीसारको जीतता है । कसौंदी गाजर साग नाम
कासमर्द । कर्कश । गृंजन । गाजर । गुण । हलका है गर्मी को
अच्छा है खांसीको विषको लोहूको हरै है गाजरका साग
कड़वा है तेज है गरम है दीपन है हलका है कानिज है रुचि
पित्तको बवासीर संग्रहणी कफ वायको जीतै है ॥

मूलीकेनाम॥ मूलक। हस्तिदंतक। बालमूल कपो
तिका। गुण। रूक्ष्य है गरम है पाचन है हलका है तीनो
दोषोंको हरै है स्वासको गलेको नेत्ररोगको पीनसको
हरै है बड़ी भारी सो हरै है भारी है गरम है तीनों दोषको पैदा
करै रंधी हुई चिकनी है तीनों दोषोंको हरै है सूखी मूली
विषको सूजनको हरै है हलकी है त्रिदोषको हरै है उस
का फूल कफ पित्तको हरै फल कफ बायको जीते है॥
करीरनाम॥ करीरका। गूढपत्र। क्रकर। ग्रंथिल। गु०
कड़वा है भेदी है तेज है गरम है कफको बायको जीते को
ढ़ेको सूजनको विषको बवासीरको हरै है उसका फूल
कफको पित्तको हरै है फल काबिज है कसैला है गर्म है
मीठा है कफको पित्तको दूर करता है सोहंजनानाम
शिग्रु। शोभांजन। तीक्ष्णगंध। बहुलछद। लालमधु। शिग्रु
कहावै है और सुपेद हरितछद कहावै है उसके बीज सुपेद
हैं सो तेज गर्म हैं नेत्रोंको हित है काबिज है अग्निको बढ़ावै
है कफको बायको जीते है तेज है गरम है बुद्धिको निद्राकू
फोड़ेको दूर करै है लोहूको पित्तको मीठा है सोहंजनके गुण
भावैसे होहै विशेषकरके दीपन है उसका फूल भारी है
काबिज है बादी है कफको पित्तको जीते है और फल क
सैला है गर्म है काबिज है मधुर है कफको पित्तको दूर करता
ना है इतने गुण सोहंजनेमें हैं॥ लहसननाम॥ लसुनं।

उग्रगंधा । मृदवेरं । रसोनक । गंजन । महाकंद । अंजरी । दीर्घ
पत्रक । गुण । पुष्ट है । गरम है । पाचन है । टूटे को जोडै है
मेदा है भारी है पित्त को लोहू को बुद्धि को पैदा करै है रसा
यन है कफ को सेको यांसी को गोले को ज्वर को सर्व
सूजन को प्रमेह को ववासीर को कुष्ट को मल को वाय को
क्रम को दूर करै है और प्याज लहसन के पीछे पावै है गालमें ये
पदारहैं इतने गुण लहसन में हैं ॥ पियाजनाम ॥ प
लांडु । यवनेष्ट । उग्रगंधा । मुखदूषक । और दूसरी प्याज ल
नाक । दुक्म । गुण । लहसन के गुण हैं कफ को करै है पित्त
को बहुत नहीं बढ़ावे है गरम है पचने में भारी है ॥
गाजर नाम ॥ गृंजन । पित्तल है कावज है नेत्ररोग में है
रोग को हरै है जिमीकंद नाम ॥ सूरण । कंदलकंद ॥
गुदामयहर वज्रकंद । सूरंद । चित्रकंदक । गुण । दीपन है रु
क्ष है ववासीर को हरै है हलका है और दूसरा लघुकंद कफ
को हरै पित्त को लोहू को हरै ॥ अस्थिसंहारनाम ॥
अस्थिशृंखलिका । वज्रांग । प्रमाना । अस्थिसंहित । गुण ।
पुष्ट है । कफ करै है मीठा है ठंडा है हड्डी को जोडै है वल करै है
पित्त को लोहू को वाय को इतने रोगों को फायदा करती है ॥
वाराहीकंद नाम ॥ वाराही । माधवी । कृष्टि । नाके
दा । सौकरी । कीटि । गुण । पित्तल है । रंग अच्छा है मीठा है
तेज है रसायन है आर्वल को वीर्य को अग्नि को बढ़ावे है

मूर्छाकोकफकोकुष्ठकोबायकोदूरकरताहै॥मूस
लीनाम॥मूसली।तालपत्री।खलिनी।तालमूलिका॥
गुण॥मुष्टहैगरमहैबवासीरकोबायकोदूरकरतीहैउ
सकाकंदबीर्यकोबढ़ावेहै बलकरेहैपित्तकोबायको
जीतेहै केडुकनाम॥कन्दुक।पोलनी।पेडुकंद।स
लापिनी।रारहा।बातलहैकाविज़हैदीपनहैकफको
बायकोहरताहै भूछत्रनाम॥भूछत्र।पृथिवीकंद।सी
तोघ्रा।बलक।गुण।ठंढाहै।बलकरेहैभारीहैभेदीहै त्रि
दोषकोहरताहै।स्थूलकंदमानकंदनाम॥स्थूल
कंद।ग्रामकंद।माणक।महच्छद।गुण।भारीहै।कफको
बायकोकरेहैपित्तकोसूजनकोजीतेहै मानकंद ठंढाहै मी
ठाहैपित्तकोलोहूको हरेहै भारीहै।कासेरू सिंघाड़ेना।
कसेरुक।खल्पकंद।बहुश्रज।कसेरुक। सिंघाड़े।मृंगा
ट।जलकंद।त्रिकोण।त्रिकूट।दात्रिक।गुण।कसेरूठंडाहै
मीठाहैपित्तकोलोहूको दाहकोजीतेहै।काबिजहै।बीर्य
कोबायकोकफकोपैदाकरेहैसिंघाड़ाऐसा होहै॥ पिं
डालूमध्वालूशारवालूकाष्ठालूहस्तालू॥पिं
डालुक।बध्यगंधा।मध्वालू।रोमस।शंखसंकाशी।की
ष्यालू।स्वल्पकाष्टका।हस्तालुक।महत्काष्ट।रक्तालू।श्रा
लू।रक्तकंदक।गुण।श्रालूसबठंडेहैंकाविज़हैंमोटेहैं।
सरेहैंमूत्रकोमलकोउपजावेहैं खुश्कहैं रक्तपित्तको दूर

करेहै कफबायको करेहैं बलकरेहै पुष्टहैं स्तनमें दूधको
बढावैहै पिंडालू अभिष्यंदी है तेजहै गरमहै दोषोंको पैदा
करेहै भारीहै मधुरहै पित्तको करताहै ॥ किलूटनाम
केलूट। खर्ज्यादिप। किंदुक। स्वादुकंदक। गुण। ठंडा
है काबिजहै पित्तको हरेहै कफको बायको जीतेहै ॥ ~
इनसबके गुण ॥ बहुत पुराने और सूखे बुरी धरतीके
उपजे नमें बहुत ठंडे सांप आदिकके दूषे कुएं साग खानेम
नाहैं छूमूलीके ॥ इति श्रीमदनपालबिरचिते
निघंटभाषायां शाकवर्ग। सप्तमः ७ पानीना
पानीय। जीवन। नीर। कौलाल। अमृत। जल। आप। तोय।
अंभ। उदक। पाथ। अंबु। सलिल। पय। पानीके गुण ॥
ठंडाहै हलकाहै पित्तको विषको थमको दूरकरेहै दाहको अ
जीरणको मांदगीको छर्दको नशेको मूर्छाको मदात्यय
कोजीतेहै और आनी जगह पानी भला नहीं है पांसीमें प्र
मेहमें अरुचिमें कफमें पांडुरोगमें बायके रोगमें पसलीके
दर्दमें घीतेल पीये पीछे गलेके रोगमें नयेज्वरमें संग्रहणी
में जुकाममें अफारेमें दुबकीमें गोलेके रोगमें बवासीरमें इनरोग
रोगोंके ऊपर थोड़ा पानी ओगन करेहै ॥ अब जुदेजुदे पानी
के गुणकहेहैं ॥ दिव्यबर्षारकी धार सो चार बिध
कहीहै फिर जिसके दो प्रकारहै एकतो अधर गंगाहै और
एक आकासका निन घेरोंमें गंगाधरकामेघहै आश्विन

केमहीनेमेंजोबरसेहैऔरसमुद्रकाजलभीगंगाहीकी
तुल्यहैसोआसोजकेमहीनेजलकोलेकेसुवर्णके वा
मिट्टीकेभांडेमेंधरेऔरचांवलरंधेहुएउसमेंगलर
क्खेजोवैसेहीरहैऔरगलेंनहींतोजानियेंगंगाकाज
लहैसोवहपानीसबरोगोंकाहरताहैऔरसमुद्रका
पानीखारीलोनमिलाहुवावीर्यकोविषकोनासक
हैऔरविंध्यनदीसेजोपानीनिकसाहोयसोजीवन है
हलकाहैरसायनहैप्यासकोमूर्छाकोतंद्राकोदाहकूं
श्रमकोदूरकरताहैचंद्रमासेजोनिकसेजलसोरसाय
नहैबलदाईहैमदकोनिद्राकोत्रिदोषकोहरैहैश्रमको
हरैहैहर्षउपजावैभ्रमकोहरैबुद्धिकोबढावैहै॥ दि
व्यजलगुण॥ मैसाहीभसमपेपराहुवाजलहैकूपका
जलकफकोहरैहैखारीहैपित्तलहैदीपनहैहलकाहै
नदीकाजलदीपनहैहलकाहैरूखाहैवादीहैलेखनहै
सरकाजलमीठाबलदाईहैप्यासकोहरैहैकसैलाहै
हलकाहैतालाबकाजलबादीहैमीठाहैकसैलाहै
पचनेमेंकडवाहैवायकोकफकोहरैहैझरनेकाजललेख
नहैरुधकोहरैहैदीपनहलकाहैउद्भिदजलहलकापित्त
काहरनेवालाहैअविदाहीहैबहुतदीपनहैचोआजलअ
ग्निकोबढावैहैरूखाहैमीठाहैकफकरनेवालानहींहै
पचनेमेंभारीहैदोषपैदाकरैहैओसकापानीबादीहैठंढाहै

खुशक है पित्तको कफको करे है धरतीमेंजो धारपड़
सो पानी दिव्य कहावे है सो सब दोषोंको दूर करता है
गढ़का जल ठंडा है खुशक है कफको बायको हरता है।
बरफका जल बहुत भारी है ठंडा है पित्तको हरनेवाला है
बायको बढावे चंद्रकांतजल खुशक है हलका है पित्तको
विषको दाहको दूर करे है और जिस जलपे दिनको तो धूप
परहे रातको चांदनी रहे उसको हंसोदक कहे हैं सो चिक
ना है त्रिदोषको हरे अभिष्यंदीन हीं है आकाशके जल
की तुल्य बल करे है बुद्धिको बढावे है ठंडा है हलका है
अमृतकी तुल्य है बर्फका जो पानी है सो उद्भि भी श्रेष्ठ है
शरदऋतुमें स्वच्छ पानी लेना सबको भला है हेमंतऋतु
में सरका तालावका पानी पान करे है बसंत ऋतुमें और
ग्रीष्ममें कुएका बावड़ीका झरनेका जल पीवना गुण करे
है बरषाऋतुमें कुआका पानी गुण करे है जिस नदीका
पानी जलदी बहता है सो बहुत हलका है और जिस नदी
का पानी मंद बहे है सो भारी है गंगाका जमनाका सरजूका
बहुत गुण करे है पित्तको हरे है बायको कफको हरे है
मलियाचलसे जो नदियां निकसी हैं उनका जल हलका
है जलदीवे हैं कृतमाला ताम्रपर्णी आदिलेके इनका पानी
निर्मल है उज्वल पानीसे पीलया अपचीरोग पैदा होय है स
जन पांव सिर गलेके रोग गांठ कामिये रोग होय हैं पर्वतसे

जोनिकसीनदियां तिनमैं बैनी। औरगोदावरी मुख्यहैं सोवेकुष्टको वायको कफको हरेहै बिंध्याचलसेजोनि कसीहैं रेवाकृष्णआदिदेके पांडुरोग कुष्ट पेदाकरेहै पारि जातसेजोनिकसीहैं सोदो रूनरहूकोहैं चर्मनवतीआदि नलावसें निकसीहैं सोपथ्यहैं त्रिदोषको जीतेहैं बलक रेहै सार्द्धासजोनिकसीहैं सोकुष्ठ गलेकेरोगको कफ को। पैदाकरेहै औरमरूजीनदियां बलकरेहै रूलकोहैं अग्निको बढ़ावेहै पश्चिमसेजोनदियांआईहै गोमतीन मेदाआदिसोपथ्यहैं बायकोलोहूको पित्तको हरेहै बलकरेहै युगलीको कफको हरेहै। दक्षिणदिशाके समुद्रकोजोगईहैं सोबलकरेहै पित्तको हरेहै कफबा यकोपैदाकरेहै पर्वतवाहनीनदियां मंस्खलनेवालीहैं ब लकोपौरुषकोबढ़ावेहै धरतीकेपानी प्रातसमैंलेनेभले हैं पानीतो निर्मलऔरठंढाहैसोगुणदाईहै भोजनसेप हले पानीपीवादुवला करेहै अग्निमंदकरेहै औरबीच मेंपीवेसे अग्निदीपनकरेहै अन्नमेंपीवेसे मोटाकरेहै औरकफकरेहै सारीप्रानियोंकाजीवनापानीहीसेहैं। तातेंपानीकहींमनेनहीहै कहींगरम कहींठंडा कहींऔ टाया कहींऔषधकेसाथ कहींमनेनहीहै कच्चेसजीर णमें औटायापानी पक्केअजीरणमें बिनदापानीदेनाया गयहै अन्नदपानीदोषोंकोपैदाकरेहै अग्निमंदहैवगैरे

और जांगल पानी सारे दोषोंको हरेहै अग्निको दीपनकरे
साधारणठंडा मीठा प्यासका हरनेवाला पुष्टीदेनेवाला हल
का है बर्षाका लीया हुवा पानी पीवेतो बाहर भीतरके रोग
पैदाहोय और जिस पानीमें तिनके कूड़ा मिलाहोय कीड़
गंधवस्तुं मिली होय और सूर्य और चांदकी किरणें उसपै
नपड़ी होय सो सब दोषोंको कुपित करेहै वहपानी पीजि
येनहीं बिगड़े पानीको आगपर औटावे तो निर्दोष होजायहै
कपूर। पुन्नाग। पाडल। इनसे बसायेसे निर्दोष होजाय है
और जो पानी औटायाहोय या झाग उसमें नहीं होय और
निर्मल होयसो सब दोषोंको दूर करेहै दीपनहै पावनहै
हलकाहै गरम है अग्निको पैदा करेहै मूत्राशयको सोधै
है पसलीके दर्दको जुकामको अफारेको हिचकीको
अग्निकफको हरेहै जो चौथाई जलाहोय तो बायको हरे
है अधजला होयतो पित्तको जीतेहै और तीन हिस्से ज
लगया होयतो कफको हरेहै कबज़करेहै हलकाहै अ
ग्निको बढ़ावेहै बायको दूरकरेहै अजीरणको तुरंतप
चावेहै चौथाई रहाहुवा पानी ग्रीष्म और सरद ऋतुमें
रात्रिको पीवना भला है हेमंत और वर्षा और शिशिर ऋ
तुमें आधा रहा पीवना योग्य है ठंढा पानी सदापथ्य है ह
लकाहै त्रिदोषको दूरकरेहै दिनका औटाया रातको भा
रीहै कच्चा पानी एक पहरमें तिससे आधी देरमें औटाया

ठंडा कियाहुवा होय है एक सुहूरतमें गरमजल होय है। अरोचकमें जुकाममें प्रसेकमें सूजनमें क्षयमें मंदाग्नि को उदररोगमें कुष्टमें नेत्र रोगमें फोड़ेमें मीठे प्रमेह वो पानी थोड़ा पीजिये नारियलका पानी चिकना मीठा है ठंडा है हृद्य है दीपन है बस्तिशोधन है पुष्ट है पितको प्यास का दूर करने वाला है भारी है और ऐसा ही पुराना पानी है कावि जरहै हलका है और पित्तहै॥ इतिपानीय वर्गः॥ अथ दूधनाम॥ दुग्ध। क्षीरबाण। सौम्य। क्षीर। संजीवन। पयः। पाण। बलकरे है ठंडा है मीठा है बायको पितको हरता है चिकना है रसायन है बुद्धिको बढ़ावे है जीवन है धातोंको बढ़ावे है रक्तबिकारको दमेको क्षयको बवासीरको भ्रमको दूर करे है भारी है बात कको वदेको दुबलेको स्त्रीको ग्रासकको गुण करे है प्राणधारियोंको मुफीद है॥ गायका दूध॥ गाय का दूध मीठा है ठंडा है भारी है चिकना है रसायन है पुष्ट है अस्तनमें दुग्ध बढ़ावे है रंग अच्छा करे है बाय पितको दूर करे है सुपेद गायका दूध कफकारे है भारी है मनव त्सा विवत्सा गायका दूध विशेषको हरे है खल खाने वालीका कफ हरे है और भारी है॥ बकरीका दूध गायके दूधकी तुल्य है दीपन है हलका है क्षयीको ब वासीरको अतीसारको प्रदरको गोहको भ्रमको ज्वरको

नाशा करैहै जो बकरी छोटी होय और कड़वा और तेज
वाश करती होय और थोड़ा पानी पीती हो उसका गुण
यह है कि सारी बीमारियां उसके दूधसे जाती रहै हैं ॥

**भेड़का दूध॥** मीठाहै दुबला करैहै चिकनाहै बाय
को कफको हरैहै भारीहै जो खांसी बायसे होनरीसे
बायमें अच्छाहै॥ **भैंसका दूध॥** मीठाहै पुष्टहै ब
लकरैहै चिकनाहै भारीहै नींदको बीर्यको करताहै ठं
डाहै बहुत अभिष्यंदीहै अग्निको हरैहै॥ **स्त्रीका दूध**
हलकाहै ठंडाहै दीपनहै बायको पित्तको जीतैहै नेत्रदु
ईको दूरकरताहै नासके लेनेसे॥ **ऊंटनीका दूध॥**
रूखाहै बहुत गरमहै सलौनाहै हलकाहै बायको क
फको अफारेको कृमको सूजनको उदररोग को बवासी
रको इतने रोगोंको फ़ायदा करताहै॥ **हथनीका दूध**
मीठाहै बलकरैहै नेत्रोंको नफ़ाकरैहै ठंडाहै भारीहै गर
महै रूखाहै सलोनाहै हलकाहै दीपनहै कृमको कुष्ठको
कफको अफारेको सूजनको उदररोगको दूरकरताहै
**घोड़ीका दूध॥** गरमहै रूखाहै बलकरैहै सूजनको
बायको नफ़ाकरैहै एक खुरे जानवरोंका सबका दूध
सलोनाहै खट्टाहै हलकाहै धारका गरम होयसो दीपन
है बलकरताहै हलकाहै ठंडाहै त्रिदोषको हरैहै और
धारासीतभी वैसाहीहै अमृतकी तुल्यहै त्रिदोषको जीतै

धारागरमगायकाअच्छा धाराशीनभैंसकाअच्छा औ
रायकेठंडाकियाहुवाबकरीका अच्छा औरयया कुम्प्रा
पित्तकोजीतेहै औरगायकेगरमकरके पीवेतो कफको वा
यको हरताहै बहुत औटायाहोतो भारीहै चिकना है पु
ष्टहै बलकोबढ़ावेहै आमबातकोपैदाकरैहै अभिष्यं
दीहै बहुत भारीहै और स्त्रीकाकच्चादूधवैसाहीहै और
पक्का त्रिदोषको करताहै प्रभातकादूधपीवना कबज़
करैहै भारीहै पुष्टहै और रात्रिकेदूधपीवनेमें सिवाय
गुणहैं व्यायामकरनाम दोषोंको व्यायामको मांदगी
को दूरकरैहै बलकारैहै नेत्रोंको गुणकरैहै बायको पित्त
को दूरकरैहै बहुत धूपसेजोतचाहोय अथवा यामकिया
होय अथवा आगसे तायाहै होयतोदूधपीवनामनाहै
और जिसदूधकारंगबिगड़गयाहोय याहुर्गंधहोगईहो
घटाहो यालोनपड़ेसे फटगयाहोय सोभी पीवनामनाहै
कुष्टआदिरोगोंकोबढ़ावैहै और दूधकेऊपर औटायेसे
मलाईजोहोजायहै उसको संतानिका कहेहैं सोभारी
हेठंडीहै पुष्टहै पित्तको लोहूको वायको दूरकरताहै
सातरातकारक्खादूध लोनकामिलादूध नष्टहोजायहै
सोभीबुराहै तुरतकीब्याईगायकादूध पीयूषयन कहा
वैहै और पकेको जलायाहोय तिसको रधिकार्चिका
कहेहैं और बिनापकायेजो नमावेतिसको किलाटकेहैं

सोश्रोजको बढ़ावे है नींदको करे है भारी है कफको क
रे है पुष्ट है दिलको कुछ्वत करै है वायको अग्निको दू
र करता है पुरुष है काबिज़ है इतने गुण हैं ॥ इति
दुग्धवर्गः ॥ दहीके भेद गुण ॥ दहीके तीन
भेद हैं मीठा खट्टा बहुत खट्टा गुण । दही गरम है दीपन
है चिकना है कसैला है कसैला है पचनेमें खट्टा है भारी
है पितको लोहूको सूजनको चरबीको कफको पैदा
करै है सुजाकको जुकामको सलांगको विषमज्वर
को अगोसारको अतीसारको अरुचिको दुर्बलको
गुणकरै है बल बढ़ावे है मंदतीनों दोषोंको पैदा करे है
और मीठा बायको पितको जीते है खट्टा पितको लोहू
को कफको पैदा करै है खट्टा पितको पैदा करे है खट्टा
मीठाके गुण तुल्य हैं ॥ गायको दही ॥ उनमहै
बल करै है पचनेके समें मीठा है भोजनपै रुचि करावे है
दीपन है तर है पुष्टाई करे है वायको दूर करता है ॥
बकरीको दही ॥ उनमहै काबिज़ है हलका है त्रिदो
षको हरे दमको खांसीको बवासीरको तर्दको अच्छा है
और दीपन है भेड़को दही ॥ अभिष्यंदी है पचनेके समें
मीठा है ॥ भैंसको दही ॥ बायको पितको जीते है पुष्ट
है पचनेमें मीठा है भारी है लोहूको बिगाड़े है ॥ खीका
दही ॥ बलकरै है पचनेमें मीठा है आंखोंको अच्छा है ॥

अग्निकोबढ़ावैहै॥ रुयनीकारुही॥ कसैलाहै
वायकोजीतेहै अंटनीकादही॥ पचनेमेंकड़वाहै।
भेदीहै षारीहै षट्टाहै उदररोगकोकुष्टको ववासीरको।
शूलकोकवजको वायकोशमकोहरेहै घोड़ीको आदि
लेके एकखुरेजानवरोंकादही रूषाहै अभिष्यंदीहै दोषों
कोहरेहै दीपनहै मीठाहै नेत्रोंको गुणकरेहै वायकोक
फको मूत्रको पैदाकरेहै और सारेदह्यों में गायकादही
बहुतश्रेष्ठहै और दहीनरहैं बायको हरेहैं कफकोपै
दाकरेंहैं भारीहैंबलऔर पुष्टकरेंहैं कफकोपैदाकरें
है पित्तकोबहुतनहींपैदाकरता औरयेदह्यकाजमाया
हुआभोजनपेरुचि उपजावेहै नरहैगुणदाईहै पित्तको
कफको हरेहै सबधातोंको औरबलकोबढ़ावैहै औरछा
वारुकाविजहै कसैलाहैपित्तकोहरेहै हलकाहै दी
पनहै ग्राबेकरे है संग्रहणीकोदूरकरताहै षांडकेसाथ
दहीश्रेष्ठहै प्यासकोपित्तकोदाहकोदाहको जीतेहै।
गुड़केसाथवायकोजीतेहै बलकरेहै पुष्टहै भारीहै बसंत
शरद। ग्रीष्मऋतुमें दहीमनेहै औरहेमंत शिशिर बर्षा
ऋतुमें गुणकारकहै और सोजाकमें अरुचिमें दुबलापन
मे शीतांगमें बिषमज्वरमें अतीसारमें जुकाममें इनमें दि
नमेंदहीखानाअच्छाहै रात्रिकेसमै दहीपानी षीव मिला
हुवाअच्छाहै। इतिदधिवर्गः अथछाछगुण

और रसको बिलोयके और रससमेत रहीमें आधीपानी मिलै तिसको छाछनाम कहतेहैं छाछकाविज्ञहै कसैलाहै षट्टीहै मीठीहै दीपनहै हलकीहै गरमहै बलकोरै है पुरुकहै बायको दूरकरैहै सजनको बिषको छर्द को प्रसेकको बिषमज्वरको इतनेरोगोंको जीतेहै पांडुरोगको चरबीको संग्रहणीको बवासीरको मूत्र ग्रहको भगंदरको इतनेरोगोंकोहरतीहै प्रमेहको। अतीसारको शूलको बायतिल्लीको कफको कृमको। श्वित्रको कोढको तृष्णाको उदररोगको अरुचिको इत ने रोगोंको हरतीहै निदाघमें शरदमें दुबलापनमें भ्रममें मूर्छामें पित्तमेंलोहूके रोगमें शोषमें इनमें छाछबहुत बुरीहै जैसेमें संग्रहणीको बवासीरको कफको बायके रोगोंको सोतके बंधहोनेमें मंदाग्निमें छाछअमृतके तुल्यहै छाछसब मीठीकफको हरैहै बायपित्तको हरैहै षट्टीबायको हरैहै लोहूवीपित्तकोकोपकरैहै बायकेवास्ते षट्टीछाछसेंधानोनमिलीहुई और पित्त केवास्ते मीठीषांडकेसाथपीवै औरकफमें त्रिकुटऔर जवाषाराभिलाकेतो गुणकरैहै और घीसमेत छाछ प थ्यहै और थोड़ाघीव जिसमेंरहाहोबहुतगाढीहै भारीहै कफकोदूरकरतीहै औरजैसेजिसदूधकि रहीमें गुणहैं वैसे उसकी छाछमें गुणहैं॥ इतितक्रवर्गः॥

अथनवनीतवर्गः ॥ औरदहीके मथनेमें जो माषन निकसेहै तिसको नवनीत कहेहैं नवनीत हलकाहै काबिज़है मीठाहै ठंडाहै बुद्धिको बढावेहै कसेलाहै। षट्टाहै पुष्टहै पित्तको बायको हरैहै अग्निको बढावैहै नेत्रोंको गुणकरैहै क्षयको बवासीरको फोड़ाको षांसीको दूरकरैहै तिसमाषनकोनिकसे हुएबहुत देर हुईहो सोभारीहै चरबीको कफको पैदाकरैहै सोजनको दूर करैहै बलकरैहै पुष्टकरैहै औरबालकोंको अमृत कीसमानहै दूधसे उठाया हुवाबहुत चिकनाहै आंषोंको गुणकरैहै रक्तपित्तको जीतेहै पुष्टाईकरै बलकरै ग्राहीहै मीठाहै ठंडाहै इतनेगुण नवनीतमे हैं ॥

इतिनवनीतवर्गः अथघृतवर्गः ॥ घृत। आज्य हवि। सर्पि। आधार। अमृत। गुण॥ घीवरसायनहै मीठाहै। नेत्रोंको गुणकरैहै भारीहै दीपनहै ठंडाहै जहरको हरैहै बायको पित्तको दूरकरताहै थोड़ा अभिष्यंदी है कांतिको ओजको तेजको रंगको बढावेहै बुद्धिको पैदाकरैहै उदावर्त ज्वरको उन्मादको शूलको अफारेको फोड़ेको दूरकरताहै चिकनाहै कफको पैदाकरैहै क्षयीको विसर्पको लोहूको दूरकरताहै दूधसेजो घीवहुवाहोय सोकाबिज़है ठंडाहै आंषोंकेरोगोंको दूरकरैहै पित्तको दाहको लोहूको मस्को मूर्छाको।

भ्रमको वायको हरताहै और पुराना पचनेके समयक
उवाहै तीनो दोषोंको हरताहै कानके सिरके नेत्रके दर्द
को खोताहै कुष्ठको मृगीको सूजनको भगके रोगोंको
ज्वरको दमेको बवासीरको गुल्मको पीनसको दूरक
रताहै दीपनहै वायको नस्यको कामको अच्छा करैहै
घीवके मंडके भीघीवकीतुल्यगुण करैहैं तेजहै हल
काहै सरहै जो घीवके सबरसके ऊपरका होयउसे कोक
हतेहैं तेजहै गरमहै हलकाहै जिससे महाघृत गुणोंमे
श्रेष्ठहै और जैसा जिसके दूधका गुणहै वैसाही उसके
घृतका गुणहै। सबसे गायका घृत श्रेष्ठहै भेड़का नेष्टहै
इतिघृतवर्गः अथतैलवर्गः॥ तेल गरमहै भारी
है बलको रंगको करैहै पुष्टहै बिकासीहै बिशदहै मीठा
है पचनेके समय सूक्ष्महै कसैलाहै तेजहै कफको बा
यको दूरकरताहै कड़वाहै रक्तपित्तको कानके भगके
सिरके दर्दको और नेत्रके रोगको दूरकरताहै और मथा
हुआ टूटेको जोड़ताहै और सर्पादिकके बिषको हरैहै
और ज़खमको अग्निके दाहको पथ्यहै पीनेसे मलनेसे
भी घीवतो पकाहुवा एकबरससे उपरांत हीनबीर्य होजा
ताहै और तेल पकाया हुवा अथवा बिनपकाया हुवा बहु
तपुराणा बहुतगुणदाईहै॥ इतितिलतैलगुणाः
अथएरंडतैलगुणाः॥ अरंडकातेलमीठाहै गरमहै

शोथनहै शोधनहै बायको अरुरोगको अफारेको गो
लेको सप्प्रीला कमरकेपकड़ जानेको बायको नाहको
सूजनको मूलको कष्टकं फायस करताहै पुष्टहै रुचिउ
पजावेहै बुद्धिको कांनिको बलको पैदा करताहै कसे
लाहै भगको वीर्यको शुद्धकरताहै और सूक्ष्महै अरंड
तेलमेंइत्ने गुणहैं ॥ इतिएरंडतेलगुणाः पत्थीको
पीलूका हस्तीमूतका जमालगोटेकीजड़का मूलकका
शिम्मूका। औरनीमका अलसीका करंजवेका आक
का रुसकाराणका इंगुदीशंखिनीकपिल्लकका बिल्ल
कका माल्कंगनीका कुसुंभका सरसोंका इत्नोंका
तेलसबर्बलहै पवनकेसमें कड़वाहै तेजहै सरहै ह
लकाहै कुष्टकफ प्रमेहमूर्छामदकृमको हरैहै ॥
अथनिंबादीनांतैलगुणः अथअलसीतेल
गुणा ॥ अलसीकातेल अग्निको पैदाकरैहै चिकना
है गरमहै कफको पित्तको हरेहै पवनकेसमें कड़वाहै
आखोंको गुणकरताहै बायको हरताहै और भारीहै
इति अलसीतेल ॥ अथ सरसोंतेलगुणः ॥ स
रसोंकातेल कृमको दूरकरता है कुष्टको षुजली को
दूरकरता है हलकाहै पित्तको लोहकेरोगोंको दूरक
रताहै और विषको हरताहै कांनके शिरकेरोगोंको दूर
करताहै ॥ अथकुसुंभ॰ अथमालकांगनीतै

मालकांगनीकातेल पितकोपैदाकरताहै बुद्धिकोस्मृ
तिकोबढ़ावेहै कुसुंभकातेल कड़वाहै नेत्रोंको बुराहै ब
लकरताहै बायकोदूरकरताहै तेजहै बिदाहीहै गरल
है तीनोंदोषोंको दूरकरताहै॥ अथनारियलतेल॰
नारियलकातेल पितको बायको हरताहै बालोंकोब
ढ़ावेहै भारीहै और कफको करताहै ठंढाहै इतिनारियल
सिंसपातैल:। सिंसपाकातेल भारीहै सरलहै
बायकेरोगोंको जीतेहै कसैलाहै कड़वाहै तेजहै दुष्ट
घोड़ेकोदूरकरताहै बानररक्तको बिषको कफको खुज
लीको कुष्टबायकोहरैहै॥ अथभिलावातेल॥
भिलावेकातेलकसैलाहै गरमहै मीठाहै तेजहै चरबी
को कुष्टको त्रिदोषकोलोहूको प्रमेहको क्रमको हरे
है॥ अथपलासपधूकपाटलातेल:॥ पला
सऔरपटोलकातेल कसैलाहै मीठाहै दाहको और
पितको कफकेरोगोंको हरेहै इसतेलमेंइतनेगुणहै
अथकूष्मांडादितैल:॥ पेठा। त्रिपुस। बीरखंबिका
लिंगतिक्तक:। रुतापथाल। जीवंती। इनकातेलभारीहै
पचनेमेंमीठाहै ठंडाहै मूत्रकीबढ़ावेहै अभिष्यंदीहै कफ
बायकोपैदाकरै बायपितकोहरै॥ अथएकैषिक
तैल:॥ एकैषिकातेलठंडाहै पितकोदूरकरताहै कफ
बायकोपैदाकरैहै॥ अथयवतिक्तातेल:॥ यव

तिक्ततेलतेज़है रसायनहै दीपनहै लेषनहै बुद्धिको बढ़ा
वैहै पथ्यहै। तीनोंदोषोंकोदूरकरताहै। अथअम्बाके
अंबकीगुठलीकातेल सरहैतेजहै। मीठाहैरूषाहै बिश
दहै। सुगंधितहै अंबकेतेलमें इतनेगुणहैं यहस्थावर
तेलबायकेदूरकरनेवालेहैं इनसबतेलोंमें तिलोंकातेल
श्रेष्ठहै। औरगांवकेजानवरोंकी चरबीकातेलभारीहै
मीठाहैगरमहै बायकानाशकरताहै औरजंगलकेएक
खुरेजानवरोंकीचरबीकातेल कसैलाहै हलकाहै ठंढा
है रक्तपित्तको दूरकरताहै घीव और तेल और चरबी औ
रमज्जाबायकोदूरकरनेवाली हैं पहलेसे दूसरा अधि
है॥ इतितैलबर्गः॥ समाप्तं। अथमधवर्गः॥

मैंघ मदिरा सुरा संज्ञा। मदिरा। बारुणी। गधोतमा। बल्या
देवसृष्टा। बरुणी। गुण। पित्तकोपैदाकरैहै सरहैरोचन
है दीपनहै बिदाही है मनको बिषकोपैदाकरैहै तेजहै
कफको बायको खोवैहै बिधिसे भोजनके साथ पीवैतो
अमृतकीसमानहै नरहै पीवैतो रोगोंकोपैदाकरती है।
बहुतपीवैतो बिषकोसमानहै और अंगूरकी मदिरा बि
दाही नहीं है रक्तपित्तकी बीमारीमें गुणकरैहै बलपुष्टको
करतीहै तहको बवासीरको दूरकरतीहै और महुवेकी
मदिरामें उससे थोड़े गुणहैं खजूरकी मदिराबादीहै और
बैसीही सालीको पीसीहुई की दारूहै रूखिकारैहै कफको

हरती है हलकी है पुनर्नवा और शालीकी दारु भारी है।
आयुर्दा बढ़ावे है। पुष्ट है चरबीको कफको पैदा करती है
काबिज है सोजनको गोलाको बवासीरको संग्रहणी
को सोजाकको हरती है और सुराकी तरह वारुणीभी
हलकी है पीनसको अफारेको शूलको हरती है इसमें
मंडकी सुरा अच्छी है और उसमें कादंबरी और जगल उस
में नीची है और जगलीको भांति मदोघना है और जगली
का सार पक्कास कहावे है सो मनको प्रसन्न करती है।
अफारा गोला बवासीरको छर्द्दको अरोचकको बाय
को हरे है दीपन है अफारेको हृदयके दर्दको शूलको दूर
करती है और कादंबरी भारी है पुष्ट है दीपनी है भारी है
बादी है जगल कफको दूर करती है काबिज है सोजनको
बवासीरको संग्रहनी को इनको दूर करता है और मेदक
मीठा है बलकारे है बंधेज करता है ठंडा है भारी है वक्कसनी
बिना छालकी काबिज है बायको बढ़ावे है किसवक बा
यको दूर करता है दिलकी आगुणकारे है भारी है और इक्ष
आदिसुरा पांडुरोगको सूजनको बवासीर पिन ली हको
कफकुष्ठको जीते है कुछ एक बायको करे है दीपनी है
रोचनी है हलकी है और जवोंको पीसके करी हुई दारु यव
सुरा कहावे है और कांजी और की हली और मैरेय ये
धानोंकी आसव और सुरा दोनों एकभाजनमें रखे उसको

संधान करते हैं और धावे के फूल और गुड़ और धानों का पानी इसकी बनी हुई भारी है और सबसुरा रूखी है काबिज़ है त्रिदोष को करती है और कोहली उसी को तुल्य है पुष्ट है अग्नि को मंदकरती है और मैरेय पुष्ट है बलदाई है भारी है सर है और सबसे बनी जो मादिरा होय उसको मधूलक कहे हैं सो भारी है मीठी है चिकनी है वीर्य और कफ को पैदा करता है और सकेरा को शेषन है मीठी है पाचन है रोचन है हलकी है स्त्री बिलास करने वाली है बाय को शोक को बस्तिबिकार को दूर करती है और मध्वासव हलकी है चुरका है कुष्ठ को प्रमेह को विष को दूर करता है गुड़ की अग्नि को बढ़ावती है रंग को बल को बढ़ावे है कड़वी है और रातक्कवा पुष्ट है मीठी है मन्न को बिषा को बाय को खोले है और इखके रस को पकाय के करनो उसको सीधु कहते हैं और काचे रस की बनी हुई शीतरस कहावे है सो श्रेष्ठ है आवाज को साफ करता है अग्नि को बल को रंग कूं बढ़ावे है बाय को पित को करती है दिल की कुश्चन करे है चिकनी है रोचन है कबज़ को चरबी को सूजन को बवासीर को शोक को उदररोग को कफ को जीते है और शीतरस में इससे थोड़े गुण है लेखन है और जामन का रस और एड़की काबिज है आमवध्य है कसैली है बादी है अरिष्ट है और आसव और सीधु के गुण और कर्मों को जान के बरते है।

श्रौरनईदारूश्रभिष्यंदीहै त्रिदोषकोपैदाकरनेवालीहै
सरहै दिलकोश्रगुणकरतीहै सुखदहै दाहीहै दुर्गंधीहै
निर्मलहै भारीहै निर्मलहै गरमहै क्रमकोकफकोवीर्य
कोहरैहै दिलकोनफ़ाकरताहै गुणभरीहै हलकीहै सोतों
कोसुद्धकरताहै सतोगुणवाले दारूपीके गावैहैं श्रौर रजो
गुणीपुरुषोंकोसाहसवढ़ावैहै श्रौरतामसीखोटेकरमक
रा बहुतसोवैं॥ इतिमद्यभेदः श्रथतन्त्रवर्गः॥
सुफेदकफकोदूरकरतीहै तेजहै गरमहै हलकीहै रोचन
हैपाचनहै पांडुरोगकोक्रमकोदूरकरतीहै दुरकहै भेदन
है रक्तपित्तकोकरैहै गुड़कीलाल श्रौरसुपेदखार पहली
सेदूसरीबहुतभारीहै श्रभिष्यंदीहै श्रौर सौबीरश्रौरमा
रमालत्रिदोषकोजीतेहै कांजीकोपाचनहै रोचनहै हल
कीहै श्रौरसौबीर कच्चीवापक्कीजवोंकेतुषोंकीश्रौरगेहूं
कीसुराखट्टीसौबीरकहावैहै तुषोंकेपानीकोदीपनहै
दिलकोकुशतकरैहै पांडुरोगकोक्रमकोदूरकरताहै
सौबीरकासंग्रहणीको बवासीरकोदूरकरताहै भेदनहै
दीपनहै हलकाहै स्परससेंयहकोहरताहै स्परससेदाह
कोहरैहैं पीवनेसेबायकोदूरकरतीहै॥ इतिमद्यभेदः
श्रथमूत्रवर्गः॥ मूत्रगायका हाथीका भैसका घोड़का
बकरीका भेड़का गधेका ऊंटका श्रादमीका येसबपाचन
हैंदीपनहैं हलकेहैं सलोनेहैं खट्टेहैं तेजहैं सुष्कहैं सोतों

कोशुद्धकरताहै पितकोपैदाकरताहै कड़वे हैं इनिको
कुपितकरताहै भेदीहै बायकोदूरकरताहै बवासीरको
गोलेको शोथकोउदरको कफको क्रमको कुष्ठको पांडुरोग
कोअफारेको बिषको शूलको अरुचिकोदूरकरताहै गौ
मूत्रसारेमूत्रजोगोमें अच्छाहै हाथीका मूत्र बिषकाबवा
सीरको कुष्ठको गोलोंको क्रमको जीतिहै भैंसकामूत्र
सोजनको गुल्मको बवासीरको पांडुरोगको प्रमेहको
घोताहै घोड़काभेदीहै कफकोदद्रुको क्रमको जीतेहै
बकरीकागोलेको बिषको सूजनको प्रमेको कमलबाय
कोपांडुरोगको हरताहै भेड़को सूजनको गोलेको ब
वासीरको प्रमेहको बिषाके विबंधको दूरकरेहै गधेका
काबिजहै प्रमेह कुष्ठ उन्मादक्रमको हरताहै ऊंटकासो
जनको क्रम शूलउदररोगकोदूरकरेहै आदमीकामूत्र
जहरदूरकरेहै सेवनकरे नित्यतो रसायनहै गायबकरीभैं
सकामूत्र स्त्रियोंको रसायनहै बोरणथाऊंट भैंस घोड़ेका
मूत्रमरदोंकोहितुहै॥ इतिमूत्रवर्गः॥ इतिश्रीम
दनपालबिरचितेनिघंटौद्रव्यवर्णनोनामाष्ट
मवर्गः॥ अथइक्षुनाम॥ इक्षु। महारस। वेणुनिः
सृत। गुडपत्रक। मधुराज। मधुतृण। गंडीर। मधुपत्रक।
दृढमूल। लोहितेक्षु। पौंड्रक। पंड्रक। रसाल। सुकुमार।
कांतारक। भारक। गुण॥ मीठाहै भारीहै ठंढाहै पुष्टहैचिकना

बलदाई है जीवन है वायपित्तको खोताहै मूत्रको कृपको
कफको पैदा करताहै जड़ उसकी बहुत मीठी है और बीच
का थोड़ा मीठा है और गांठ सलोना है और लालगांडा भा
री है ठंढी है पुष्ट है कफ पैदा करता है सफेद काना भी वैसाही
है बायको करै है ठंढा है और कौशकार भारी है ठंढा है रक्त
पितको तृस्नाको दूरकरै है खचोपत्र नीलापौंडा नेपाल दीर्घ
पत्रक बारी है कफ पित्तको हरता है और इनका पीड़ा हुवा
जो रस है सो पित्तको और लोहूको खोता है यति ईख॥
अथ गुड़गुण॥ गुदाके रोगको कमलवायको शोककूं
प्रमेह गोला पांडुरोग हलीमक वायपित्त लोहू राजयक्ष्मा
इतने रोगोंको गुड़ खोता है भोजनकी रुचि पैदा करता है
और खांसी शोकमें और गुदाके निकसनेको खोता है। गुड़
औटायके बनाई होय उसको जवासशर्करा कहते हैं और
फूलोंकी पुष्पासिता कहावे है और गुड़के रसकी जो
होय उसको मत्स्यंडी कहे हैं काबिज़ है बलकरै है भारी है
पित्तको वायको खोता है और सितोपला सर है भारी है
वायको पित्तको हरै ठंढी है॥ निचातनाम॥ खंडसर्ष
रुचिकरै है पुष्ट है और बलकरता है॥ खंडनाम॥ नि
माघवी शर्करा पुरक है कफको पित्तको हरै है भारी है॥
मधुशर्करानाम॥ यवासाशर्करा ठंढी है कफ पित्तको
जीते है पुष्पासिता रिलको कुपत्त करै है रक्तपित्तको हरै

भारीहै॥ पुष्पबासितशर्करानाम॥ राब भारीहै अभिष्यंदीहै दोषलहै मूत्रकोशोधैहै राबनाम॥ मधूकफाणतराब मूत्राशयको औगुणकरैहै बायकूं पित्तकोपैदाकरैहै औरमधूकराछिरैहैको गुणकरैहै गुडीखारी। गुडमीठा। बायकोपित्तको अग्निकोकरैहै सरहै बलकरैहै कमकोकफको करताहै मूत्रको लोह कोशुध्दकरताहै पुरानागुड पुष्टहै हनकाहैपथ्यहै अग्निकोकरैहै पुष्टाईकरताहै॥ इतिगुडबर्गः॥ ईखको जितनी बस्तुहैं तिनमें जितनी निर्मलहों उतनीही गुणदायकहै प्यासको दाहको मूर्छाको पित्तको लोह कोबिषको मोहको हरैहै ठंडीहै भारीहै मीठाहै कुबती है चिकनी बायको हरैहै सरहै॥ इतिइक्षुबर्गः पुष्प पाठांतरं। शर्करामांनाडो। ख्यममत्स्यंडिका शर्करा। सुरभिसिता अहिछत्रा। सिकता। सुधास्नुग्धा। सितोपला। गुण॥ मीठीहै ईखको कुचन करतीहै बहुतभारीन हीहै। बहुत हलकीभीनहीं है बायको पित्तको हरतीहै ठंडीहै तरहै शर्कराठंडीहै पचनेमें मीठाहै सरहै दाहको प्यासको छर्द मूर्छा कमको हरतीहै बायको कफको पैदाकरतीहै पुष्टहै नरमाको अतीसारको जीतैहै नेत्रोंको गुणकरतीहै राबभारीहै अभिष्यंदीहै पुष्टहै कफकोबीर्यको पैदाकरतीहै बलकरतीहै भारीहै तरहै।

बायको दूरकरती है मूत्रको सोधे है पित्तको बहुत न
हीं करती है। चरबीको और कफको कमको करे है भा
री है गुड़ पित्तको दूरकरता है मीठा है बायको हरता है
लोहूको दूरकरे है और पुराना गुड़ बहुत गुणदाई है
पथ्य है खारी है मीठा है बुद्धिबढ़ावे है सोज़ाकको दूर
करता है लोहूको पित्तको शुद्धकरता है बायको हरता
है कफको चरबीको हरता है पुष्ट है बल करता है ज्व
रको हरे है मत्स्यंडी शर्करा खंड बिधली ठंढी है तर है
बहुत भारी है उत्तरोत्तर रक्तपित्तको दूरकरता है प्यास
को भ्रमको नाशकरता है जितना जितना मिठास जिसमें
अधिक होय तितनी तितनी चिकनी और भारी होती है

शर्करागुड़खंडकाकसगुणनामकथ्यते ॥

शर्करायामधुभवा। माधवी। मधुशर्करा। माक्षीकश
र्करा ।शौन्यका। मद्गोद्भवा॥ अलग २ गुण
कहते हैं॥ मधुशर्करा छर्द अतीसारको दूरकरती है
शर्करा मीठी है दिलको कुव्वत करती है कसैली है तेज है
कफको दूरकरती है रक्तबातरहको हरती है छर्दको
मूर्छाको प्यासको हरती है खुरक है मीठा है सब बाय
को पित्तको करती है कफको हरती है पचनेमें भी मीठा है
कसैला है और सबाशयको औ गुण करती है॥ अथ मधु
प्रभेद॥ गांठफूलोंके रसको भी शहत बिक कहते हैं।

जिसकेइतनेभेदहैं माक्षिक पैत्तिक क्षौद्र भ्रामर।माक्षि
कतेलकीतरहकाहोयहै औरपैत्तिक घीकीतरहका
औरक्षौद्र भूरेरंगका भ्रामर फटककीतरहकाहोयहै
गुण।।शहतठंडाहै हलकाहै रूषाहै काबिज़है लेषनहै
नेत्रोंकोगुणकरैहै षेपनहै फोड़ेको साफकरताहै भर
लावेहै रंगकोअच्छाकरताहै बुद्धिकोबढावेहै पुष्टहै
रोचनहै कुष्टकोबवासीरकोषांसीको पित्तलोहूकोप
प्रमेहकृमिमद प्यासछर्दि हुचकीअतीसार हिलकीप
काइकोदाहकोक्षयकोदूरकरताहै वातलहै।। मधुके
अलगअलगनामगुण।।मधुनेत्रोंकेरोगकोहर्ता
है पौत्तिक हलकाहै षुश्कहै गरमहै पित्त दाहलोहू वाय
कोपैदाकरैहै क्षौद्रमाक्षिककीतुल्यहै विशेषकरिकेप्र
मेहकोदूरकरे भ्रामररक्तपित्तकोदूरकरताहै मूत्रकोथो
ड़ाकरताहै भारीहै नयाशहतअभिष्यन्दीहै तरहै कफको
हरैहै पुरानाकाबिजहै षुश्कहै चरबीको दूरकरताहै ले
षनहै औरविषयुक्त फूलोंकेरसका जोशहतसो विषकी
समानहै अग्निसेपकायाजोरसहै शहतसोयोगनरकोह
रताहै गरमीकेसमैमें औरगरमदेशमें गरमऔषधोंसे मिला
केछर्दिमें गरमकरकेनदेनाचाहिये।। ५।। मधुकेगु
मदन।मधुजशिक्थ मधूच्छिष्ट मधुच्छित मदनमीठाहै
नेरहभूतकोदूरकरताहै फोड़ेकोभरलावेहै टूटेकोजोडै

है।वायकोकुष्ट विसर्पलोहूकोदूरकरताहै॥ इति श्रीमदनपालविरचितेमदनविनोदेनिघंटौमधुवर्गःनवमः॥ ९ ॥ अथशालीना-शाली रक्तशाली।व्रीहि।षष्टिक।और मूंगकोआदि लेकिडुदलिऔरशेवकंसकोआदिलेकेतणधान्यक और सूधान्यकऔरकुधान्यकऔरछ्छकधान्यजवको आदिलेकेहैं। रक्तशालीलोहितशाली गरुड़ शकनाश न सुगंधक महाशाली कलम।कलामल।रक्तशाली दीर्घमूक।पुंड्रमहिषमस्तक।तूणंबद्र।महाशाली पुंडरीक।प्रमोदक।शुभ्यारक।शीतभीरु।शकुहृत।पांडुगौर।सारिवारव्य।रोध्रपुष्प।सुगंधिक।हायन।दीर्घनाल।महासूषक।दूष॥ शालीगुण॥ शालीमीठे हैं।तरहैं।बलकरैहै विष्टंभोरीकरैहैं पित्तको दूरकरैहैं घोरीकबजकरतेहैं कफपैदाकरैहैं मूत्रपैदाकरैहैं हलकेहैं ठंडेहैं।और रक्तशाली तिनमें श्रेष्ठहैं बलकरैहै रंगअछ्छाकरैहैं त्रिदोषकोजीतेहैं।आंखोंकोगुणकरैहै मूत्रबहुतलावैहैं वीर्य बढावैहैं प्यासकोज्वरको खोवैहैं विषको फोड़ेको खोवेहैं।और महाशाली बहुत बलदाईहै रक्तशालीकी तुल्यहै।और षष्टिकमीठेठंडेहैं हलकेहैं पुरीषकोबंदकरैहैं वायपित्तको खोवैहैं।और गुणशालीकेसेहैं।और षष्टिककोगुकपौत प्रमोदक

मुकुंदक महाषष्टिक केदार पुष्पा कुरुवक इनको आ
दिलेके इनसबमें षष्टिक श्रेष्ठहै और ये सब नलकेहैं
चिकनेहैं त्रिदोषको जीतेहैं पचनेमें मीठेहैं काबिजहैं
बलकरेहैं रक्तशाली की तुल्य गुणहैं और कृष्ण ब्रीहि
नरिक कुकुंयंडक पाटल शालामुख शालीधान्य नंदी
जंतुमुख। ब्रीहय मीठेहैं ठंडेहै षष्टिका की समान गुणहैं
और इनमें कृष्णब्रीहि श्रेष्ठहै और जलीभूमिमें जो चावल
पैदाहोय सो हलकाहै पुरकहै कफको दूर करताहै और
स्थलमें जो उपजे सो मीठाहै पित्त कफको खोवे वायको
अग्निको बढावे केदार वायपित्तको खोवे भारीहै कफकूं
वीर्यको बढावेहै रोप्य और अतिरोप्य हलकेहैं मलावे
हैं और छिन्नरूढ ठंडेहैं पुरकहै पित्तको खोवें हलकेहैं॥
इतिशालीभेद॥ अथगेहूंनाम॥ गोधूम। सुमना
लुड। मधूली। पिपीलक। नंदीमुख। स्वल्पगोधूम। बोके
श। बोस्यक। गुण। मीठाहै। ठंडाहै वायको पित्तको षोवे
भारीहै कफको वीर्यको पैदाकरताहै बलकारीहै चिक
नाहै टूटेको जोडेहै और मोटेसे छोटेमें थोडे गुणहैं॥ जौ
केनाम॥ यव। मुची। तीक्ष्णशूक। निःशूक। अतियव
गुण। जौकसैलाहै मीठाहै ठंडाहै पित्त कफ लोहूको जीते
है और कोठेमें पथ्यहै। तिलोंकी तरह रूखाहै बुद्धिको
अग्निको बढावेहै लेखनहै विष्ठाको बंधकरे स्वराप्यमें

को दूर करता है बहुत बाय मल पैदा करे है रंग को स्वच्छ
करे है लेपहार है अनियव में इससे थोड़े गुण हैं ॥ इतियव
अथ सैंबनाम ॥ सैंब । मूंग । चणा । उर्दसालीन । मटर ।
मसूर । चक्रमांगल्य । मोठ । त्रिपुर आदि ये के दो दालवा
ले जो अन्न हैं मीठे हैं रूखे हैं कसैले हैं पचने में कड़वे हैं बा
त ले हैं कफ को पित्त को दूर करते हैं मल मूत्र को बंध करते
हैं मूंग और मसूर बिना सारे अफारा करते हैं सैंब विषभी
है प्रमेह दृष्टि को दूर करे है बाय पित्त को पैदा करे है निर्मल
हैं भारी है दिल को कुवत करे पुष्ट करे है पचने में कड़वी है का
ली सुफेद कई भांत की हो है ॥ अथ मूंग नाम ॥ मूंग
बलाट । मांगल्य । हरी सार है पीली श्वेत बस कम और मा
धव वनमुद्ग । तूबर । मुकु । और खाडक । गुण ॥ मूंग पुष्ट करे
हलकी है कावि ज है कफ को पित्त को हरे है ठंडी है मीठी है ।
थोरी बाय पैदा करे नेत्रों को गुण करे बनमूंग भी इसी की
तुल्य है । हरी मूंग श्रेष्ठ है और इसका साग तेज है उत्तम है ॥
अथ उर्दनाम ॥ माष । वीर्यकर । धारी चंचल । राजमाष क
गुण ॥ उर्द भारी हैं मीठा है पचने में चिकना है पुष्ट है बाय को
दूर करता है गरम है बल वीर्य को पैदा करे है कुवत करे है
मल मूत्र को जुदा करे है स्त्रियों के स्तन में दूध को बढ़ावे है ख
रबी पित्त कफ को पैदा करे है बवासीर को लकवे को मूल
को शूलन रोगों को खोवे है ॥ अथ राजउड़द ॥ राजउड़द

मीठाहै धुरकाहै कसैलाहै हलकाहै काबिजहै बादीहै सानोमें सुगंधबढावेहै बिषाको बहुतपैदाकरैहै रुचि पैदाकरताहै ॥ मोठनाम ॥ मकुष्ठक। मकुष्ट। निष्पाव। बल्लक। गुण। बादीहै धुरकाहै कफको पित्तको हर्त्ती है हलकाहै छर्दको दूरकरैहै पचनेमें मीठा क्रमपैदाकरै ज्वरहरै ॥ निष्पावगुण ॥ निष्पाव बायको पित्तको लोहूको दूरकरै स्तनमें दुग्धबढावे विदाहीहै गरमहै भारीहै सूजनको कफको उत्पन्नकरे वीर्यका नाश करताहै ॥ अथमटरनाम ॥ वर्त्तुल। सतीन। रेणु खल्प। वर्तुल गुण। ठंडाहै काबिजहै कफको पित्तको हरैहै हलकीहै पचनेमें मीठीहै धुरकाहै और रेणुभी उसीकी समानहै ॥ कालाबनघोड़ ॥ कलाय। खंडिक। त्रिपुट। लघुखंडिक गुण ॥ कलाय कफको पित्तको हरताहै काबिजहै ठंडाहै। बहुतबादीहै। त्रिपुटमें भी ऐसेही गुणहैं और उसका साग कफपित्तहरै। अथचणागुण ॥ चणक। हरिमंथ। बाजिमंथ। अश्वजीवन। गुण ॥ ठंडाहै धुरकाहै पित्तको लोहूको कफको हरैहै हलकाहै कसैलाहै बादीहै पुंसत्व का दूरकरताहै ॥ अथमसूरनाम ॥ मसूरिका। मसूर मंगल्या। पांडुरा। गुण ॥ मीठी पचनेमें काबिज ठंडीहै हलकी है कफपित्तको जीतैहै रंगको अच्छाकरैहै साग हलकाहै तनहै ॥ अथकलत्थनाम ॥ कुलत्थ। वक्रिकं चक्र

तालीबनज। गुण। कुलथीकड़वीहै पचनेकेसमय
कफपित लोहूकोकरे हलकीहै बिदाहीहै गरमहै
दमेको षांसीको कफको बायको षोवे है अफारेको
पथरीको षोवे पीनसको दूरकरे पसीनेको बंदकरे
गोला चरबी क्रमको षोवे बनकुलथी ठंडीहै नेत्ररोगको
हरे॥ अथतिलनाम॥ तिल। पूर्त तिलफल। तिल
पिंड। जंतीलोचन। जान। आकों। तुबर। गुण॥ काबिज
है भारीहै मीठाहै चिकनाहै कफको पितको पैदाकरतो
है बलकोदेहै बालोंको बढ़ावेहै स्पर्शमें ठंडाहै फोड़ेकोअ
छाहै मूत्रको घटावेहै बायको हरताहै अग्निको बढ़ावेहै
तिनमें काला तिल श्रेष्ठ है बीर्यको बढ़ावे है और सुपेदम
ध्यमहै और तरहके हीनहैं और तुबरी काबिजहै ठंडीहै
हलकीहै कफको बिषको लोहूकोजीते॥ अलसी
गुण॥ अलसी। मसरण। नीलपुष्पी। चेलुउमा। हुमा
गुण। बीर्यको दृष्टिको हरतीहै चिकनीहै गरमहै बायकू
दूरकरतीहै भारीहै॥ अथकुसुंभ॥ कुसुंभ। पावक
पीत। अलक्त। बस्त्ररंजन। और उसके बीज किरट। लट्टा।
सुश्रापत्र। बर। गुण। बासीहै सोजाककी रक्तपित को
कफको हरताहै और किरट अलसीके समानहै बिशेष
करके बिषको हरे॥ अथसरसोंराई॥ कुसुंभबीज
सर्षप। स्नेहभूनघ्न। तंतुभ। सिद्धार्थ। श्वेतसर्षप। राजिका

आसुरी। राज्ञी। तीक्ष्ण। कृष्णसर्षप। सरसौंकाफलं
बायको खोवैहै तेजहै गरमहै रक्तपित्तको करतो है
कुछ रूषी है अग्निको बढ़ावैहै खुजली कुष्ठको कृम
को दूरकरै राजिका इसहीकी समानहै विशेषकरके ते
जहै। इतिसरसोंराई॥ अथशणनाम॥ शण। मातु
लानी। जंतुन। महाशाण। गुण॥ मातुलानीजठौरीहै भा
रीहै कांबिज़है उसकेफूलपैरैको हरतेहैं॥ अथबा
रहकंगुभेद॥ कंगुण्या। माकनी। वार। वरक। उद्दा
लनर्तक। कराहिका। तोद्रपर्णी। कोद्रव। मधूलिका। नं
दीमुखी। वेणुयवा। प्रियंगू। कोरदूषिक। गवेधका।
नल। नाल। कुमुस्वरस। तृणधान्य। गुण॥ हलकाहै
पचनेमें मीठाहै लेखनहै खुश्कहै गरमहै वात पित्तको
बिगाड़ैहै पीतनंडुलिका। कंगुप्रियंगु। कुवेरी। रक्त
कंगु। मसरी। रक्तकंगु। शोधिका। वीनाक। काकवं
गु। श्यामाक। तृणबीजक। इति॥ सांबकनाम॥
कोदों। कोद्रव। कोरदूषक। उद्दाल। बनकोद्रव। प्रियंगु
गुण। पित्तकोजीतैहै पुष्टहै टूटाजोड़ै भारीहै इतिकोदो
सामकानाम॥ श्यामाक शोषणहै ठंडाहै खुश्कहै
पित्त कफको दूरकरताहै कोद्रवठंढाहै कांबिज़है विष
पित्तकफको जीतैहै यवनाल खेधान्य। जुहूलि। जन
का। नल। गुण। यवनाल मीठाहै ठंडाहै बात पित्त कफकूं

जीतेहै जोन्ही। बजेरी। जुजेरी। बातपित्त कफकोयनी। गवे
धुका। कर्षिणी। गोजिह्वा। कार्षिका। गवेधुका। कड़
वीहै मीठीहै। दुबलाकरे। गिरडिया॥ इतिमदनपा
लबिरचितेमदनबिनोदेनिघंटौधान्यबर्गः
प्रथमः १० आहारनाम॥ आहार। भोजन। ह
ज्यनघा। संवेसन। गुण। आहारबलकोबलकोकरेहै
शिताब और ओजको तेजको स्वरको उत्साहको बुद्धि
कोस्मृतिकोपैदाकरनाहै भक्तमानमंधेस्कातिरसान्न
कूरहादि। बिरोदन। गुण। भातअग्निकोकरनाहै पथ्य
है तर्पणहै मूत्रबहुतलावेहै हलकाहै धोयाहुवागर्महै
बिशदहै गुणदाईहै बिनाधोयाठंडाहै भारीहै पुष्टहै।
कफपैदाकरेहै। भूनेचावलोंकाभातरुचिकोकरेहै
सुगंधहै कफकोजीतेहै हलकाहै और मांसमिला
भात और दालमिलाहुवा चिकनेसाकोंकामिलापुष्ट
है भारीहै कफकोकरेहै और रसमेंमिलाहुवापुष्टहै।
बलकरेहै वायकेज्वरको दूरकरे घोलभातकाबिजहै
संग्रहणीबबासीरश्रमको दूरकरताहै पाचनहैहलकाहै॥
इतिभात। छहगुणे पानी मेंजो औटायाहोयउसको
यवागूकहतेहैं। और चारगुणेपानीमें औटावेउसको वि
लेपीकहेहैं और सिक्थमें मिलेहुए चौदहगुणेमें मिले
हुएकोमंडकहेहैं॥ पेयादिलक्षणं॥ यवागू। काग

काबिजहै प्यासको ज्वरको दूर करताहै बस्तिको मु
द्धकरताहै और विलेपी दीपनहै बलकारी हृद्यहै काबि
जहै हलकीहै फोड़ेको आंखके रोगको पथ्यहै प्यासको
ज्वरको दूर करताहै॥ अथ पेयागुण॥ पेयाकोषको
रोगको जीमचलानेको ज्वरको प्यासको खोवेहै अती
सारको जीतेहै रुचिको बढ़ावेहै अग्निको करताहै हल
काहै मलको मुलायम करे। अथ मंडगुण॥ मं
डकाबिजहै। हलकाहै ठंढाहै दीपनहै बुद्धिको समकर्ता
है पित्तको कफको ज्वरको भ्रमको दूर करताहै॥ अथ
वाट्यमंड लाजामंड गुण॥ भूनेजवोंको औटावे सो
वाट्यमंड कहावेहै और धानकी खीलें औटावे सो लाजा
मंड कहावेहै वाट्यमंड हलकाहै काबिजहै मूलको अफा
रेको त्रिदोषको जीतेहै और परोल पीपलें इसमें मिलाय
के पीवेतो नये ज्वरमें पथ्यहै याजामंड हलकाहै काबिज
है हृद्य पाचन दीपनहै॥ अष्टगुणमंड॥ आधा मूंग चा
वल मिलावे और कछु पकापकावे ओर हींग सेंधानोन मि
लावे और त्रिकुटा मिलावे उसको अष्टगुणमंड कहतेहैं
ज्वरको त्रिदोषको हरताहै लोहूको भूषको बढ़ावेहै प्राण
कोरखैहै बस्तिको शोधहै॥ अथ मूंगयूष॥ दोहल
अन्नका जूषबनावे अठारहगुने पानीमें तिनमें मूंगका यूष
उनमें दीपनहै ठंढाहै हलकाहै फोड़ेको कफको दाहको।

कफको पित्तको ज्वरको लोहूको हरे॥ अथ दाड़िमामलकयूष॥ मूंग और आमका यूष पित्तको कफको जीतेहै भेदनहै प्यासको सहकोहरे ठंडा है मूर्छाको भ्रमको हरे है॥ अथ दाड़िमामलक यूष अनारदाना आमलेका यूष पित्तको बायको हरताहै हलकाहै॥ अथ कुलथी यूष॥ कुलथीका यूष गोलेको बवासीरको कफको बायको पथरीको। तूनी अफरी वरखीको प्रमेहको हरे अग्निको करे सरस्यो संठीमूलकयूष॥ सोंठ कोजड़का यूष गलेके पकनेको कफको ज्वरको रमेको जुकामको षांसीको वरवोको अरुचिको श्रमको हरे॥ अथ चणाकयूष चनेका यूष ठंडा है कसेला है रक्तपित्तको जुकामको षांसीको पित्तको कफको हरताहै॥ अथ मकुयूष मोठकायूष काबिज है कफको पित्तको ज्वरको रवावे हलका है तृप्त करताहै पथ्य है हृद्य है पीनस षांसीको दूरकरताहै॥ कृत अकृत यूष॥ यूषमें लवण और घीव और कड़वी वस्तु मिलें उसको कृत यूष कहैं। जोबिना इनके पकावे सो अकृत यूष कहावे है। और यूषनाम उसकाहै जो वस्तुको पतला औटावे॥ ॥ अथ सर्व यूष॥ यूषमें गोरधनियां आमले आदि मिले होंय पतो पहलेसे दूसरा भारी है और सरओ वातघ्न

और रुचिकारी है॥ अथ दालगुण॥ सेंद्र आदिक
रके अन्नोंको दलके छपसे फरकके तुस दूर किये होंय
जिसको दाल कहते हैं काबिज़ है शुष्क है और बिना छि
लकोंकी दाल धुनी हुई उससे हलकी है॥ अथ खि
चड़ी॥ उर्द और तिल और चावल मिलायके करैतो
उसको खिचड़ी कहते हैं और खिचड़ी कृशरा कहते
हैं यह खिचड़ी काबिज़ है वीर्यको करे है बलकरे है
भारी पित्तको कफको पैदाकरती है पुष्ट है मलको उ
पजावे बायको जीते है॥ अथ खीरनाम गुण॥
खीरयो। परमान्न। पायस। क्षीरतंडुल। खीर बलकर
ती है धातु पुष्ट करती है भारी काबिज़ है रक्तपित्तको
पित्तको दूरकरती है अग्निको बायको दूर करे है॥
अथ खांडव गुण॥ गुड़ आदिकमें आमके फल
मिलावे और चिकनाई और सोंठ मिलावे उसको खां
डव कहते हैं खांड सोंठ घराई। फालसेकी और नींबूका
रस मिलावे मीठा और खट्टा रस मिलावे उसको खांड
व कहते हैं दीपन है पुष्ट है रुचिकरता है तेज़ है हृद्य है
और श्रमको दूरकरता है॥ अथ खंडाम्र खंडाम
ल॥ आमल। आम। आदिलेके पुष्ट हैं बलकरते हैं
नयेपन हैं रोचन हैं चिकने हैं मीठे हैं भारी हैं बहुत गुण
दई हैं॥ अथ सिखरननाम॥ खांड दही सहत

घीव मिरच इलायची मिलायके मथीहोय और कपूर
से बसावो करीहोय उसको रसाला सिखरण माजैवा म॰
र्जिता। कहतेहैं वीर्यको बलकोवढ़ावैहै वायपित्तकूं
जीतेहै चिकनी भारी भोजनकी रुचि उपजावैशुक्रकामदे
खोवैहै॥ अथ पन्नानाम गुण॥ दाख इलायची
फालसा इनका शर्बत खांडमें मिलावै और मिरच अदू
क। कपूर चातुर्जातक मिलावै सो शर्बत दो तरहका
खट्टा और बिनखट्टा दाख छुहारा और मधूक फाल
साकेर यह पंचसार पानक होवैं हैं चंदन का चूरा खुस
बोई के वास्ते मिलादे इसके पीवनेसे मूत्र बहुत आवै
दिलकोकुशलकरे प्यासको मांदगीको दूरकरे है जैसी
वस्तु होय वैसेही गुण हैं। पंचसार पित्तको प्यासको
दाहको भ्रमको खोवै और माध्वीक दाहलोहू प्यास
पित्तको दूरकरताहै फालसा आदिका शर्बत रूचहै।
विष्टंभी है नपुंसकको इमलीका शर्बत प्यासको अ
मको दाहकोभ्रम जीते॥ अथ साट्टवनाम गुण
बिना घीव दहीको मथै और खांड मिलावै और त्रिकुट
अनारदाना मिलावै उसको सत्तकाकहतेहैं रुचि उपजा
वैहै पित्त वायको खोवैहै भारीहै दीपनहै तर्पणहै बलक
र श्रमको जीमचलानेको प्यासको हरैहै॥ अथ चूड़।
गुण॥ ठीकरेके ऊपर धनेअंगारोंपर पकावे उसको मंडक

कारहैं। भारीहै पुष्टहै बहुतफैले पतले बायको मंडूक
कहावेहैं। सोकुछमोटेहों पूपनिका कहावेहैं और
अंगारोंमें सेकेसो अंगारककर्करी कहावेहैं मंडूक बहुत
गर्महै पथ्यहैं ठंडेहैं भारीहैं और अंगारसंज्ञक काविजहै
रूखेहैं त्रिदोषको हरैहैं पोलिका कफ करेहै पित्त
है बलकरैहै बायको दूरकरै भारीहैअंगारककर्करी ब
लकारेहै पुष्टहै वीर्यको पैदाकरै रूखीहै दीपनीहै हृद्रो
गको पीनसको श्वासको बायको जीतेहै॥ अथमिश्रा
न्नभोजनगुण॥ पीसे चावलोंकेजो भोजन बनेहैंसो
बहुत बल नहींकरेहैं बिदाहीहैं पुष्टनहीं भारीहैं गर्महैं
कफ पित्तको करे॥ इतिशालीभक्तगुण॥ गेहूंके
आटेका भोजन बलकरताहै पित्तको बायको हरै दालि
अन्नोंके भोजन बादीहै बादीहै कसैले ठंडे॥ इतिगोधू
मभक्त। अथमाषभक्त। उड़दकेभोजन बलका
रीहैं पित्तको कफको पैदाकरै॥ अथगुड़युक्तपक्क
गुड़केभोजन भारीहै भात बायको हरैहै गरमपित्त बाय
को हरैहै॥ तैलपक्कभो० तैलमेंपकायेहुए बायको
हरें॥ अथदुग्धपक्कभो०॥ गेहूंकाआटा चावलों
काआटा दुग्धमें सानके बनावे तो बायको पित्तको ह
रैहै पुष्टहै वीर्यको बलको पैदाकरताहै अथघिवर
भक्तगुण॥ दुग्धमें आटा गेहूंका मथे और फैलायके

घीवमें पकावे और षांड मिलावे इसको घृतपूरक कहे हैं
कपूर और मिरच मिलावे और षोपरा षांड ऊपर डाले घृ
तपूरक कहावे है सो भारी है पुष्ट है प्राणको देवे है बल
करे जषम हरे पुष्ट है ॥ अथ गूंजासंधान ॥ मैदा
को घीमें भूने और मिर्च इलायची लौंग कपूरका चूर्ण मि
लावे षांड मिलावे फिर और मैदा ओसनके उसकी टिकि
यांमें भरके घीवमें तले फिर उसको षांडकी चासनीमें उ
नको संधा कहे हैं। और मैदाको शहतमें ओसनके घृतमें
पकावे और नये घड़ेमें धरे फिर मिरच और इलायची स
मेत चूर्ण मिलावे कपूर मिलावे तो अमृतको तुल्य है ॥
अथ खाजा भक्ष्य गुण ॥ मैदाको घीव और पानीमें ओ
सनके पकावे और षांडकी चासनीमें पकावे और पानीमें
मैदाको पतली घोले और बिजौरेको छीलके अदरक भरे
और पूर्वकी तरह पकावे घीवमें षांडमें पागे ॥ अथ पू
प ॥ मैदाको गुड़के पानीमें मिलायके घोले और घीव
में फैलायके पचावे ॥ अथ दधिपूपक ॥ चावलके
आटेको दहीमें ओसनके घीवमें पकावे षांडकी चासनीमें
लपेटे ॥ अथ विष्यंदन ॥ संयाव। मधुशीर्ष। पूपक
मधुपूपक। भारी है और पुष्ट है हृद्य है पित्तको वायको
हरे है। दही। और दूध पकायके अर्द्ध भाग रक्खे फिर
लाल चावल और तिल मिलावे फिर पियाल पनसके

बीजमिलायकेपकावे दूधघीवखांडमिलावे इसकाना
मविध्यंदनहै इनोंकों दुर्लभहै पुष्टहै पितकोवायको
हरै भारीहै। अथलपसी॥ मैदाकोनतेघृतमेंभूने
औरखांडडाले औरपानी औरमेवा उसमें मिलावे इसको
लपसीकहतेहैं पुष्टहै बलकरैहै वायकोपितकोदूरक
रताहै भारीहै। अथलड्डभक्षगुण॥ फेनिका।पुट
नी। मुभ्रा। वीर्यकोपितकोहरैहै मोदक औरलड्डू अने
कतरहकेहैं औरइनोंदूधनखडुधमैदा औरउड़की
पीठीकेखाने औरजिमाकंदअर्द्रक औरपेठा शालकी
औरमांसमछीइनकोआरलेकेबहुतविधिसेखाने
सूपशास्त्रमेंसेजानलीजिये मोदकपुष्टहैबलकरैहै
पितकोवायकोहरताहै अथघोलबड़ा॥ उड़मूं
गकीपीठाकीबड़ीऔरजैसाजिसअन्नकागुणहोय
वैसाहीउसकीबड़ीबड़ेकागुणहै। उड़दकेबड़ेहृद्यहैं
पुष्टवायहरताभारीकाबिजहैं औरघोलबड़ेहितकारीहैं
वायकोहरे॥ अथकांजीबड़ा॥ कांजीकेबड़ेदिल
कोदूरकरेंदोषलहैंभारीहैं॥ तथाबुबुरका॥ तपके
पानीकेबड़ेरुचिकरतेहैं पित्तलहैं कफबायकोजीतेहैं
अथइडूरी॥ इडूरी वीर्यकोबढ़ावैहै पुष्टकाबिजहै
अथसहाली॥ सहाली भारीहै पुष्टहैरुचिउपजावैहै
दोषोंकोहरैहै॥ अथगलेबी॥ गेहूंकोअन्नकैमैदाको

कूटोमें घोलरक्खे जब पतली होजाय तब एक बासनमें छेककरके भरे और छेककोराहसे उसको फिराय रक्खे गरम घीवमें छोड़ताजाय पकावे फिर उनको निकास के खांड़की चासनीमें डालदेवे इसको कुंडलिका कहते हैं पुष्ट है कांति बलको बढ़ावे है धातुको बांधे है इन्द्रियों को तृप्त करे॥ घूंघरी॥ गेहूंकी घूघरी पुष्ट कौ बादी है अथ मंथगुण॥ नये जवोंको तुसदूर करके भुनावे उसका आटापीसे उसको सतू कहते हैं इसमें घृत मिलायके ठंडे पानीमें घोले न बहुत पतले न बहुत गाढ़ उसको मंथ कहते हैं मंथ तुरत ही बलको करे है। और पीछे बलको कर करे है प्रमेह प्यास क्षय छर्दि कुष्ठ रक्त श्रमको जीते है। और दाख और खांडमें मिलावे तो पितको लोहूको वाय को जीते है और दाख और सहत मिलावे तो बलको और श्रमको मदको जीते॥ जौसतू॥ जौके सतू दीपन है ठंडे हैं हलके सर हैं कफ पितको हरे हैं रूखे हैं लेखन है पीवे नेसे शीतता व बल करे धूपके मौसिमको पथ्य है॥ मिश्र जौ चणेके सतू॥ छोले चने और जवोंके सतू पांच और घृत मिलायके गरमी में नफा करते हैं। मीठे सतू भारी हैं पतले हलके हैं और खांन उखड़े हुवे को सत्तू मना है और रातको सत्तू मना है। और बहुत खाने और पानीमें तैरके मना हैं॥ अथ लाजा॥ धानको भुनायके जो खीलें हों

तिनको लाजा कहै हैं सो बहुत हलकी हैं ठंडी हैं बलकरै हैं
कफ पित्त को पैदा करै हैं। छर्द अतीसार दाह खोह चरबी
नांस प्यास ज्वर इतने रो   गों को हरै है ॥ अथ धाणी
धनी का बिज है स्वरूप कहै कफ को चरबी को हरै भारी है ॥
अथ चिड़वे ॥ गीले चावल भुनाये उसको पृथुक कहै हैं
भारी हैं बलकरता है कफ करै बाय को हरै ॥ अथ होला
मिस्सा नाज आधा भुना हुवा उसको होला कहै हैं चरबी
को कफ को पैदा करै है ॥ अथ ऊमी ॥ कच्चे गेहूं को
भुनावे उसको ऊमी कहते हैं कफ पैदा करै बलकरती है
हलकी हैं पित्त को अग्नि को जीते ॥ अथ अपक्व मां
सगुण ॥ हिंगु और तेल घृत में रखके मांस को भूने फिर
थोड़ा गरम पानी डाल के पकावे फिर मिरच और अदरक चू
शवो मिलावे उसको परिशुष्क कहै हैं ॥ अथ तलित
मांस ॥ और बहुत पानी डाले तो पतेह कहै हैं बिना रस
जो सीधा पै भूने सो परिशुष्क कहावे है रोचन है तर्पण है
भारी है बल बुद्धि अग्नि मांस ओज वीर्य इनको बढ़ावै है
और ऐसे ही पीसा हुवा भारी है ॥ पिष्ट अथ मांस ॥
उल्लिप्त तो भारी है पथ्य है परिशुष्क भी वैसा ही है औल्लिप्य
बारी है बलकरता है वीर्य को बढ़ावे है रसदार में भी वही
गुण है विशेष करके हलका है दीपन है और मांस को
[illegible]के लोहे की सींक में पिरोयके अंगारे पै भूने उसको

शूल्यकहतेहैं सोसब मांसोंसेउत्तम हलका पथ्यहै
शूलपक्कमांसगु०॥ अनारदानाकूटकेमांसमें मि
लावे उसके पूर्ये पकावे उसको पक्कापिष्टमांस कहतेहैं
भूषादि॥ घीवमें भुनाहोय उसको घृताभिभिष्ट कहें
लौनलगायके भूने मधुरकोमुख्यहै॥ नंदुलपक्क॥
मांसकोतेलमें भूने पकावे सोगर्महै भारीहै पित्तलहै
घृतपक्कमांस॥ घृतमें पका भीवैसाहीहै हलकाहै
पित्तको नष्टकरे गरम नहींहै बलकारहै हृद्यहै रुचिकोब
ढावैहै॥ अथतक्रादिसिद्ध॥ गोरस चिकनाई और
धान्य और खटाई प्याज और मसाला मिलावेतो बलकारे
है रोचकहै दीपनहै भारीहै॥ अथबहुछिन्नमांस
रसका मांसरूखाहै बिनारसकाबादीहै भारीहै अथ
बेसवारमांसगुण॥ मांसमेंसे हाड़ दूरकरे और
त्रिकुटा मिलायके पकावे घी मिलावे उसको बेसवार
कहतेहैं बलकर्त्ताहै बायको दूरकरताहै और भारीहै
अथसौरवा॥ मूंग आदि मिलायके पकावेसो वेस
वारपककहावे हलदी सेंधानोंन हींग धनियां अनारदाना
मिलायके बकरीका मांस पकावे उसको सौरभ कहेहैं
मूंगके वेसका सा गुण इसमें भीहै और कूटेहुए मांसका
जोरसहोय उसको सोरावकहतेहैं॥ सौराव॥ बेस
वारसे मिलाजोरस होय तिसको कानिक कहेहैं हृद्यहै

श्रम श्वासबायकफपित्तक्षयकोहरताहै फोड़वाले
कोहीनकोजिसकावीर्यक्षीनहोय जिसकेचोटलगी
होयउसकोगुणकारे जिसकागलापड़गयाहोयउस
कोफ़ायदाकरे॥ इतिमांसरसगुण॥ अथ
दाड़िमादियुक्तमांसरस॥ अनारदानामिलाके
जोमांसपकायाजायसोवह त्रिदोषकोदूरकरताहै और
वंदहै मुंहकेसरकनेको श्रमकोदूरकरताहै दीपनहै
बायकोहरताहै सबधातोंकोबढ़ावैहै और योनि भारीहै
पथ्यहै दीप्तहै अग्निवालेको थोड़ा मांसऔरलोनपानीमें
पकायाहोय उसकोहलियावनिकाकहैहैं येसबहलके
हैं और छाछमिलाकेओटायाहोयउसको छायनकहैहैं
पाचनहै रुच्यहै रोचनहै वायकोकफकोकब्जकरै पित
बढ़ावै॥ इतिकढ़ी॥ अथकाथली॥ सांभऔर
छाछमिलायके ओटाया होयसो दीपनहै रोचकहै वा
यको कफको श्रमको खोवैहै॥ अथपापड़नाम
पापड़ रोचकहै हलकाहै॥ अथखल॥ पिण्याक
तिलकाकिट्ट। पलल। तिलपिष्टक। गुण॥ खलकफ
कोपैदाकरे खुश्कहै काबिजहै नेत्रोंकोबुरी पलल वि
कनीहै पुष्टहै कफपित्तकोपैदाकरै भारीहै॥ इति
श्रीमदनपालविरचितमदनविनोदेनिघंटौ
कृतान्नवर्गः एकादशः ११ दाद्यौनाम॥

हस्ती। मतंगगज। दंती। मातंकरी। सिंधुर। कुंजर। पद्मी
बारण। द्विरद। द्विप। इभ। दंतावल। नाग। कुंभीप्र। स्तंभरु
ला। गज। हस्तिनी। धेनुका। रेणुका। करिणी। वसा। गुण।
हस्ती कफको वायको हरे गर्म है पित्तको रोहको करे
अथ घोड़ा॥ घोटक। सैंधव। बाजी। तुरंग। हरि। तुरंगम
हयः सप्ता बाजीय जुयली घोटका बड़वा वामी। प्रसूतिका
अश्ववाजिनी। गुण। घोड़ा पचनेमें कड़वा है दीपन है क
फको पित्तको करे बायको हरे है पुष्ट है बलको है और
नेत्रोंको गुण करता है मीठा है हलका है अथ खच्चर।
नन्न। अश्वतर। शीघ्रग। बेगपूजित। गुण। बलकरता है
पुष्ट है कफको पित्तको पैदा करता है इतने गुण हैं॥ अथ
ऊंटनाम गुण॥ उष्ट्रक। कमेलिक। बक्रग्रीव। शाखाश
न। मय। बक्रकुन। करभ। दीर्घजंघ। धूम्र। मरुत्प्रिय। गुण
ऊंटका मांस हलका है मीठा है नेत्रोंको गुण करता है वाय
को हरता है गरम है बवासीरको हरे चर्बी पित्त कफ बढ़ावे
गधानाम॥ गर्धव। रासभ। भारवाह दुरगम। खर। गुण
बलकरे है कफ पित्तको पैदा करे है पचनेमें कड़वा है हलका
है और इससे जंगली गधा श्रेष्ठ है॥ अथ भैंसानाम।
मारुष। सैरभ। श्रृंगी। वाहवैरी। घनाघन। कासार। कव
लद। शललाघ। कालवाहन। गुण। मांस मीठा है गर्म है
चिकना है। बायको हरता है नींदको वीर्यको दूधको।

बढावेहै। छोटेवेग करताहै और अरण्यभैंसाभी इसीकी तरहहै विशेषकरके सुवावनेवालाहै॥ अथरीछ नाम॥ रीछ। अच्छ। भल्ल। भलूक। खड्ग। गंडक। गेंडा। गुण॥ चिकनाहै भारीहै पुष्टहै मीठाहै गरमहै बायको हरैहै॥ अथसिंहनाम॥ सिंघ। पंचानन। हर्यक्ष। मृगें द्र। केसरी। हरी। शार्दूल। पंचनख। मृगनाथ। सकृत्प्रज गुण॥ शार्दूल और सिंहदोनोंका मांस गरमहै नेत्रकेरो गोंको खोताहै॥ अथभेड़िया॥ व्याघ्र। मृगारी। मृग हाव्यल। भीमपराक्रम॥ अथचीता॥ चित्रक। बेध वान। चित्री। द्वीपी। नीलरदंष्ट्रक॥ अथकुत्ता। कु क्कुर। श्वानुश्वध्व। कौलेय। शुनक। शुन। सारमेय। रून त। भीषण। मृगदंशक। गुण॥ कूकरकामांस व्याघ्रका चीतेका कुरंगबक। इनसबका मांस भारीहै बायको ह रैहै नेत्रोंको हितुहै॥ अथसूअरमांस। शूकर। रोम स। पोत्री। कोल। घ्रोणी। किरा। किटी। दंष्ट्री। क्रोड। स्तब्ध रोमा। नृदोरो। खरुक। गुण॥ मीठाहै बलकरैहै बायकूं खोवेहै भारीहै चिकनाहै गरमहै पुष्टहै निद्राकोदृढकरैहै बकरीकानाम॥ छागी। गलस्तनी। मधा। सर्वभक्ष्या। अजा। शुभा। कर्कर। छगल। छाग। बस्तोज। छेलक। प शु॥ गुण॥ भारीहै चिकनीहै हलकानीनोंदोषोंको खोवैहै दाहनहींकरैहै पुष्टहै बहुतठंढा नहीहै। पीनसकोहरैहै।

देहमेंसब धातोंको समकरताहै। अभिष्यंदीनहींहै ॥
अथ मेढ़नाम॥ छेलो। मेष्ठ। मेढ़। हुड़। मेढ़। घण्य। उरण
अविक। ऊर्णायू। एड्क। वह्निमेर। पुछक। वंचुक। यगण
भारीहै चिकनाहै बलकरताहै पित्त कफको पैदा करेहै॥
अथदुंबानाम॥ इसकामांस पुष्टहै कफ पित्तकी करेभा
रीहै॥ अथहिरनमांसगु०॥ हिरन। नागबर्ण। कुरंग।
चारुलोचन। सारंग। जिनयोनि। वातायु। चपल। मृग। एण
कृष्ण। परकृष्ण। कृष्णसारंग। गुण॥ एणाका मांस ठंडाहै
रोचकहै काबिजहै त्रिदोषको दूरकरैहै षटसहै बलकारैहै
पथ्यहै हलकाहै रूघहै ज्वरको शोष्हको दूरकरैहै अथ
गोकर्णनाम॥ गोकर्ण। विकटशृंगी। विष्ठंग। संबरगुण०
गोकर्णसंबर ठंढेहैं भारीहैं चिकने हैं कफपैदाकरते हैं सवा
द मीठाहै पचनेमें मीठेहैं रक्तपित्तको खोवे॥ अथरोझना०
ऋष्य। नीलांड्क। नीलगवय। चारुदर्शन। गुण॥ मीठापुष्ट
है चिकनाहै गर्महै कफको पित्तको करे अथ कस्तूरि
या॥ कस्तूरी। गंधी। मुष्किनी। मृगमात्रिका। गुण। कस्तू
रिया मीठाहै काबिजहै दीपनहै हलकाहै और मुष्किनी ज्वर
खांसी क्षय इनको हरैहै ठंढाहै॥ अथचीतलनाम॥
कनमाल। बर्गेवर। बषन। बिंदुचित्रक। छिकारी। बामन्न
मी। बानमृग। छिक्कार। कृष्णपुछक। गुण॥ इनका मां
स मीठाहै काबिजहै दीपनहै रूघहै ठंढाहै हलकाहै इनको

ज्वरको त्रिदोषको दाहको हरताहै॥ अथरुरु
नाम॥ रुरु। शंबर। मुक्तश्रंग। बहुविषानक। गुण॥
रुरुकामांसभारीहै। मीठाहै। पुष्टहै। बायपितको
षोवेहै न्यकोहलकाहै बलकरे पुष्टहै त्रिदोषको हरेहै
अथससानाम॥ शशश्मूली। रोमकर्णी। लंबकर्ण
बिलेशाय। गुण॥ हलकाहै ठंडाहै मीठाहै कविज है
पाचनहै अग्निदीपनहै सन्निपातको ज्वरको दम्भेको
रक्तपित्तको कफको करे॥ अथ शल्लकनाम॥
शल्लक। शल्लको। श्वासविल्। सेधा। सूचिनीरवरा।
गुण। दमेको षांसीको दाहको शोषको त्रिदोषको ह
रेहै सेंधाभीवैसीहै॥ बिलावनाम॥ बिलाव। ओतु
मार्जार। वृषदंशक। आखुभुक। गुण॥ अथन्यौल
नाम॥ नकुल। पिंगल। बभ्रू। सर्पारि। सर्पभक्षक। गु॥
बिलावमीठाहै चिकनाहै गरमहै कफको बायको जी
तेहै दुबलेपनको दमेको षांसीको हरैहै न्यौलभी उसी
कातुल्यहै॥ अथबंदरनाम॥ बानर। मर्कट। बनौका
कीश। बलीमुख। हरी। शाखामृग। प्लावी। प्लवंग। कपि
गुण॥ बायको दमेको चरबीको पांडुरोगको क्रम षोवेहै
अथगीदड़नाम॥ श्रृगाल। जंबुक। फेरु। गोमायु। फेर
व। शिव। शिवेश। वंचक। क्रोष्टा। लापाक। खल्प। जंबुक
गुण। बलकरेहै पुष्टहै बायको तपको दूरकरताहै॥

अथमूसानाम॥ मूखक।खनक।नेजावृष।उंदरू।
आखुक।गुण।मूत्रको विष्टाको बंधकरताहै बलकोरैहै
पुष्ट है वायकोहरै॥ अतिचौपायेर्नाम॥ पंछीनाम
पक्षी।विहंगम।पत्री।शकुनी।विहंग।खग।अंडजोनि।पत्र
रथ।पतत्री।शकुनी।द्विज॥ अथतीतरनाम॥ तितिर।
चित्रपक्ष।रुक्म।गोरका।पिंजर।गुण।रंगअच्छा कोरैहै
रुचको त्रिदोष स्मा षांसी इनकोषोवैहै पथ्यहै तिसमें
गोरातीतर बहुत गुणदाई है॥ अथबटेर॥ वनोर।व
र्तिक।वित्र।गुण।अग्निको पैदाकरैहै ठंढाहै ज्वरको
त्रिदोषको दूरकरताहै अथलवा॥ लाव।वित्र।वित्र
नतु।इसके चारभेदहैं पांसुल।गौरिक।पौडूक।दुर्भर॥
गुण।हृद्य है ठंढाहै चिकनाहै काबिज़ है दीपन है पांसुल
कफ पैदाकरैहै गरमहै वायकोहरै गौरिक कफवायको
दूरकरताहै खुरका है अग्निको पैदाकरै औरपौडूक पित
कोकरताहै कुछएक हलकाहै कफको वायकोहरै दुर्भर
रक्तपित्तको हरै हृदयके रोगोंको दूरकरै और ठंढाहै॥
गरुचिड़ा॥ चटक।कलविंक।ग्राम्य।पौङ्क।गुण।ठंढाहै
चिकनाहै मीठाहै वीर्यको पैदाकरै कफको भी सन्निपातहै
बगेड़ा॥ मीठाहै ठंढाहै खुश्कहै कफपित्तको दूरकरताहै
कबूतर।पारावत।कलरव।मंजुघोष।मदोन्मद।कामुक
ना॥ कपोत।घुर्घुरका।पाडुर।अरुकाणक।पोवद।गुण

कबूतर भारी है चिकना है रक्तपित को बाय को हरै है कांवि जहै बीर्य को पैदा करता है ठंढा है और फाकता भी इसी की तुल्य है कुछ एक हलकी है॥ मोरनाम॥ मयूर। चंद्रक। केकी। मेघराव। भुजंगभुक्। शिखी। शिखावल। बर्हि। शिखंडी। नीलकंठ। शुक्लापांगी। कलापी। मेघनादानुला। गुण। पुष्टहै कानके स्वरके रोगको बायको शोषको जीतै गरमहै बलको आयुर्दाको बुद्धिको अग्निको बढावैहै नेत्रों को गुणकारै रंगको अच्छा करै हेमंत में शिशिर में इसका मांस बहुत गुणकारी है ग्रीष्म में वर्षा में बुरा है॥ मुर्गानाम। कुक्कुट। विष्कर। शेखी। कालज्ञ। चरणायुध। कृकवाकु। ताम्रचूड़। और एक बनकुक्कुट होयहै। गुण। पुष्टहै चिकना है गरम है बायको जीतै है भारी है नेत्रों को हितु है बीर्य को कफको पैदा करता है और बन का मुर्गा भी पुष्टकहै कसैला है और पानी का मुर्गा पुष्ट चिकना कफको पैदा करता है भारी है॥ तोतानाम॥ शुक। रक्तमुख। कीर। बाड़भी। स्वर्णरर्शन। मैना॥ सारी। सारिका। रसिका। धूनी। सुमती। प्रियबादिनी। गुण। तोता ठंढाहै हलका है काबिज है जखम में षांसी में क्षय में मुफीद है खुश्क है मैना भी वैसी ही है चिकनी है बुद्धि को बल को अग्नि को बढ़ावै है कोयलनाम॥ कोकिल। कालकंठ। परपुष्ट। वनप्रिय। पिक। परभृत। मधुराणी। ताम्राक्ष। मधुकूजक। गुण। शीतल है

काबिज़है। नेत्रोंकोहितहै वायको षांसीको जीतनाहै
काकनाम॥ काक। ध्वांक्ष। गूढकामी। बलिपुष्ट। स
कृत्प्रज। वायस। बलिभुक। काण। करट। चतुर। द्विज।
भासनाम॥ काकभास। शिखावाक। संतोषकी। रो
धुरजप्रज। गुण॥ काकऔरभासका मांस नेत्रोंको हि
तुहै। दीपनहै हलकाहै औरबल बढ़ावैहै बल करैहै जषम
कोऔरदोषकोहरे॥ गिद्धनाम॥ गृद्ध। सुदृष्टि। शकु
नी। बक्रचंचु। दूरहक॥ गुण॥ कागहीकीतुल्यहैवि
शेषकरके नेत्रोंके रोगोंकोजीतेहै। हंसकेनाम॥
हंसश्वेत। गरुत्मान। रक्तपदानन। राजहंस। औरकाल
धार्त्तराष्ट्र। मल्लिका कहावैहै औरकलहंस मेंबा कहावै
है। पीलाकारंब कहावैहै कारंड मुरबरट। गुण। चिक
नाहै भारीहै पुष्टहै गरमहै आवाजको रंगको अच्छाकर
है बायकोलोहूको पित्तको दूर करताहै बलको अग्नि
कोपैदा करैहै॥ सारसनाम॥ सारस। लक्ष्मण।
रक्तमूर्द्धा। पुष्कराख्य। चक्रवाकनाम॥ कक। वक।
बकोट। कंक। लोहपृष्ठक। आडिनाम॥ आटि। श
रारी। विचित्रा। जलधारिणी। गुण॥ हंसबक का
मांस चिकनाहै ठंढाहै भारीहै मीठाहै विष्टाको मूत्र
कोपैदाकरताहै बायको पित्तको लोहूको दूरकरताहै
[illegible]नाम॥ कोड़क। कर्करेटु। ककार। क्रकण।

गुण॥ मधुर है बल करता है बायको पित्तको हरता है हलका है॥ ममोला॥ खंजरीट। खंजन। चौड़ीया॥ किकीदिव। पपीहा॥ चातक। घनाधार। सारंग। स्तोकक भृम॥ भारद्वाज॥ भारद्वाज। कुकरीट। व्याघ्र। घेटी। कुटी गुण॥ ममोला चिड़ीकी तुल्य है। कफको बायको दूर करहै और पपीहा पित्तको बायको दूर करता है भारद्वाज भी हू को कफको दूर करता है। सिचान चील नाम॥ शोन। शशादन। पत्री। चिरी। चिल्ली। चिरिल्लिका॥ गुण॥ सिचान और चीलका मांस दोषोंको पैदा करता है भारी है उल्लूके नाम॥ उलूक। कौशिक। काकारी घूक। निशाचर। गुण॥ इसका मांस भ्रांत करै है बायका कोपकर्ता है चकोर॥ चकोर। चंद्रिका। पायी। जीवजीव। सलोचन। गुण। पुष्ट है। बलकारै है चिकना है गर्म है बायको हरै है क्रौंचबककुररटीटहरी॥ क्रौंच। पित्तको बायको हरै है ऐवक कफको बायको जीते हैं कुरर क्रौंचकी तुल्य है टिटिभ थोरी बायको पैदा करता है॥ इति पक्षीनाम अथ मत्स्य नाम॥ मत्स्य। झष। तिमी। मारकंटी। वैशारण। अंडज। पृथुरोम। अभिसार। विशार। शकुली रक्तोदर। रक्तमुख। रोहित। मत्स्यपुंगव। सहस्रदंष्ट्र। पाठीन। ताम्रवर्ण। महाशिर। सफर। लघुमत्स्य। प्रोष्ठी शफरी। जलमीन। बिलचिम। तिमि। समुद्रज॥ गुण॥

मच्छ बलदाई है पुष्ट है भारी है कफ पित्त को पैदा करे है।
गरम है अभिष्यंदी है चिकने हैं पुष्ट हैं वायको हरते है।
इति सामान्यगुणाः॥ अथ मच्छी के न्यारे २ गुण क
थ्यन्ते॥ नदी की मछली कवन करती है भारी है वायको
हरे है कुए की मछली कफको श्रधीलाको मूत्रको कृप
को कावजको करती है तालाबकी भारी है पुष्ट है ठंढी है ब
ल करती है मूत्रको पैदा करे है झरने की मछली का गुण ता
लाबकी के तुल्य है बलको उमरको बढ़ावे है दृष्टि को करे है
सरकी मछली मीठी है चिकनी है कुपनी है वायको हरे है
समुद्र की मछी भारी है पित्तको बहुत नहीं करती पवन
को हरती है वहां का पानी जो खारी जाने का विज़ है दृष्टि
को दूर करे है हेमन्त ऋतु में कुए की मछली श्रेष्ठ है शिशिर
में सरकी श्रेष्ठ है बसन्त में झिरने की श्रेष्ठ है बावड़ी तालाब
की श्रेष्ठ है वर्षा में सारी मछली दोष करती हैं रोहू मछली
सबमें श्रेष्ठ है पित्तल नहीं है हलकी है और पाठीन कासै
ती है कफ पैदा करे है भारी है छोटी झींगा मछली मीठी है
त्रिदोष को हरती है और सूक्ष्म मच्छी पुरुषत्व को बढ़ावे
रुचि उपजावे है खांसी वायको हरे॥ मगर नाम॥ शि
शुमार। नक्र। मकर। ग्रासिंहका। गुण। भारी है पुष्ट है
कफको करे वायको हरे कुष्ठको हरे मोटा करता है चिक
नी है॥ कच्छप॥ कछुवा। गूढ़पात्। कूर्म। कमठ।

हृदयपथ्यका। गुण। कुष्ठनकारे है चिकना है बायकोजीते है पुरुषत्वकोपैदाकरे है। मेंडकनाम॥ मंडूक। प्लवका भेक। बर्षाभू। दर्दुरोहरी। गुण। कफको करे पित्तकोब ढ़ननहींकरे है कुष्ठनकरे है॥ केकड़ानाम॥ कर्क ट। करुचिल्ल। कुलीर। षोड़शांघ्रिक। गुण॥ मोयक रे है। सुख है ठंडा है लोहूकेगलबेको हरताहै॥ अथ सर्पभेदनाम॥ भुजंगम। सर्प। भुजंग। फणी। भोगी। कुंडली। कंचुकी। चक्री। पन्नग। पवनाशन। गूढ़पाद। उर ग। नाग। जिम्हग। सरीसृप। चक्षुश्रवा। दीर्घपृष्ठ। व्याल। आशीविष। अहि। दर्वीकर। बिषधर। दंदशूक। बिलेश य। कुंभीनक। प्रदाकु। दंष्ट्री। काकोदर। बिषी। डिंडिभ। राजिल। जगर। बाह्य। शिशु। जलसर्प। जलगर्द। तिलि त्स्य। गोनस। सर्पभेदगुण॥ सर्पोंकामांस चिकना है नेत्रोंकोसुख है भारी है वृषी बिषको श्रमको हरे है। बुद्धिको अग्निको बलको बढ़ावे है॥ गोहनाम॥ गोधा। घोरफरा। पंचनखी। राजनिभ। कष्टसर्प। गोधे य। गौधेर। महाबिष। गुण॥ अग्निकोपैदाकरे है ब लकरता है सुख है पित्तको बायको हरे तुरतके मरेका मांसरोगीको अमृतकीतुल्य है दुबलेको गुणकरताहै और बूढ़ेजनावरका मांस दोषलहै और बच्चेका बलदाई है जिसका पेट्रागर्ननाताहोय उसको सुखफोदहै आपसे मरे

का मांस बलको हरे है अतीसारको दूर करता है और जो
हर खानेसे मरा होय वा रोगसे मरा उसका मांस विशेष को
और रोगोंको बढ़ावे है पक्षियोंमें नरका मांस श्रेष्ठ है चौपा
योंमें मादेका मांस श्रेष्ठ है और नरका मांस पिछले आधे
धड़का श्रेष्ठ है और मादेके अगले धड़का श्रेष्ठ है और वे
पशू और पंछी जो पानीसे दूर रहते हैं तिनका मांस अभि
ष्यंदी है और जलमें जो जानवर चलते हैं और जलसे पैदा
होय हैं और भारी चीजें खाते हैं तिनका मांस बहुत भारी
है और धानसे जो पैदा होय हैं और धान ही चरे हैं तिनका
मांस हलका है। जंघा पेट सिर हाथ पांव कमर पीठ खाल
मुंह दांत। भारी हैं पहलेसे दूसरा भारी है सिवाय॥ ॥

॥इति श्रीमदनपालबिरचिते मदनबिनोदे
निघंटौ मांसवर्गः द्वादशः १२ बायके रोगमें

चिकना और गरम पीना भला है और गरम है घुरकै अच्छा
है और पित्तमें ठंडा है और तर अच्छा है मूर्छावालेको ठंडा
पानी अच्छा है चावल और मूंगका भोजन वा मांसका रस
और उड़दका भोजन और रूखा और पथ्य यवसे शोष वि
षयोंसे भूखवालेको गुण करता है और लंघनवालेको
स्त्रीप्रसंगसे वायसे तप होय तिसको दूध अमृतकी तु
ल्य है यानी और गाया जो परभात अरुणोदयके समें पावे
तो बृद्ध न होय सौबरस जीवे और भोजनके के दाल ने पासे

होयतौ बलबढ़े और खांयेपासे लैरनो आलसबढ़े और भो
जनकर्के दौड़ैतो मरजाय रातका जागना सुखकोकरै है
दिनका सोवना नपथ्य नकरै है नींदके समय सोवैतो बल
और उत्साह बढ़ै धातें समहोय क्षीणको गुण करै है औ
रजो रातको जागा होय तिसको दिनका सोवना भला है
भोजनके पीछे सोवना वायको दूरकरता है कफको पु
ष्टकोकरता है और कफको चर्बी को जरूर थायेको रात
का जागना श्रेष्ठ है और दिनका सोवना प्यासको मूल
को रुचको को अजीरणको अतीसार वालेको गुण क
रता है ॥ दांतौंन करनी ॥ दांतौंन करनेसे मुंह साफ हो
ता है अरुचि दुर्गंधको मैल कफ पित्त जाता है माठ्यापी
वनेसे जो दुषी होय दुर्बलपनेको जिसके दांत हालू हों
ठकापकरोग रुचकोर्दई सिरदर्द मूर्छा खजन सूतेरोगी
को दांतौंन करनी मना है ॥ मुंहका पांवका धोना ॥
मुंहका धोवना ठंडा है रक्तपित्तको जीते मुहांसेको झांई
को खोवै है और व्यंगको हरता है पांवका धोवना दृष्टिको ब
रता है पुष्ट है श्रमको हरै है पांवका मलना बहुत रूपत
करै है उत्साहको बढ़ावै है नींदके सुखको करता है मांसो
नेत्ररोगको हरै है ॥ चिकनाई के कुरले ॥ चिकनाई
के कुरले करनेसे मुंहको सुरखी दांतोंका रोग जाता है ॥ ग
लेका पकना होठोंका फटना रक्तवायको दूर करै है

गरमपानीसेकुरलेकरनेसेकफकाअरुचिकामलका
नाशहोताहैविषकोमूर्छाकोनशेकोशोककफपित
वाला मलयुक्तकोइननेरोगोंकोहरताहै सुरमा आंजना॥
सुरमाआंजनेसेआंखेंनिर्मलहोतीहैंऔरदृष्टिअच्छीहोतीहै
नेत्ररोगदूरहोतेहैंऔरयतनकेजागेकोछर्दकोभोजनकर
परज्वरमेंआंजनामनाहै॥व्यायामकरना॥व्याया
ममेंकरनेकीसामर्थ्यहोतीहैस्थिरताऔरदोषोंकानाश
अग्निकोकरताहैऔरसमकरैतोबहुतगुणकरताहै
चिकनाभोजनकरनेवालोंकोव्यायामसेदेहीमज़बूतहो
यहैरोगकभीनहींहोताऔररूखवाविरुद्धजैसाभोज
नखायसंतपचजायऔरशिथिलताबौबुढ़ापाऔरपलि
तनहीहोवै।वसंतमेंऔरजाड़ेमेंबहुतगुणकरताहैऔर
शरीरमेंपसीनाहोयअथवाभोजनकियाहोयवामैथु
नकियाहोयइनमेंश्वासीमेंक्षयमेंदुबलापनमेंरक्तपि
त्तमेंज़खममेंशोकवालेकोव्यायामकरनामनाहैऔ
बहुतकरनामनाहैबहुतकरनेसेखांसीज्वरछर्दकोकरैहै
मर्दनकरनाश्रमकोव्यायामकोहरैनिद्राबलपुष्टाईकरै
हजामतगुण॥हजा मतऔरनखकतरानाकल्या
णमुखविरूपवाकरताहैऔरबालोंकोअच्छाकरताहै
अभ्यंगगुण॥अभ्यंगवायकेरोगोंकोखोवैधातोंको
समकरै बल पुष्टाईकरैहैनिद्राकोरंगकोमनायमीको

करताहै दुर्बल मनुष्यको मोटा करताहै ॥ **सिरमें तेलडालना** ॥ सिरमें तेलडालनेसे बाल अच्छा होयहै। नेत्रोंको पुष्टकरैहै ऊंचासुननेको बहरापनेको मस्तकग्रह कोदूरकरैहै धातुको पुष्टकरैहै अरुचिकनाईसे अव गाहनकरना बायकोदूरकरैहै ज्वरमें जुल्लाबमें अजीरणमें मनाहै ॥ **स्नानकरना** ॥ बायको लोहूको हरि इको खुजलीको मैलको हरैहै हृद्यहै कामको करैहै सब इन्द्रियोंको जगावैहै गरमपानी सिरपैडालना मनाहै नेत्रों बुराहै कफको बायके कोपको औषधगीलारखाय ॥ **अनुलेपन** ॥ अनुलेपनसे प्यास मूर्छा दुर्गंध श्रमदाह दूरहोयहै सौभाग्यको रंगको अच्छा करताहै तेजहै। **पुष्पधारण** ॥ फूल और बस्त्र जवाहर धारनेसे कांति बढ़ैहै। पाप और राक्षस दुष्टग्रहको दूरकरैहै कामको ओजको लक्ष्मीको बढ़ावैहै। **जूतीपहरनी** । नेत्रोंको गुणकरतीहै आबल बढ़ावैहै पांवकेरोगहरतीहै पगड़ी बांधनी बालोंको गुणकरतीहै **छत्रधारना** । छत्रधारना ओजको बढ़ावैहै नेत्रोंको गुनकरताहै ठंडहै धूपको जीतेहै ॥ **अथपंखा** ॥ ओजको बढ़ावैहै मखीको दूर करताहै पसीनेको बायको शोषैहै मूर्छाको भ्रमको खोवैहै ॥ **यष्टिकाधारणगुण** । खुशीको बढ़ावैहै विघ्नआहै वीर्यको पैदाकरै राक्षस और सांपके भयको खोवैहै

अरुचिकोदूरकरताहैजवानीकोस्थिरकरवैहैश्रौबलवु
द्धिअगिनकोबढावैहैसबइंद्रियनकोचेतनकरतीहै॥

**सेजकासोवना॥** सेजकासोवनानींदकोपुष्टाई
कोबलकोदेहैतापना मूर्छाकोपसीनेकोप्यासकोदाह
कोदाहकोश्रमकोकरेहैपित्तकोरक्तकोदूरकरैहै अ-
गिनकोशीतलकोवायकोकरताहै॥ **चांदनीकेगुण॥**
ठंढकआनंदपैदाकरतीहैपित्तकोदाहकोजीतैहै अंधेरा
भयमोहश्रौरकफकोपैदाकरताहै बर्षाकालमकरैहैठं
डहैनींदकोअभिष्यंदकोश्रौरश्रालसकोपैदाकरैहै॥

**बायु॥** शुरकीकोविबर्णाकोस्तंभकोपैदाकरैहैदाहकूं
पित्तकोहरैहैपसीनेकोमूर्छाकोश्रौरप्यासकोदूरकर
ताहै॥ **प्राणघ्ना६वस्तुश्रोंकाबर्णन॥** ता
जामांस।नयानाज।छोटीस्त्री।दूधपीवना।घीखाना
गरमपानीसेन्हाना।शिताबयेछहोंबस्तुप्राणकोरखे

**प्राणहर्ता६बस्तुश्रोंकाबर्णन॥** सड़ामांसबूढ़ी
स्त्रीबालार्कदहीप्रभातकामैथुनश्रौरभूकासोवनाये
६बस्तुसिताबप्राणकोहरतीहैं॥ **६बस्तुश्रोंके
अठगुणेगुण॥** अन्नसेअठगुणाबलपिसानमेंहै पि
सानसेअठगुणादूधमेंहैदूधसेअठगुणामांसमेंमांससे
अठगुणाघीवमेंघीवसेअठगुणानिलमलनेमेंहै॥ **लंघन**
कफकोचरबीकोश्रामकोज्वरकोहरैहै हलकाहै॥

पाचनहै दीपनहै बायको पैदा करता है मूलको ग्रनी
सारको जीतैहै परन्तु बालकको गर्भनी स्त्रीको दुबले
मनुष्यको शोकमें काममें भयमें क्रोधमें राहसे थकेको
पुराने ज्वरवालेको स्तनोंको मनैहै। पूर्वी बायु के गु
ण॥ पूर्वकी बायु भारी है मीठी है चिकनी है पित्तको
लोहूको बढ़ावैहै रोगपैदा करती है विषको कुष्टको
जखमको फोड़ेवालेको बुरी है विषम है शीतको कफ
को शोकवालेको गुणकरती है दक्षिणीय बायु
के गुण॥ दक्षणीय बायु मीठी है रक्तपित्तको हरैहै
हलकी है बिदाहीन हीं है बलकरती है नेत्रोंको हितु
बायनहीं करती है॥ उत्तरकी बायु॥ मीठी है तरहै
दोषोंकी कोपको करती है बलकरैहै मीठी है नरम है
जखमवालेको क्षीणको कफवालेको इनसब बीमा
रियोंको बहुत फायदा करती है। पश्चिमकी बा
युरूखी है तेज है तरावत बलको हरै है निर्मल है सोखण
है कफको चरबीको हरती है और हलकी है। मिठा
ईकेगुणदोष॥ ठंडी है धातको दूधको बढ़ावै है।
कुष्ठत करती है नेत्रोंको गुणकरती है बायको पित्तको
हरती है मोटा करती है कफको क्रमको पैदा करै है और
जोकोई इसको बहुत खाय तो ज्वर दमा गलगंड उपजा
ती है॥ खटाईके गुणदोष॥ पाचन है रुचिकरती है

पितको कफको पैदा करतीहै मलको है लेषन है गरम है सीत
को नीमें बलानेकी वायको हरतीहै बहुत षायतो रक्तपित्त
दाहकरतीहै। लौनगुण॥ लोन शोधनहै रुचि करैहै
पाचनहै कफको पित्तको पैदा करताहै पुरुषत्वको वाय
को हरताहै सिथलता नरमी करताहै बहुत षाय तो
शरीरका पाक होहै पित्त कफको कोठेके अंदर नष
म करताहै इतने गुण नमकमें हैं॥ कड़वेके गुणलि
ष॥ कड़वा पित्तहाहै कफ कृम खुजलीको विषको
हरताहै बहुत षायतो भ्रम तालवेको मुखको दाहको
करैहै॥ तेजके गुण॥ तेज ठंडाहै प्यास मूर्छा ज्वर पि
त्तको कफको जीतेहै बादीहै अग्नि करताहै दुधवर्ध
वेहै शोधनहै सोषणहै हलकाहै बहुत षायतो कमरके
सिरदर्दको मन्यास्तम भ्रमको करताहै कसैलाहै रोचक
है कावजहै सोषणहै बादीहै बहुत षायतो अफारा
हृदयकी मूलको करताहै नासलेनेके गुण॥ नासलेनी
दृष्टिको अच्छीहै दांतमजबूत करैहै मुंहसाफ करतीहै
पलीतको दूर करतीहै कंठके मुंहके मैलको हरैहै जो
इसको नित्यसेवनो गुण करती है और धमनसे निद्रा तं
द्रा मुखकी दुर्गंध दूर होतीहै विषको हरैहै॥ अथजु
ल्लाबके गुण॥ जुलावसे बुद्धि निर्मल होतीहै इन्द्रियां
प्रबल होतीहैं धातस्थिर होतीहै अग्निदीपन होयहै आवे

नबेढ़ेहै ग्रौरबस्तिकर्ममेंवायपित्तकफ़ लोहूकेकोपकूं
गुणकरतोहैसन्निपातमेंग्रच्छाहै लोहूकोठवनेको
चमड़ेकोगांठको सूजनको लोहूकेरोगको मुफ़ीदहै
ग्रन्नरोपनहैपाचनहै ग्रौरकोढ़को हरताहैजाड़ेमें उसघर
मेंरहियेजो बाससेरहितहोय। बर्षाॠतुकेसेवन
कीवस्तु॥ बर्षामें मीठा कसैला तेजरस सेवनेजोग
है रुतबर्षामेंजंगलीजानवरोंका मांसग्रौरदाषग्रौरषां
ड़ गुड़ चावल मधु गेहूं मूंग जल निर्मलता इसरुतका हो
बर्षामेंबिरेचन बिघसे करेतो पित्त दूरहोय रातकोजाग
ना ग्रौरव्यवाय बहुतधूप रही तीर षटाई गरमाई बिर
ही तेजकड़ुवी वस्तु तिनकासेवना मनाहै॥ हेमंत
केसेवनकीवस्तु॥ हेमंतमें सलोना षट्टा। तेज।
कड़वा षारी घीवतेल गरमाईतेज ग्रन्नपानकरने यो
ग्यहै। शिशिरमें॥ तेलकाग्रवगाहनग्रग्निसे तपे
घरमेंरहनायोग्यहै बसंतमें॥ तेज खारी कसैला।
कड़वा मद्य सहत मूंग जंगलीमांस जव गुणकरे हैं हेमं
तमेंकफ़ग़लबा करे है तातें तेजचीज़ मगज़केसोधनवा
ली ग्रौरजुल्लाब बमन कुरलेकरेतो फ़ायदाहै॥ ग्रीष
ममें॥ ग्रीषममें ठंडेघरमें तलावमें नदियोंमेंरहनाचाहि
ये ठंडे भोजनखाने तलावोंकी ठंडीबायकासेवनाखि
कासेवना वस्त्रहलका बारीकपहरना ठंडीमीठीबस्तें

घीवका सेवना दूध ठंडा खांड मिलायके पीवना। शरीरमें चं
दन आदि लगावना। इतने सेवन योग्य है व्यायाम मैथुन म
घ गरम बीज इतने त्यागने योग्य॥ इति श्रीमदनपाल
विरचिते मदनविनोदे निघंटौ मिश्रकवर्गा न
योदशः १२॥ अथ त्रिफला॥ हड़। बहेड़ा। आंवला॥
त्रिकुटा। सोंठ। अतीस। मोथा॥ चातुर्भद्रक॥ पीप
ला पीपलामूल। चाब। चीता। सोंठ। ये चातुर्भद्रक है॥
पंचकोल॥ बड़की गूलरकी पीपलकी पाखरकी बे
तसकी इन पांचोंकी छालका नाम है मिली हुईका॥ पं
चवल्कल। शालपर्णी। पृष्टपर्णी कटाई भटकटैया
गोखरू॥ पंचमूल॥ बेल। अग्निमंथ स्योनाक कास्म
री पाटला। बृहत्पंचमूल॥ बिदारी सारिवा मेंढा
सींगी बत्सादनी हलदी इन दोनों पंचमूलको मिलादेनेसे
दशमूल कहाते हैं। तीसरा पंचमूल॥ जीवक ऋषभक
मेदा काकोली क्षीरकाकोली मुद्गपर्णी जीवनी मधुक
गुण॥ सोंठ मिरच पीपल धनिया। दाड़िम पीपलामूल
वेसवार नाम॥ कूठ छड़ हलदी मुरा शिलेय कचूर ब
च मोथा इसको सर्वौषधगण कहते हैं सर्वौषधगणमें सू
खे आमलेकी छाल मिलावे तो सुगंधामलक कहते हैं
कंकोल सुपारी लौंग जायफल कपूर पंचसुगंधक कहा
वे है तीन भाग केसर और इतने ही चव्यके फल अगर कपूर

और कस्तूरी चंदन इसको महासुगंध कहते हैं॥ षटरस
का भेद॥ कड़वा तेज कसैला सलोना खट्टा मीठा इनि॥
संतर्पण कहते हैं॥ दाख अनारदाना छुहारा इनको
चूर्ण सहत घीवमें मिलावे तो संतर्पण कहावे है इसको
वके मस्को पकके ठंडे पानीमें घाने बहुत पतले न होंय बहु
त गाढे भी न होय तो इसको शास्त्रमें मंथ कहते हैं॥
पंचगव्य॥ गोमूत्र गोबर दूध दही घृत ये पांचों बरा
बर होय तो पंचगव्य कहावे है गऊ भैंस बकरी गधा
घोड़ा इनके मूत्र पंचमूत्र कहावे हैं॥ पंचनिंब॥ नीम
के पान फूल छाल जड़ फल पंचनिंब कहावे है सिरस
का पंचांग पंच शीषक कहावे है छाल पान जड़ फूल फ
ल। गधा ऊंट हाथी इनका मूत्र मूत्राष्टक कहावे है॥ स्क
न्धाष्ट॥ करंज अंगा वल्ली धव आक तिलपुष्प कुड़ा
यह स्कन्धाष्टक कहावे है। क्षारत्रयनाम॥ सज्जी
जवाखार सुहागा यह क्षारत्रय कहावे है॥ पंचलौन॥
सैंधा सांभर सामुद्रलौन बिड्लौन सौंचरलौन यह पांच
लौन कहावे हैं॥ उपविषनाम॥ आकका दूध थोहर
का दूध कलिहारी कनेर धतूरा ये पांचो उपविष हैं॥
दशवारपंचक॥ पुनर्नवा सपपर्णी बला अरंड जीवक
ऋषभक। वीरा। जीवनी। शतावर। रासे। कुदर्भ याली
कीजड़ गुरुच सहचरी अमरंधा सैरीय कासमर्दक। यह

कनारपंचककहावैहै॥ दूसरात्रिफला॥ हाथ का
रसमयं स्तुहारा॥ त्रिफलातीसरा॥ जायफल सपर्णी
लवंग॥ भिष्मकवर्गसमाम्नः अर्यपकार्थः सौ
पांजन त्रिपुस्त यतकुसमा यातपुष्पा दंडहस्ती नगर मं
जरी मजोरू सवरस समरस वकुम्नवा राक्षको कुंभोल
कंगु गुग्गुलु भावषायनी कापिकछू अग्निज्वाला धान
की कुक्कुर स्यै. ोय कोरी वर्षास्य का अवसान श्रीर
वंस्क कापिन्न .रस्ना बोल वल्वक सप्तपर्णी मधुधातु
माक्षिका पेरएक्ष संकुसकुशा अजमोद आन्मशल्या स
नावरा ब्राह्मिपर्णी पक्षपर्णी पंचालो भूष्मिका अकुलोम
सा। विषाणिका। हहा किलास्सनी नखः अंजनकेशी नी
लिका रत्नुपत्रा कवर्यावेली कंटकारिका हिंगुला वरुनी
स्थल मंगाके। गोक्षुरू पंकफला स्योनाक गोकर्णी मू
वोनीलनिका मधुपर्षिका मलकोनलिका शाल्वपर्णी
कुमारिका कदफला मलकुमुस्का रमरी मवा रक्ता
।वक्क कननापस वलांगुरकंस वलीभूर्य वीरपुष्पी।
शंखपुष्पी अर्कपुष्पी। पयस्या। मधकपुष्पी पुत्रजीव
का। कांस्यल। बलवषफला। मरसंतक। कुलिंग। कुसुम।
तिलकुसुम। कलाविपुंसी। विभटा। काक्षि। तंडुलीयक
विश्वपर्णी पक्षपर्णी ताम्र मिजनक नवक अजनशृंगी
काकटशृंगी स्पंदनोति मुकक एलापर्णी रास्ना आसमं

पर्णी। शीलबालुक निलपर्णी चंदनकाकमुद्गा। मुद्ग
पर्नी। पांडु रोमसपर्णी माषपर्णी बरटा कर्पासी नखार
ण बीरसैबल सेबल सेबाल टंडेरक पंटेरक सन्नोहटी।
मुद्गपर्णी बरी शतावरी पनरी रेलुका नालिका शाकना
लिका कुचैला कुबेरी बलबंधा सारिवा मेरिखोगंधारी
यवासकलवासक बीरपत्र बरूक शालंकया पालंकया
कुठेरक कुठिंजर धान्यवा संन्यवा संबा संस्तंबालोध्र
को गुग्गुलः मत्स्यकाली उपोदिका भंगबेरिका गोजि
ह्वा कानक्रामक मद्गुमुस्त मुंजावक नालमुसक कंका
लासिंबिः उद्दालक। बहुसिंबि निष्पावो राजसिंबि अश्वा
रकौ तुंबरी कलिंदक कर्कालुक एर्वारुकर्कोटी रामक
कूष्मांडक गुप्तस्नो हो अंकोलः सिध्मालुक करनालुक
कुक्कुरी छत्राक काकांड पंचांगुल पत्रक यावक कुल्
माष। व्याडक। एरंड। बासव। कुसुमकुंभ शारदपीतमुद्ग
हरिमंथ श्रमणक मकुष्ट कामकुष्ट हरेणु सतीन उमा
अलसी नंदी मुरबा कपाली कोरदूषः कोद्रव शितम्मू
को यवाः यवकः शालीविशेषः यबनो गोधूम अवलं
धान्य इषीका शरनली कर्तृण सुगंधतृण भूतकोष बा
नी कोडूर्य विष्णुकांता अपराजिता नारायणी शतावरी
एकाष्ठीला पाठकः। कुमारजीवक। पुत्रजीवका पलल:
तिलकल्कः बल्लरं स्यक मांस नागवल्ली तांबूलबल्ली ज्ञ

मूलीखदरिका। मातुलो धत्तूरिका मातुलपुत्रधत्तूर
फलं मातुलानी भंगा कुजलः कांजः आरिदर्णी सुव
र्चला। पाटलि पाटला एकौषिका त्रिवृत्। मारुजा धान
पयुका भूषनं कुला॥ इत्येकार्थः॥ मधुमधुमाध्वी
कं पुष्परसं बर्थयः क्षीरघृतकं च। पिण्याकस्तिलकल्क
तः तुरुष्कश्च शिग्रुः सौभांजनं हरितशाकश्च प्रियंगु
गंधफल्यंकांगुश्च। धान्यकं धान्यको ब्राह्मीश्च घनो
मुस्तमभ्रकश्च शीरी लांगुली ऋर्द्धिविशेषश्च शताह्वा
तपुष्पा। शतावरी च उंबरः क्षीरवृक्षाश्च। विश्वा
शुंठी। प्रतिविषा च। जया नकोरीहण हरीतकी च। रक्ता
दनक्षीरकौ पियालश्च लघुवालुकार्षकं च। दुरालभा।
धन्वयासः। कंटकारि। कारिका च। किंजल्को नागकेसर
पद्मकेसरश्च। कुंडली गुडूची को विदारश्च कामुकः पटिका
लोध्रपूगफलं च तुवरः। पुन्नागः पद्मकेसरश्च सिंही बृहती
वासकश्च पिच्छिल शाल्मली शिंशिपा च अरिष्टा कटु
की नागकणा च। अमृणीललामज्जकं। उशीरं च कारी
वी अजगंधा हिंगुपत्रिका च स्वादुकटुको गोक्षुरुको
विकंकतश्च। निर्गुडकं बलाश्च मज्जाकफलश्च स्नु
क्षित्रको भल्लातकश्च। भृंगारवल्ली भार्गी कंटकारंजश्च
मलोपपृश्नबीजवेणुफलं च देवा मूर्वा स्पृक्का च। दीप
कोजमान्यजमोदा च सेव्या लामज्जकं भुशीरं च कोरवी

अजमोदायवनयुष्पाच अास्फोता सारिवा गिरिकर्णि
का च। ब्राह्मणी स्यूक्का मार्गी च। मधूलिका जलमधुक
नीलिका च। कुलस्थिका। चिवक त्रुष्या। नालपत्री। सु
थली। मिश्रेया। विकेसूर्य। कटपाटली मदनफलं वा। क
रोहिणी गिरिकर्णिका अपामार्गश्च। अम्बा करोही अम्मगं
धा चकटुंभरः कट्वंगः कटुणकयम्लं च। वर्मकसामा
सरोहिणी सप्तच। वंजुलो वेतसो वंजुपरश्च सुकंकापि
पर्णिणिशिरीषश्च। अगुरु शाल्मली सारो गुरुश्च। बालप
त्रो यवासः खदिरश्च नयानीलिनी सूक्ष्मैलाच। उग्रगंधा
वचा यवानी च। सारहासारिवा। जलपिप्पली कणापि
प्पली अजाजी च। ऐंद्री इंद्रवारुणी च। वीरा क्षीरकाकोली
गुड़ चिकाच। कामहा। हरिद्रा विडंगा च। गौलोमी वचा
दूर्वा च। गंधफली प्रियंगु चंपक कालकाच। सौम्यामा
नसायनी जातिपत्रिका जातिफलं च। कठिल्लकः पुनर्नवा
कारवेलश्च। वलधूपः शिरीसीः श्रीवासश्च। जितुनकं
धान्यकं तुल्यकं च। अशोरसांजनं शिलाजितुश्च। सर्पी
धपलासः कर्चूरश्च वारुणी इंद्रवारुणी सुरा चक्षुरा ल
कः कुरंटकः शाल्वश्च गौरी हरिद्रा गोरोचना च। गौरः क
रंजः सर्षपश्च। मधुरा काकोली जीवनं च। मधुरकं जीवि
बजीवकश्च। चोवन्यकाले ववंव। निर्गुंठी सेफालिका।
नील पिडुवारश्च। पारगलः काशो नलश्चाकरंजकरंजी।

नखश्च। कांकमाची काकजंघा। कारिकश्च। दीर्घमू
ला। शालपर्णी यवासश्च। मत्तबकोजंबीरोमदनकश्च
व्याधोगलवेतसः कर्णिकारश्च। अजामंगी। कर्कटशृं
गी। विषाणिकाच। त्रिपुटानिदग्धस्थूलैलाच। प्रत्यक्
श्रेणी दंती द्रवंतीच। अपराजिता। शीतला कार्णिक
र्णिकाच। त्रिपुरावल्लपदी। काकजंघाज्योतिष्मतीच
कालकं पटोल। काकोनंडुकश्च। धामार्गवा पामार्गको
शातकीच ग्रंथी दन्ती कारिकाडुरालभाच कटंभरा
शतावरी दूर्वाच नुडिकेरी मुंडिकार्यासाच। ननतगरं
शामकश्च। उशीरावला। पृष्टपर्णीच। शकुला हनी
कडुका गजपिप्पलीच। करंटः परिकेलवकटंगश्च
भंडारिका। मंजिष्ठा नडलोयकंच। दधिश्रीवासवीर
विकारश्च। क्षारोयव यवक्षारः खर्जिकाक्षारश्च तेन
नीतिजयंती मूर्वाच। ततः शारीबोलो वेणुश्चरसश्च। ह
स्तिपर्णी मधुसंपएरंडश्च। शतवीर्या शतावरी दूर्वोच।
दंतशठो जंबीरकपित्थश्च। दंतशठ वागेरि स्वाम्लिकाच
लोणिका वांगेरी लोणिका शाकश्च। म्लिका वांगेरी लो
णिकाशाकश्च। म्लीका वांगेरी तिंतलीफलंच। कुवल
यनीलोत्पलं बदरं वनीय। कदंबो मधुकर्कटीच। मधूल
कं गलमधुकमसंजातमधाश्च। बलासिंबिः पुष्पावि
शेषश्च। पुष्पफलं कूष्मांडं कपित्थश्च। पौष्करमूलं पद्म

हश्च। भृंगोभ्रमरोभृंगराजश्चचित्रा।विशालाइन्द्रं
नीच।उपचित्रादंतीपत्र्यपर्णीचशीर्षपर्णोऽग्निमं
थः पद्मकश्चनंदीवृक्षस्फूर्णाकाश्मरीच॥ इति
पर्यायानि॥ अर्थानिव्याख्यास्यामः॥ सौवी
रंमंजनंकांजिकंबदरंचअरिष्टोनिंबोःसोनःआसन
श्च।श्रीपर्णिकाकारफलंकाश्मरी।अग्निमंथश्च
महौषधंविषंशुंठीसोनश्चटुःस्पर्शीकंटकारिका
दुरालभा।कपिकच्छुश्च।श्यामान्तरोप्रियंगुःपि
प्पलीच।सूक्ष्मापिप्पली।उपकुंचिके।नीलकीच॥
अंबष्ठापाठमाविकाचांगेरीच।मरुन्नःपिंडीतकःसि
न्धुकोधनरुश्च।अमलाशंखी।आमलोहरीतकीच
पिंडाहरिद्राखर्जूरोहिंगुपत्रिकाच।सोमवल्ली वा
कुचीवासीच।शुकबर्हिस्थौणेयंतालीसपत्र
च।कालमेषीमंजिष्ठातव्वनीपकुंचिका।काला
नुसार्य्यः नगरंकालीयकंशैलयंचपलाशः किंशु
कः शायेशनपत्रश्च।मोचाकदलीशाल्मलीसोभा
जनश्च।वृश्चिका हिंगुपत्रीकोपकुचिकास्थूलैला
च। लताप्रियंगुः सारिवाज्योतिष्मतीच सरसिः।
शल्लकी। मृणालवालुकश्च। श्याकः। श्रीवासोवि
लोलंबंगंचशिलाह्नं शिलाजीतुशैलेयकंमनःशि
लाच। चांपेयकः पद्मकेसरनागकेसरश्च मयूको

अपामार्गोऽजमोदा तुन्यकञ्च। पाक्यं विडंगलवणं
यवक्षारः काचञ्च। मधुपर्णी गुडूची काश्मरी नालि
का च। कुलत्थिमनः शिलाधान्यं नलिका च वारोयव
क्षार। खर्जिकाक्षीरजलं च वार्ताकञ्चोरखुपरिपे
लवः पाक्षिविशेषञ्च। लक्ष्मी शमीपद्मविलासनी
ऋषभञ्च सुषवी उपकुंचिका कारवल्ली अंगुलिका
सुषवी रक्ताच वारिजशंखपद्मं लवंगं च। मर्कटी
आमगुप्ता पामार्गो वल्लीकारंजकपीतन। आम्रात
कः प्लक्षः शिरीषञ्च सोमवल्कः कट्फल। खदिरष
दिरः करंजञ्च सहस्रवेधि हिंगुश्च स्वेतसः कस्तूरी
च। काश्मरी पुष्करमूलं कुंकुमकाश्मर्यं च वंजुलो वे
तसः स्पंदनोयावकञ्च प्रियकोशनः प्रियंगुः कद
म्बपारिभद्रको निंबः पारिजातो देवदारुञ्च जीवंती
वृक्षरुहा शाकविशेषञ्च हिमपुष्पी सीबांडुः स्पर्श
पीतमूषिकी वपस्नायम्न चारिणी भार्गी पद्मनाल
का च। समुद्रांता कार्पासीयवासकस्पृका च शुक्ती
का ल्लीका च। गौरी सिंड की वसुकको अंगनायवा
सो लांगली। दूर्वा च। कुस्वंतिका पाटला काश्मरी।
माषपर्णी च नादेयां जलजं वुजलवेतसश्चकारी च।
सोमरुका पत्रकमञ्जारी रुक्त विशेषम् सौगंधिकं ना
लं पद्मकलांगंधपाषाणं न सबल एला सेफा

लिकागंधनाकुलीचापलकसालाह्वा गुग्गुलगोक्षु
रश्च हैमवतीहिमावती श्वेतवचा हरीतकीच श्रवाया
हरीतकीमहाश्रावणीपश्चवारुणीचनागपुष्पीधा
तकीनवत्पालाच। शतपर्वा दूर्वावंशोबर्बरीरोचना
नवनुकपिल्लगोरोचनाच विशल्यालांगलीरक्तागुडूची
च रक्तसारः पत्रागः खदिरोरक्तचंदनश्च भंगी प्रतिविषा
कर्कटशृंगीऋषभकश्च। कधुरायासोक्षुपलभा क
पिकच्छूच। मंडूकपर्णी ब्राह्मीच जियारलूकश्च।
कालस्कंधः श्यामखदिर सिंदुकः तमालश्च। लां
गलीऋषभकः स्वयंगुप्ता पृष्टपर्णीच। घमंगावला
मंजिष्ठाखदिरकाच श्वेतवीदूर्वाशोभांजनः समुद्र
लवणंच। तुरुकः तिलकः कोकिलाक्षोगोक्षुरकश्च
श्रंजनंकरमांजनं। पुष्पांजनंरसांजनंच। मधुरसाद्र
क्षामूर्वाकाश्मरीच। स्वादुरसामृद्वीका सतावरीको
कालाच वसुकोराजाकोशुकः पांशुलवणंच। सिरो
यामार्गः समुद्रलवणं हस्तिपिप्पलीच कुंडलीगुडूचि
कांचनीश्वसबधश्च। सहामुद्गपर्णी। महाबलाभद्र
रत्नीच। पथ्याहरीतकीकर्कोराजीवतीचचपलापि
प्पलीनंडुलायकः। कपिकच्छूश्च कायस्थाकोकोली
गुडूची आमलकंच। सदापुष्पीश्वर्कंकुशोबिलश्च वीरा
वीरकाकोली अर्जुनोरर्भोविरोचश्च वीरतरुकक्षुभउसीरं

शंखशश्च। मनालापश्चनालंउसीरकाः प्रियंगुः शि
रीषंच। पूतिदारुः देवदारुः चंगपूतिकश्च। मरुब
ल्लीश्चापामार्गोहस्तिपिप्पलीस्वयंगुप्ता। क्षीरणीदु
ग्धिकाशंखिनीसारिवाच क्षीरवल्लीक्षीरविदारिका॥
क्षीरकाकोलीकाचनक्षीरीच। ऋष्यप्रोक्तालिक्ताश
तावरीस्वयंगुप्ताच अश्वगंधावृद्धदारुकापिंडालुको
विदारिकाच। वृक्षगंधामूलरक्तालुकंक्षीरविदारीचम
हागंधाविदारीकोकोलाक्षकः काशश्चमुक्ताविदारी
काकोलीश्वेतस्पंदाच। क्षीरमुक्ताक्षीरविदाराक्षीर
काकोली। नीलस्पंदाच। श्वेताश्वेतस्पंदाशर्कराबि
दारीच पहाश्वेतानीलस्पंदायाशर्कराक्षीरविदारव्व
कश्च। ताम्रमूलामंजिष्ठाकुलालभानमस्कारीच इंद्रवृः
कटुजोर्जुनोदेवदारुश्च लोहमगुरुकांस्यमयश्च हेम
नागकेसरंपंचकंसुवर्णंच। बाणः सहचरः शरोबाण
विशेषश्च कालिकारेणुपर्कुचका। नीलिकाच। काव
भेषामंजिष्ठानवरेणुपर्कुचिकाच। श्रीपर्णिकाश्मरी
श्राग्निमंथकटफलश्च कात्रिंभसांजनंबिडंतरुकश्च
इतिश्रयोनि॥ अथनानार्थानिवक्ष्यामि॥ अगोध
मरघृष्याविविभंगराजेषुवत्सविभंगारकेलवगोहिम
हिमकुंभेचमार्केवेमदनःसिक्थकेराठधत्तूरेत्वगिरस्मृतौ
हिमवत्यामताःस्वर्णक्षीरीपथ्यावचामयाःनिशकारु

राघ्रेचतिलकद्रुमे विशेषिकोतिलेख्यातं तिलकास्ति
लकालके काकाह्वाकाकमाचीच। काकोलिकाक
र्णिका काकादनीतुकाकुंशोलीकाकेवायसीमसी
काकोडुंबरिकागुंजासम्रकौह्वायामतासर्योह्विस्मेषे
षुसीसकेनागकेसरीनगदंत्यांनागवल्यांनागशब्दोनि
र्दिशेत।अन्नशब्दोस्मतोघासुगंधेकेच बिभीतके
कार्षपन्नात्तरुद्राह्वेथकरेह्विसयाशाके।मांसह्वेचे
तुरसे।पारदेमधुरादिषुबोलेयोगे विशनीरेरसोनवस
वर्तते।गगनंसात्विकंचैव बिमलंरसकंतथा। कारंबक
रवकंत्रवबैक्रांतंशस्यकंतथा।चपलंतरहरसास्त्वेते
निर्दिष्टाधातुवादिभिः मरिचेसिंदुवारेचचीवरेह्वयगं
धकेमाहिषेकोकिलाख्यावेजवेकषमषषु पिप्पली
नीलिकागोपाजंतुकारीतुशिंशिपा।सुरसाजीरकंश्रव
कृष्णाचाषसुवर्तेनीलिनीनवनीतहिंस्नापिप्पलीरक्तयोरे
षु।बालायाजीरकेवापिकालीप्रोक्ताविचक्षणैः मुग्द
पर्णीमाषपर्णीकर्कोटयचसहाचरः हस्तिकोशातकी
वालानरणोश्रुस्मनासहापुनर्नवानवंकुरीश्चावाण्य
तिविषात।करुणापंचसुप्रोक्तानापसारिकागंधके
विदारीकडुभीस्पेशश्वेतदूर्वाचसारिवाषड्थ्याशर्के
रावालास्वेनास्कपरिकीर्तिता।प्रजगंधामेषेभृंगी
निर्गुंडीकाइभीविचाकेरीदूर्वाद्वयंवापि।गोलोमपस

सुवर्त्तते। सर्षपालुकसंज्ञं च। पद्मकेसरकेऽथवे।
गौरीगौरी येवना स्याल्कनसमीप्रियंगुस्तु कुठेरकारज
न्योऽप्यथ घनं चास्मंतकेपि केनेशोथस्याम मेघेषुजयाप
रसकेऽपि च। नतकर्पासिकादूर्वा तथा ज्योतिष्मती
स्थिरा। किंशुकश्चित्रपर्णीति पंचस्वेव प्रकीर्त्ति
ता जीवंती त्रायमाणा च रोचनागंधपुष्पिका। नु
गेर्णसमी च स्यात्तमंगल्यायसुवर्त्तते। गुग्गुलुःस्या
वर्णीक्षुद्रा गोकंटकेषु पलंकसा समंगा वाढकी वा
लावदंतिनिष्पथक्षिपेषु जंबीरकर्मरंगश्च नागरंग
कपित्थकौ रंजनपाठौ तु मुसलाकपिकच्छूय
चाकके। ख्याता पंचसुकंकारोऽश्च निम्बयका
रके: वाघ्यसालो विदारीव श्वेतदूर्वा च निश्चित
विजंभुजकशब्देनच: परिकीर्त्यते च भिषग्वरै:।
मंजिष्ठा त्रिषु सा दूर्वा रजनाद्यायतेति निश्चये। स्य
कांकारिनी प्रयाज्योतिषात्पालनाबुधैः चित्र
कामंगासंकेतकपाले लावकेतथा द्रव्येषु च
वकोलेवकश्चोले बंदरे तथा। नतव संज्ञकश्चैव
कालशब्दे विचक्षणाः इतीरसुक्तं निखिलं निघ
ण्टुज्ञानमुत्तमं। भिषकसिद्धिविक्रमार्यघन्वंत
रिविनिर्मितं॥ १ ॥ ॥
इतिनानार्थवर्गः॥

इतिश्रीमदनपालविरचितेमदनवि
नोदेनिघंटौनानार्थवर्गस्समाप्तं
मतबअ हसनी में मिस्तर
भगवानदासके एहतमा
मसे छपा देहली में ॥२॥
सबत १९२७ ज्येष्ठ ब
दी ५ बृहस्पतिको
सन १८७१ मई १९
ईसवी ॥२॥
याहशंपुस्त
कंदृष्ट्वाता
दृशंलि
खि
तं

